॥ श्री ॥

॥ रत्नसार ॥



जिसको

रतलामनिवासी

श्रावक ताराचदजी निहालचद ने

यथा मतिसशोधन करके तत्वाभिलाषी जैन

भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया



रतलाम :

पॉडे अम्बालालजी रामप्रताप खर्रा के

स्वकीय 'डायमंड ज्युबिली' छापाखाना में

मुद्रित हुवा

सन् १८९९ सवत् १९५६

॥ श्री ॥

॥ रत्नसार ॥



जिसको

रतलामनिवासी

श्रावक ताराचदजी निहालचद ने

यथा मतिसशोधन करके तत्वाभिलाषी जैन

भाइयों के हितार्थ प्रकाशित किया



रतलाम :

पॉडे अम्बालालजी रामप्रताप खर्रा के

स्वर्गीय 'डायमड ज्युबिली' छापाखाना में

मुद्रित हुआ

सन् १८९९ संवत् १९५६

प्रस्तावना.

—o✻o—

यह रत्नसार नाम का अपूर्व ग्रन्थ अनेक जैन शास्त्रों के गूढार्थ को निरूपण करनेवाले धारने लायक ३०४ प्रश्नों का परमोत्तम सग्रह है इस ग्रन्थ को देख कर बहुतसे जैनी भाइयों की इस पर विशेष रुचि हुई और हस्त लिखित प्रति सब को मिल नहीं सक्ती इसलिये इस ग्रन्थ को छपाकर प्रसिद्ध किया

यह ग्रन्थ किस आचार्य ने बनाया है सो मालूम नहीं होता परन्तु प्रश्नों के आशय और रचना पर से प्रगट होता है कि किसी द्रव्यानुयोग में परिपूर्ण, बुद्धिमान, विचक्षण आचार्य ने भेदाभेद करके वस्तु का निर्णय भली भांति किया है

जिस प्रति पर से यह ग्रन्थ छापा गया है वह हम को अशुद्ध प्राप्त हुई कि जिस में प्रश्नों का नंबर तक बराबर नहीं (जो पीछे से सुधार दिया गया) और हमने दूसरी प्रति की बहुत सी तलाश भी की परन्तु

हम को मिल नहीं सकी तब श्रद्धालु जैनी भाइयं का आग्रह देख कर हम ने उसी प्रति पर से पुस्तः छपाना आरभ कर दिया और दूसरी प्रति मिलने व उद्योग करते रहे पीछे से श्रीमद् विजय राजेंद्र सूरी श्वर मुनिराज ने कृपा करके शिवगज के भडार से प्रति भिजवा कर परम उपकार किया दूसरी प्रति मिल पर शुद्धाशुद्ध देखने में बहुत कुछ सहायता मिल तथापि दोनों प्रतें न्यूनाधिक अशुद्ध होने से भल प्रकार सशोधन नहीं हो सका अनेक स्थलों पर तो हस्तलिखित पाठ ज्यों का त्यों रखना पडा, कारण कि हमारे समझ में बराबर आया नहीं तो ग्रथकार के अभिप्राय से विरुद्ध न छपजाने का ध्यान रखना पडा

आशा है कि श्रद्धालु जैनी भाई इस ग्रन्थ को आश्रय देकर परम लाभ उठावेंगे और हमारा उत्साह बढावेंगे जिस से हम अपूर्व २ ग्रन्थ प्रकाश करके उन को भेट करने में समर्थ होवें

लि० निहालचन्द

विषयानुक्रमणिका.

॥ विषयानुक्रमाणिका ॥

प्रश्न.	विषय	पृष्ठ

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

प्रार्थना.



सब लोगों से निवेदन है कि इस उत्तम पुस्तक में कोई दृष्टि दोष से भूल रही हुई मालूम होतो सुधारलेवें और क्षमा करें तथा आगेकी आवृत्ति में शुद्ध करने के वास्ते खुलासा लिख भेजें ऐसी हमारी प्रार्थना है

लि० नि०

पुस्तक मिलने का ठिकाना —

बाबू चाँदमल बालचन्द
चौमुखी पुल
रतलाम (मालवा)

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ रत्नसार ॥



॥ श्लोक ॥

प्रणम्य श्री महावीर शंकरं परमेश्वरं ॥
विचार रत्नसारस्य क्रियते बालबोधकं॥ १॥

अथ श्रीवीतरागनी वाणी, भव वेल कृपाणी, ससार समुद्र तारणी, महा मोहान्धकार दिनकरानुकारणी, क्रोध दावानलोपशमनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी, कलि-मल प्रलयनी, मिथ्यात्व छेदनी, त्रिभुवन पालनी, पाप विशोधनी, मन्मथ प्रतिथंभनी, अमृत रस आस्वादनी, हृदय आल्हादनी, त्रिक्षेप विस्तारणी, आगमोदगारणी, चतुर्विध सघ मनोहारणी, भव्य जन कर्णामृत श्रावणी,

योजन प्रमाण विस्तारणी, एहवी वीतरागनी वाणी जाणवी

जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव ५ संवर ६ निर्जरा ७ बंध ८ मोक्ष ९ धर्म १० अधर्म ११ हेय १२ ज्ञेय १३ उपादेय १४ निश्चय १५ व्यवहार १६ उत्सर्ग १७ अपवाद १८ आश्रवा १९ परिश्रवा २० अतिचार २१ अनाचार २२ अतिक्रम २३ व्यतिक्रम २४ इत्यादिक सांभल्या विना शास्त्र ना भेद न जाणे

सुठाम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात, सुयात, सुकुल, सुबल सुस्त्री, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र, सुदान, सुमान, सुरूप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुप्रेम, सुदेश, २२ ए बावीस योगवाई पुण्य विना न पामिये

सुमति, शीलवंत, संतोषी, संत संजमी, स्वजन, साचा बोला, सत्पुरुष, सुमेला, सुलक्षण, सुलज्जा, सुकुलीन, गंभीर, गुणवंत, गुणज्ञ, एहवा पुरुष नो संग कीजे तो धर्म पामे

चुगल, चोर, छलग्राही, अधर्मी, अधर्म, अविनीत, अधिक बोला, अणाचारी, अन्यायी, अधीर, अमोही, नि:श्नेही, कुलच्छणा, कुबोला, कुपात्र, कडा बोला, कुशीलीया, कुसामनि, कुलखपणा, भूडा, भुच्च एहवा पुरुष नो सग न कीजे

॥ अथ धारवा रूप छुट्टा बोल लिख्यते ॥

१ जीव धर्म किम पामै ? गुरु कहै छै—जीव ३ तीन प्रकारै धर्म पामै गुरु ना उपदेश थी १ तथा अभ्यास थी २ तथा वैराग्य थी ३ एहवो उपदेशसार पदमानन्दी २५ (पच्चीसी) मध्ये कह्यो छै

२ तथा अभ्यास ४ प्रकार ना कह्या छै ते कीजो प्रश्न–सूत्र अभ्यास १ अर्थाभ्यास २ वस्तु नो अभ्यास ३ अनुभवाभ्यास ४ ए चार अभ्यास पकनाये वस्तु पामै.

. जीव नें पाप उपजै हिंसाइ, पुण्य ऊपजै ते दयाइ तथा छ:काय जीव नें हणवानो परिणाम थाइ तिहा पाप नीपजे ते छ:काय ना जीव नें त्रिकरण

योगे हणता वैर अने पाप बे नीपजै ते पाप नें उदयै असाता, आकुलता, उद्वेगता, अथिरता उपजै १. वैर नें योगै ते जीव आगी यथा योगै पीडै, ए भाव बीजो २

३ धर्म, पुण्य, पाप कर्म श्या थी ऊपजै ते त्रीजो प्रश्न —तेह ना उत्तर ए ३ तीन मध्ये पहलो बोल जे धर्म १ ते एक मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी ते किम ? दर्शन मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी धर्म ऊपजै ,तथा चारित्र मोहनी ना उदय थी पुण्य पाप ऊपजे

अविरत नो उदय मद थाइ तथा क्षयोपशम थाइ तिवारे विरति नो उदय थाइ तिवारे षट काय ना जीव ऊपर दया प्रणाम ऊपजे तेथी पुण्य ऊपजे २

तथा अविरति ना उदयै तीव्र पाप नीपजै ३

ते मध्ये एटलो विशेष जे पुण्य पाप ते चारित्र मोहनी उदय मद तीव्र होइ अने धर्म दर्शन मोहनी

क्षयोपशम क्षायक थी होइ तथा पुण्य पाप ना फल भोगवावै ते वेदनी कर्म तेहनें उदये वेदावै—फल देखाडै, तथा पुण्य पाप नो बंध पडै ते मोहनी कर्म नी मुझताइ पुण्य पाप प्रणमै ते अंतराय नें क्षयोपशमे, इत्यादि विस्तार स्वबुद्धि करि जाणवा इति भावए

तथा राजा ते न्यायी नें सोम दृष्टि, अने आचार्य ते निस्पृही होइ तिहा जैन धर्म प्रवर्त्तै

४ देशना नु चोथो प्रश्न—देशना ते कहिये जिहा मिथ्यात्व नी पुष्टी न थाय अने मार्ग विरुद्ध न प्रकाशै आत्म स्वरूप उपादेय रूपे, तथा शुभ क्रिया नो अत्यादर पण प्ररूपै अने शुभ क्रिया ना फल नी वाछा न करावै, तिरस्कारे राखै पाप की आसेवना कालै निरस्कार रखै. इत्यादि आगमोक्त रीते प्ररुपे ते देसना कहिय तथा पाप की आसेवना कालेज माठो जाणवी जेहनो फल दुर्गति नें मेळवै धर्म-पामवो वेगलो करै ते माहे तिरस्कारे राखवी

५ अने पुन्य क्रिया ते सेवना काले अत्यादरें
सेववी पण तेहना फल नीं वाछा न करवी तेह नो रहस्य
इयो ? ज पुण्य क्रिया शुभ व्यापारें शुभयोगें न आदरें
तो मार्ग विरुद्ध थाइ परम्परायें पण वीतराग मार्गे न
जोडाई अने जो पुण्य ना फल नीं वाछा करे तो निदान
रूप मिथ्यात्व प्रणमे जो सहज रूप शुभ क्रिया करै तो
कर्म नो काटनिवारी शीघ्र मुक्तिपद पामे ए रहस्य

६ छठा प्रश्न मध्ये हेय, ज्ञेय, उपादेय शब्द नो भावार्थ
लिखिये छै—समभावे हेय १, यसाये(यथार्थ) ज्ञेय,
स्वरूपे उपादेय ३ ए रीते जाणवू वली गीतार्थ पासे
एह नो विशेष अर्थ धारवो । इति

७ हिवे श्री उवाई सूत्र मध्य तप ना भेद विशेष
कह्या छै, तिहा काउसग्ग द्रव्य१ भाव २ बे प्रकार
कह्यो छै तिहा द्रव्य काउसग्ग४ च्यार प्रकार ना कह्या
छै—प्रथम शरीर काउसग्ग१ उपधि काउसग्ग२ भात
पाणी नो ४ त्यागते पण काउसग्ग तथा, भाव काउसग्ग
ते ३ तिन प्रकार नो—कषाय काउसग्ग१ ससार काउसग्ग

र्म काउसग २ ते मध्ये कपाय काउसग ते ४ * प्रकार नो, ससार काउसग ते चार † गति निवारण रूप २, कर्म काउसग ते ८ ‡ आठ प्रकार नो जाणवो, आठ कर्म क्षय थी.

हिवे जे शुभ क्रिया विधि नी छै ते स्वभाव रूपे प्रणमे तिहा निर्जरा नीपजै तथा शुभ क्रिया जे अविधि नी छै ते बन्ध रूप प्रणमै, तथा लौकिक यश सौभाग्य रूप प्रणमै, तथा पुण्य रूप प्रणमें ते बन्ध रूप थाइ, जेह थी ससार भ्रमण विशेप नीपजै, एह भाव

८ अथ जीवने खेद ऊपन्यो किम टलै आठमो प्रश्न— जीव नें खेद निवारवा नें अर्थे पर्व बध कर्म सभ रिये जेहवा में पूर्व कर्म बाध्या छै तेहवा उदय आवै छै ते मध्ये केतलायक कर्म प्रदेश वेदे नें वेदीनें खेरवै छै

* क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ थी निवर्तवो ते कपाय काउसग

†.देव १ मनुष्य २ तिर्यंच ३ नर्क ४ गती नी इच्छा रहित ते संसार काउसग,

‡.ज्ञानावरणी १ दरसनावरणी २ वेदनी ३ मोहनी ४ आयु ५ नाम ६ गौत्र ७ अन्तराय ८ ये आठ कर्म ना क्षय ते कर्म काउसग

केतलाइक निबड कर्म बांध्या छे ते विपाक वेदीनें खेरवै
पण सुज्ञानी जीव ते कर्म भोगवता उदय निष्फल करै,
आलाइ निंदै, पश्चाताप करै, तिवारे अल्प बंध थाय
बहु निर्जरा करै ते माटे बंध निवारवानें उदै निष्फल
करै, उपयोगे विचारै, तिवारे बंध अल्प करै ए भाव,

९ हिवे धर्म कथा नु ९ मू प्रश्न,—तथा, उत्तरा
सूत्र मध्ये ४ च्यार प्रकार नी धर्म कथा कही तेह ना नाम
आक्षेपणी १ विक्षेपणी २ निर्वेदनी ३ संवेदनी ४
तत्वमार्ग नें जोडावे ते आक्षेपणी १ विक्षेपणी ते मिथ्यात्व
मार्ग थी निवर्त्तावे२ निर्वेदनी ते मोक्षाभिलाप उपजा
वै ३ संवेदनी ते वैराग्यभाव उपजावै ४ ए च्यार
प्रकार धर्म कथा कही ए भाव.

१० हिवै भाव नव निधान नू १० मू प्रश्न—यथा, तत्
घर नव निधि थाय तेह नो स्यो अर्थ ? त स्यू जाणै
नव क्षायक लब्धि पाम्या जे केवली, तेहनें अखूट नव
निधि नीपनी तथा विषय ५इन्द्रियना, अने कषाय

तेहनें निवर्त्यां तेहनें नव निधि निपनी ए मुनि आसरी

११ हिवे पाच इद्री ना विकार मिटें कीहा गुण निर्मलता थाय ते इग्यारमु प्रश्न ते कहै छै.—चक्षु इंद्रिय नो विकार मिटै, हृदय ज्ञान चक्षु निर्मलता नीपजे १ श्रोतेंद्रिय नो विकार मिटै, जिन वचन नू श्रवण प्रीति प्रतीत रूपे थाय २ जिव्हा इद्रिय नो विकार गये आत्मिक अनुभव रस-स्वाद पामै ३ नासिका नो विकार गयें आत्म गुण नी सुवासना पामै ४. स्पर्श इद्रिय नो विकार गये आत्म प्रदेश ना स्वभाव रूप स्पर्शन थाय ५ क्रोध गए समता गुण प्रगटै ६ मान गये मार्दव गुण प्रगटै ७ माया गये आर्जव गुण प्रगटै ८ लोभ गये सतोप गुण प्रगटै ९ ए रीते पण जीव नें ए गुण प्रगटै ए भाव

१२ हिवे जीव नें मिथ्यात्व ४ प्रकार नो ते १२बारमो प्रश्न कहै छै·—प्रदेश मिथ्यात्व १ परणाम मिथ्यात्व २ परूपणा मिथ्यात्व ३ प्रवर्त्तन मिथ्यात्व ४ व्यवहार समकित पामै तिवारे परूपणा १ प्रवर्त्तन २ मिथ्या

त्व टलै,(अनें) ग्रथीभेद थाय उपशम च्चयोपसमसमकि
ते पामै तिवारे मिथ्यात्व परणाम मिथ्यात्व थी टलै
(अने) च्चायक समकित पामै तिवारें प्रदेश मिथ्यात
टलै इति रहस्य

उववाई सूत्र मध्ये पाच राज चिन्ह कह्या छै
पाच अभिगम स्त्री नें पण कह्या छै,ते तिहा थी जोइयें

१३ हिवै देशना च्यार ४ प्रकार नी छै ते ते
मो प्रश्न कहै छै—धर्म देसना १ गति देसना
वध देसना ३ मोक्ष देसना ४ तेहना विस्तार गु
गीतार्थ थकी जाणवा

१४ च्यार ४ प्रकार ना अनर्थ दड कह्या
चउद मो प्रश्न कहे छ—आरत रुद्र ध्यानै अन
दड १ प्रमादाचरणे अनर्थ दड २ हिंसक शा
आपवै अनर्थ दड ३ पापोपदेशे अनर्थ दड ४
च्यार ४ प्रकारें अनर्थ दडे सतमागे कह्या छे

१५ आठ ८ प्रकार ना वचन परिसह, सह

ते पदरमो प्रश्न ते कहै छै —हीलणा—जन्मनी करणी उघाडे जे पहिला वइतरु करता राधणीया हता, हवे साधु थइ बैठा छै इम कही हीलणा वचन परिसह साधू सहै १ बीजो खींसणा ते अनेरा लोक नी साखे कोई पूर्व कर्म अवगुण होय ते कहै ते पण साधू सहै २ त्रीजो नदना—ते मनै करी अवगुणना कर, आदर न दिये, मुख मोहटो राखे ३ चौथो गरहणा—ते साधु ना मुख ऊपरे आवी ने छता अछता अवगुण कहै ४ पाचमो ताडणा—ते साधु पुरुष नें चपेटा प्रमुख आपे ५ छठो तर्जना—ते रे पापिष्ट ! तू जाणीस हवे, अरे विटल ! इत्यादि कठिन वचन कहै ६. सातमो पराभव—ते वस्त्र पात्रादिक अपहरै, फाडै, तोडै, वरती थी काढै इत्यादिक करै, ते पण मुनि सहै ७ आठमो एपणा परिसह नो—ते भय नू उपजाववू, जे ए रीते तुझ नें दुःख आपीस ८ ए आठ बोल हीलणादिक वचन ना परिसह जाणवा योग्य छे

१६ हिवे सिझई बुझई नो सोलमो प्रश्न -ते सिझई १ बुझई २ मुच्चई ३ परिनिव्वाई ४ ए च्यार पद नो अर्थ यथा श्रुत अनुभव छे ते रीते लिखिये छे कर्म नो जे ओछो थावो, जे अशे घटाडवो ते सिझई १ तिवार पछी वस्तु नू ज्ञान थयू ते बुझई २ ते कर्म सत्ता थी क्षय थयू फिरि बध क्यारे नावे फिरी न बधाय ते मुचई ३. आत्मा के स्वभाव ठरण पाम्या ते परिनिव्वई ते शीतलीभूत थया जन्म जरा मरण ना भय निवार्या ते (सव्व दुखाणमत करेई) ए भा. थी चौथा गुण स्थान थी जे अशे थाइ ते तरतम भेदे कहवा अने चवद मार्ग अते ते सर्वगे कहवा एह नो अर्थ प्राय इम ऊपजे छे तो श्री जिनेंद्र प्रकाश्यु ते सत्य तथा सर्व कार्य सध्या माटे सिद्धे १ आत्म बोध सपूर्ण ज्ञान स्वरुप थया माटे बुद्धे २ सर्व कर्म थी मुकाणा माटे मुत्ते ३ शीतलीभुत थया माटे पडिनिवुडे ४ ससार नो अत करवा माटे, अडगडे ए पाठ नो अर्थ ए रीते अनुयोग द्वारे, ए भाव छे

१७ हिवे धर्म ना ४ च्यार प्रकार कह्या छै ते किह्या ? ते यथा श्रुत सत्रमों प्रश्न लिखिये छै —प्रथम तो आचार धर्म १ दया धर्म २ क्रिया धर्म ३ वस्तु धर्म ४ ते मध्ये प्रथम आचार धर्म आदरतो जीव अनाचारणापणो टलै, वली लौकिक यश प्रतिष्ठा पामै. अन्य तीर्थी पण जैन धर्म नी प्रशसा करै, जैन नो आचार अनुमोदे १ बीजो दया धर्म—ते जेह थी हिंसा नो कर्म टलै, मुक्ति पामै, शुभ पुण्य ऊपर जे परपराये मुक्त हेतु थाय २ तीजो क्रिया धर्म—ते शुभ क्रिया पोषा प्रतिक्रमणा जिनपूजादिक विषै क्रिया करतो कर्म नो काट उतारै, भव तुच्छ करै, परपरायै मुक्ति मार्गै जोडावै ३ हिवे चौथो वस्तु धर्म—ते जेह थी वस्तु धर्म पामै, स्वरूपाचरण पूरण समकित पामै, पुण्य पाप कर्म नी निर्जरा नीपजे ४ ए च्यार प्रकार धर्म रथ ना ए च्यार पइडा तिणै करी रथ चालै ए वस्तु गतै ए ४ धर्म ना भेद कह्या छै तेहना दान शील, तप, भावना, ए प्रकार ते कारण प्ररूपै छै

एणी रीते ४ प्रकार धर्म ना कह्या ते मध्ये एके दुह्रा ईनही ४ प्रकारे धर्म जे प्राणी यथा अर्थ स्यादवाद रीते पामै ते (सूलभवोधिओथई वहिलो सिद्धि वरै)ए च्यार रीते धर्म ना ४ प्रकार जाणवा तथा जे प्राणी क्रिया विधि आदरै, उपयोग शुद्ध राखै, ते प्राणी वेहलो भव घटावै, वेहलोही मुक्ति जाय ए भाव

१८ हिवै कर्म ३ प्रकार ना छै ते अठार मो प्रश्न कहिये छै —हिवै कर्म जाते ३ प्रकार ना तिहा द्रव्य कर्म ते आठ कर्म नी वर्गणा १ नोकर्म ते पाच शरीर २ भाव कर्म ते राग द्वेष परणीति ३ तिहा द्रव्य कर्म, नोकर्म ते पाच शरीर पुद्गलीक पुद्गलाश्रित छै भाव कर्म ते आत्माश्रित छै पहिला बे कर्म ते कर्म विनाशिक छै भाव कर्म ते अनादि अविनाशी छै आत्म प्रवृत्ति या माटे, तथा हर्षोल्लास तें भाव कर्माश्रित छै इम द्रव्य संग्रह नी टीका मध्ये कह्यो छै

१९ हिवे नव पदार्थ ना भावार्थ नो उगणीसमो

प्रश्न.—तथा ते पच परमेष्टी शरण करवू ते थी उदय कर्म नू निवारण थाइ अरिहतादिक ना द्रव्य थीं शरण करे तो द्रव्य थीं जे सर्व पापना उदय आवता ते निप्फल थाय, विपाक वेदना पण अल्प थाइ, इत्यादिक गुण घणों नीपजे सर्व द्रव्य पाप नो नाश करै. तथा (अथवा अप्प मिरउ) इम आत्मा आत्मा नु सरण करै सरणागत वज्र पजर वत् पोता नें स्वरूपे, प्रणमै तिवारे सर्व कर्म नो नाश करै, क्षय करै इम आत्म शरण अनें निमित्त सरण नो स्वरूप जाणवो तथा (अरिहत) नो नाम सभारता, समरता, प्रणमता, आत्मा नें श्यो गुण नीपजे ? अरि जे राग द्वेष भाव ते मिटैं, वीतराग स्वरूप पामै १ (णमो सिद्धाण) पद समरता, संभारतां, प्रणमता श्यो गुण नीपजे ? सिद्ध स्वरूप आत्म अरूपी भाव नें पामै २ तथा (आयरियाणं) पद समरता, सभारता, प्रणमता, जीव नें श्यो गुण नीपजे? पचाचार प्रवर्त्तन सुलभ उदय आवे भवांतरै, आचार्य पद गणधर पदादिक पामै ३ (उपाध्याय) पद नु

समरण सभारता, तन्मय प्रणमता जीव नें श्यो गुण नीपजे ? शास्त्रार्थ सूत्राभ्यास सुलभ पामे, अध्यापक शक्ति भनातेरे प्रगटै ४ (साधु) पद ध्यान करता मुक्ति मार्ग नो साधन सुगम, सुलभ, बोधि पामै, चारित्र सुलभ पामी, गज सुकुमाल नी परें, तुरत मुक्ति पद पामै ५ (दर्शन) पद आराधतो सम्यक्त निर्मल करे ६ (ज्ञान) पद आराधतो बोध निर्मल करै (चारित्र) पद आराधतो निरतीचारपणें सामायकादि पच चारित्र पच महा व्रत सुलभ पामै ८ (तप) पद आराधतो इच्छा निरोध थाय अणीच्छक गुण पामै ९. ए नव पद नो भावार्थ सक्षेप थी जाणवो

२१ हिवे उदय बध नू इक्कीसमो प्रश्न कहै छै ते नो स्वरूप लिखिये छै बाध्या कर्म उदय आवे, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पामी नें जेहवै रसै आवै तेहवा प्रदेशे तथा विपाकै भोगवै ते भोगवता जेहवा वेदे तेहवा नवा बीजा बधाय तिहा वेद, ते सम भावे वेदै, तिहा निर्जरा थाइ तथा वेदता जे विषम राग द्वेष भावे वेदे तो

नवा बधाय तथा विषम वेदी नें पछैं पश्चात्ताप करै, तिहा कर्मबध ना रस घात विघात करी कर्मबध नी चिकास मिटै ते उदय काले पामीनें सुगमें खरी जाइ अने जे कर्म विषम वेदीनें मग्न थाय ते चीकणा कर्म बाधे. ते उदय काले घणो दोहिला भोगवी नें निर्जरै पण वेदता बीजा कर्म ना बाधणा बधाय इति बध उदय नो भावार्थ जाणवो •

२२ हिवे बोध समाधि नो बावीसमो प्रश्न तेना लक्षण कहै छै ---सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र अप्राप्त प्रापण बोध तेषाएव निर्विघ्नेन भवान्तर प्रापण समाधि इति *

२३ सवेग वैराग्य लक्षण कथ्यते. ते तेवीसमो प्रश्न'—(सवेगो मोक्षाभिलाष) ससार शरीर भोगादि राग नो जे वय, ते वैराग्य (मोक्षनो अभिलाष ते सवेग) "धम्मो धम्म फलहि दोसणयहरिसो होय सवेगो.

* सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र जे अप्राप्त एटले क्यारे प्राप्त थया नथी ते नें प्राप्त करवु ते बोध केहवाय छै सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र नोज निर्विघ्न थकी भवान्तर मा प्राप्त थवु ते समाधि

ससार देह भोएसु विरति भावोय वेराग "

२४ हिवै दान शील तप भाव श्या वडे होय ते कहे छै ते चोवीसमो प्रश्न —धनबल वडे दान देवाय, मन बल वडे शीयल पले, तन बल वडे तप थाय, सम्यक् ज्ञान बल वडे भाव वधै, ए भाव तथा सद्गुरुनी देसना, सुदेवनी सेवना, सुधर्मनी आराधना ए त्रण निमित्त भाग्य जोगै मिलै

२५ अथ ध्यान प्रतिबन्ध काना मोहराग द्वेपाख स्वरूपम् कथ्यते पचीसमो प्रश्न —शुद्धात्मादि तत्वे विपरीताभिनिवेशनजनको मोहो मिथ्यात्वमिति यावत निर्विकार स्वसंवितिविलच्चण वीतराग चारित्रमोहो राग द्वेपो भण्यते चारित्र मोह शब्देन राग द्वेपो कप्प भण्यं इति चेत्कपाय मध्ये क्रोध मान द्वयेद्वेपाङ्ग माया लोभ द्वय रागाग नो कपाय मध्ये स्त्री पुनपुसक वेद त्रय हास्य रति द्वय इति पच रागाग। अरति शोक द्वय भ जुगुप्सा इति तुर्यद्वेपाग भावेतव्य ॥ अत्राह शिष्य

राग द्वेषोदय कि कर्म जनित ? किमात्म जनित ? इति प्रश्न पुसात नय विवक्षावशेन चिंतितैक देश शुद्ध निश्चयेन कर्म जनिता भएयन्ते। तथैव अशुद्ध निश्चयेन जीव जनिता इति,स च अशुद्ध निश्चयेन जीव जनिता इति स च अशुद्ध निश्चये शुद्ध निश्चयापेक्षा व्यवहार एव अथ मतं। साक्षात शुद्ध निश्चयेन कस्येति पृच्छामो वय ॥, तत्रोत्तर ॥ साक्षात् शुद्ध निश्चयेन स्त्रीपुरुप सयोगरहित पुत्रस्येव । सुद्धा हरिद्रायासयोगरहित रगविशेपस्यैव । तेपामुत्पत्तिरेव नास्ति कथमुत्तर प्रयच्छाम ॥ इति भाव ॥

२६ हिवै तिर्यग परिचय ऊर्द्ध परिचय नो अर्थ प्रश्न छावीसमो'—शास्त्रे मध्ये जिहा प्रश्ने तिर्यग परिचय कह्यो छै, ऊर्द्ध परिचय कह्यो छै तेहनो स्यो अर्थ ? जे पाच द्रव्य सप्रदेशी पचास्तिकाय छै तेहनें तिर्यग प्रसज्ञा कहीये १ नें जे एक काल अप्रदेशी छै तेह नें ऊर्द्ध सज्ञा जाणवी २ एह -नो विस्तार प्रवचनसार ग्रथे कह्यो छै

२७. अथ धर्म केतली प्रकार इति सत्तावीसमो प्रश्न ते कहे छै —तेह नी गाथा भाव नो धर्म तो कह्यो छै तद्यथा (धम्मो वत्थु सहावो खमादि भावो । य दस विहो धम्मो, रयण तयच धम्मो । जीवाण रक्खण धम्मो ॥ १ ॥)

अस्यार्थ–वस्तु नें वस्तुनो जे स्वभाव जिम चेतन नें चेतन स्वभाव अेक तो यह धर्म १ बीजो (यति मद्दव अज्जव) ए गाथाये जे दस प्रकारें यति धर्म कह्यो ते धर्म २ त्रीजो दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप आत्म प्रणमै धर्म ३ चौथो जीव नी द्रव्य भाव सहित दया पालै ने धर्म ४ ए भाव इति धर्म्म चतुर्द्धा मुनयो वदति इत्यर्थ ॥

२८ हिवै ४ प्रकारनो मुनि नें सयम कह्यो छै ते अठावीसमो प्रश्न—तिहा प्रथम प्राण सयम ते पट् काया ना जीव ना वधनी अविरत मिटी ते माटे प्राण सयम १, बीजो इद्रिया सयम ते पाच इद्रिय विकार थी निर्वत्तावै ते इद्रियसयम २ त्रीजो कपाय सयम ते त्रिण चौकडी कपाय ना उदय मिट्या माटे कपाय

त्रयम ३ चोथु मनसयम ते द्रव्य भाव रूप मन ना विकल्प सवरवा माटे ते मन सयम ४ तिहा द्रव्य मन ते पाच इद्रिय ना विषय रूप, अने भाव मन ते व्यक्ताव्यक्त विकल्प रूप ए च्यार प्रकारनो सयम साधु ने जाणवो आत्मा स्वभावै प्रणमै तिहा सम्यक्त गुण नीपजे तेहना फल ज्ञान अने आनन्द ए बे नीपजै तथा देहादिक परभावे प्रणमै तिहा मिथ्यात्व ससार नीपजै तेह ना फल सुख दु:ख ए बे नीपजै एहवो जाणी आत्म स्वभावे प्रणमवू ए तात्पर्य

२९ तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये उरपरि सर्प नी जाति समुर्छिम जेह नो शरीर जघन्य थी आगुल नी असख्यातमें भागें, उत्कृष्ट जोयण (जोजन) पहुत कह्यु छै अने तिहाज असालीओ सर्प ने जाति चक्रवर्त्ति ना स्कंध वार मध्ये ऊपजे ते समुर्छिम नो शरीर जोजन १२ बार नु कह्यो छै तेह नो आयु अतर मुहूर्त्त कह्यो छै वीजा नें ९ नव जोयण ताई कह्यो एह नें बार जोजनताई तें विचारवू तथा समुर्च्छिम उरपरि नो आयु ५३ त्रेपन

हजार वरस नोउत्कृष्ट कह्यो छै इति भाव

३० हिवे ४ प्रकारे मरण नो तीसमो प्रश्न — जे ४ प्रकार ना मरणे घणा जीव मरे छै एह भाव

३१ हिवे जीव ना जे द्रव्य गुण पर्याय छै तेहना घातक कुण छे ते इकतीसमो प्रश्न कहै छे — अज्ञानपणो ते आत्मद्रव्य नो घाती, मिथ्यात्व ते आत्मगुण घाती, अविरत ते आत्मिक सुख-पर्याय घाती तथा अज्ञान मिथ्यात्व ते आत्मानो जीवपणो दाबे छे, अविरति आत्मिक सुख दाबे छै, ए भाव

३२ तथा जीव शुद्ध ज्ञान उपयोगेभाव निर्जरा करै छै, अने वैराग्य भाव उदासीनताये द्रव्यनिर्जरा करै छै इति द्रव्यभाव निर्जरा स्वरूप जाणवो ए भाव

३३ हिवे इच्छा मूर्च्छाइ जीव स्यु पुष्ट करै ? ते तेतीसमो प्रश्न —ते जीव नें पुद्गल नी इच्छा मुर्च्छा छै ए ने करीनें जीव स्यु पुष्ट करै ? ते कहै छै—

इच्छाये अज्ञान पणो पुष्ट करे, अने मूर्च्छाये मिथ्यात्व पुष्ट करै. ए भाव

३४ हिवै गुण पर्याय ना घातक नो चौतीसमो प्रश्न—हिवै आठ कर्म मध्ये एक मोह नी२८ प्रकृति छै ते मध्ये ३ प्रकृति मिथ्यात्व मोहनीय जाणवी, २५ प्रकृति चारित्र मोहनी, ते त्रणै भाग वेहचाये,मोहै, राग द्वेपै तिहा मोह शब्दै मिथ्यात्व जाणवो राग द्वेप शब्दे चारित्र मोह जाणवो तेहनी २५ प्रकृति मध्ये १३ प्रकृति राग ना घरनी, १२ प्रकृति रागद्वेप ना घरनी, ते पूर्वे कह्यो छै तिम जाणज्यो ए अधिकार वीतराग समयसार ग्रंथे बन्धाधिकारे कह्यु छै

३५ हिवै शरीर परिणाम श्रद्धाननीगति प्रश्न पैंतीसमो ते—शरीर तथा परिणाम तथा श्रद्धान ए तीननी गति जे रीते छ ते रीत लिखिये छै शरीर नी गति तो उदयीक भावनी वेदनी मध्ये छै, १ परिणाम गति विषय कपायनी प्रवृति मध्ये इष्टानिष्ट रूपै छै२.

[illegible] [illegible] तत्त्वातत्त्वनी विवेचन रूपै छै ३ ती
[illegible], [illegible] आत्मानी तो ए रीते दीसे छै

,३६ हिवै द्रव्य गुण पर्याय स्या थी समरै ते छत्तीसम
प्रश्न —द्रव्य गुण पर्याय जीव ना छै ते जे गुण थ
समरै ते कहै छै दर्शन, ज्ञान, चारित्र ए तीनथी समरै

३७ हिवै जीव ना द्रव्य गुण पर्याय समरै ते
[illegible] ? तें सतीसमो प्रश्न —आत्मा द्रव्य असख्यात
[illegible] तेहनु जिनवचन प्रतीतें, अनुमानें, अनुभवें
[illegible] प्रत्यक्षे जे भासन थयो प्रतीतात्मक धर्म जे
[illegible] दीठो छै सम्यक् दर्शन गुण हेतु ते द्रव्य
[illegible], तथा प्रतीतात्मक धर्म अनन्त गुण नु जाण
[illegible] थयो ते गुण हेतु सम्यक ज्ञान जाणवो तथा द्रव्य
गुण रूपै प्रणमे ,जे पर्याय तेह नो हेतु स्वरूपाचरण
चारित्र गुण हेतु, एटले जीवना पर्याय समरै ते चारित्र
गुण हेतु, इम दर्शन द्रव्य,ज्ञानै गुण, चारित्रै पर्याय,
समरै, इति भाव.

३८ हिवै जन्म जरा मरण नु दुःख किम टलै ते अडतीसमो प्रश्न कहै छैः—तेहना हेतु रत्नत्रय धर्म ते किम ? सम्यक दर्शन गुण थयो अनन्त पुद्गल परावर्त्तता ए जे जीव घणा जन्म करतो ते अर्द्ध परा पुद्गल माठेरा ताई उत्कृष्टे जन्म करै, एटले सम्यक दर्शन गुणै घणा जन्म नी परंपरा थी खपावे १. तथा जरा जे शुभाशुभ कर्म उदयागते आवे ते सुख दुःख रूप वेदावे, तेह नी वेदनी ना सम्यक ज्ञान गुणै मिटायवानो २ जीव नें सम्यक चारित्र गुण ते स्वरूपाचरण व्रताचरण रूपै चारित्र गुणै जिहां मरण थी गति पामै एटलेइ चारित्र गुणे मरण वेदना मिटाविये ३ ए रीते जन्म जरा मरण भय मिटाववानो हेतु दर्शन ज्ञान चारित्र ए तीन गुण जाणवा ए भाव.

३९ हिवै योगै बांधै छै कर्म, तथा सत्तायें पिण कर्म छै ते शी रीते छूटै? ते उगणचालीसमो प्रश्न कहे छै — योग तीन उपार्जा जे कर्म ते तप संजमादि शुभ क्रिया

व्यापारे प्रवर्ते त्यारे टले तथा सताये कर्म छे ते, शुद्ध उपयोगे स्वाभाविक पोताना गुण पर्याय द्रव्यपणे प्रणमे ते सत्ता कर्म छे ते मिटावे इम योग कर्म छे ते शुभ क्रियाये निर्जरे तथाचयोक्त–"आगम अध्यातमतणा, कह्या घणा प्रबध। द्रव्य गुणे योगे परणमे, तो सोनो अने सुगध"। अने हिवे सत्ताये कर्म छे ते, शुद्ध उपयोगे निर्जराय ए भाव तथा मिथ्यात्व ना बाध्या कर्म सम्यक्त पाम्या थी मिटे, अविरती ना बांध्या ते विरते टले

४० पुन मिथ्यात्व अविरती ना बाध्या जे कर्म ते किम मिटे ? ए चालीसमो प्रश्न —–कषाय ना बाध्या कर्म उपशमादिक समता गुणे टले तथा प्रमादना बांध्या कर्म अप्रमाद दसाये टले इंद्रिय विषय ना बाध्या कर्म ते तपस्याये टले तथा योगना बाध्या कर्म ते अयोगी अवस्थाये सेलेसी करणे टले ए भावार्थ जाणवो

४१ -अथ निश्चय व्यवहार नय श्यो गुण करे

ते-इकतालीसमो प्रश्न — ते निश्चय व्यवहार नये सम्यक दृष्टि नें श्यो गुण करै ते कहै छै निश्चय नय ते जीव द्रव्य वस्तु नें दृढता आस्तिकता करण हेतु अने व्यवहार नय ते जीवना पर्याय शुभाशुभ कर्म रूपै जे भरया छै तेहनें समारवानो हेतु छै ते व्यवहार नय गुणकारी छै तथा ते व्यवहार नै केडै उधम छै अने निश्चय नय केडै दृढता स्थिरता छै. ए बे नय जिनेश्वरना भाष्या आत्म वस्तु नें समारवाना हेतु छै ए जैन पद्धति स्याद्वाद रूपै छै एभाव.

४२. हिवै निश्चय व्यवहार सम्यक शी रीते छै ते बिआलीसमो प्रश्न, तेहनो स्वरूप कहै छै— श्रीजिनवाणी प्रतीतै ग्रहीनें षट् द्रव्य ना यथार्थ परी गुण पर्याय धारे अनुभव प्रत्यक्षै स्वरूपनें वेदै, तथा गुण पर्याय नो विवेचन करै तथा पुद्गलादिक कर्म, पर्याय सू तदाकार न प्रणमैं, पाच इंद्रीना भोग विषै इष्टानिष्ट रूप न वेदै, पोताना स्व-रूप भेद रत्नत्रय रूपै आराधै, तेहनें व्यवहार

सम्यक्त कहिये तथा पोताना गुण गुणी पर्याय अभेद रूपै रत्न त्रय रूपै निर्विकल्प समाधिपणे प्रणमै तेहनें निश्चय सम्यक्त कहिये ये पूर्वोक्त वस्तु व्यवहार सम्यक्त ते निश्चय सम्यक्तनो कारण जे निश्चय सम्यक्त ते केवल ज्ञान नो कारण इति वीतराग समयसार ग्रथे उक्त

४३ तथा नव तत्व षट् द्रव्य नो जे आस्तिक भावै श्रद्धान, तथा देव गुरु धर्म नु यथार्थ पणै सत्य श्रद्धानु बुद्धिपणा नो प्रकाश विशेश तत्वातत्व नु नय भग रूपै, अनेकात मार्ग निक्षेप रीते, आगलै परपरायै वस्तु व्यवहार सम्यक्त जे पूर्व कह्यू ते रूप नें मेलवै इति रहस्य

४४ हिवै धर्म कर्म पुण्य पाप जेह थी होय ते चुमालीसमो प्रश्न —शुद्धोपयोगै जीव पोता ना द्रव्य गुण पर्याय सु तदाकारै आत्म पणै प्रणमै ते धर्म तथ राग द्वेष मय अशुद्धोपयोगै - जिहा कर्मबध नीपजै

ते बध थी ससार थी ते घणी बधै इम शुद्धोपयोगै धर्म अने अशुद्धोपयोगै कर्म. तथा शुद्धोपयोगै शुभ योगै पुन्य मन वचन काय ना योग प्रशस्त व्यापारै तदाकार पूजा, सामायक, दानादिक शुभ योगै प्रवर्तन तेथी पुण्य बध नीपजै तथा अशुभ मन, वचन, काया ना योग विषयादिक व्यापारै तन्मय तल्लीनतापणै प्रणमै तिहा पापबध नीपजै एटले शुभ अशुभ योगै पुण्य पाप बध, अने शुद्धाशुद्धोपयोगै धर्म कर्म नीपजै, तथा पुण्य बधै, शुभ गति, शुभ सामग्री साता जीव पामै तथा शुद्धोपयोगै धर्म, निर्जराय कर्म क्षय करी मुक्ति पद पामै तथा अशुद्धोपयोगै पापबधे; तेणे ससार मध्ये घणो काल रहे, घणा भव करै, तथा अशु भोपयोगै पाप बध थी आत्मा जिहा घणी असाता पामै एटले पापै असाता, पुण्यै साता, कर्मे ससार घणो बधे, धर्मे मोक्ष इम चार भेद भिन्न भिन्न जिम हता तिम कह्या इति रहस्य

पच इद्रिय ना २३ तेवीस विषय व्यापार अने योगै

३ तीन तल्लीनतापणै न जोडै तेह नें पापबध अल्प नीपजै, ते आलोयणै निंदै छूटै तथा शुधोपयोगै जे कर्मबध नीपजै ते भोगवै छूटै अत्र चौभगी कोई जीव नें नीपजै पाप में कर्म अल्प १ कोई नें कर्म बहु नें पाप अल्प २ कोई नें पाप बहु नें कर्म घणा ३ कोई पापबध कर्म बध एकै नहीं ४ इम कर्मबध पापबध ना भेद जाणवा

४५ तथा धर्म कर्म भर्म संयेणे ते पैंतालीसमो प्रश्न -तत्रो-त्तर,धर्मते शुद्धोपयोगै,कर्मते क्रियाई,भर्मते मिथ्यात्व मोह

४६ पुण्य धर्म एक छै किंवा जुदा छै ते छियालीसमो प्रश्न —पुण्य, पाप, धर्म, ए तीन वस्तु जुदी छै पुण्यना भेद–अन्न पुण्य १ पाण पुण्य २ लेण पुण्य ३ सयण पुण्य ४ वथ पुण्य ५ मन पुण्य ६ वय पुण्य ७ काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९ ए नव भेद उपजवाना कह्या छै तेहना फल ४२ बेतालीस (सातच गोयमण,दुगइत्यादि) तथा पाप ना अठारे पाप स्थान, ते १८ भेद तेहना फल ८२ बयासी (नाणतराय

दसग इत्यादि) धर्म ना १०दस भेद—खति, मद्दव, अज्जव, इत्यादि गाथा जे दस प्रकारे जती धर्म ते धर्म भेद धर्म ना फल ते मोक्ष इम धर्म आत्म स्वभाव जनित, अने पुण्य पाप ते कर्म जनित पुण्य तो बंध रूप छे. पुण्य तो भोगवै छे पुण्य ते आश्रव रूप छे पुण्य मिथ्यादृष्टी नें होय पुण्य ते क्षय छे तथा धर्म ते सम्यक दृष्टी नें छे धर्म संवर रूप छे. धर्म ते निर्जरा रूप छे धर्म ते अक्षय रूप छे धर्म मा दस भेद छे धर्म ना फल ते मोक्ष रूप छे इम धर्म पुण्य नी भेदता छे तथा धर्म पाप पुण्य वस्तु भिन्न, गति भिन्न, उपयोग भिन्न, अने फल भिन्न, ए रीते जाणवो

४७ हिवै धर्म कर्म उपजतो छदमस्त किम जाणै ते सैंतालीसमो प्रश्नः—सकल्प विकल्प परिणामै जवताइ जीव वर्तै छै तिहा कर्म नीपजै जे जीव निर्विकल्प भावे प्रणमै तिहा धर्म नीपजै एटले विकल्पै कर्म, निर्विकल्पै धर्म, ए भाव

४८ हिवै स्वाभाविक त्रण गुण नो लक्षण कहै

छे ते अडतालीसमो प्रश्न —प्रकाशना अने विलछनता स्वाभाविक लचण ज्ञान १ दृढास्तिकता प्रतीतात्मक श्रद्धानता स्वाभाविक दर्शन लक्षण २ तथा स्थिरता अने अनाकुलता चरण रूप ते स्वाभाविक चारित्र लचण ३ए त्रणना सामान्यपणे लक्षण जाणवा अने मूल भेद ज्ञान जाणवो दर्शन देखवो चारित्र परणमैवा इम छे पण उत्तर भेदे—स्वभाव लक्षण सामान्यपणे जाणवु ते ज्ञान जाणवो वस्तु गत दर्शन देखवो प्रतीतात्मक श्रद्धान रूप छे, ते दर्शन जाणवो अने विवेक रूप ते परण मनू तेम चारित्र तरण रूप छे ए जीव मा ३ गुण वस्तु रीते जाणवा ए भाव

४९ हिवे धर्म सांभलवो, जाणवो, धारवो ते केनी रीते? ते उगणपचासमो प्रश्न कहे छे —ते धर्म सांभलवो, ते धर्म जाणवो, ते धर्म आदरवो ते विधि कहे छे वीतराग नी वाणी स्यादवाद रूपे छे आत्म स्वरूप गुरु उपदेश कहे छे ते धर्म सांभलवो १ स्वसमय पर समय विलक्षता धर्म शुद्धाशुद्ध प्रकाश थयो ते

रत्नत्रय धर्म जाणवो तथा पोताना गुण पर्याय रूप आत्मा ते आत्मपणै प्रणम्योजेणें धर्म प्ररूप्यो ते धर्म आदरवों ३. इम ३ त्रण भेद जाणवा

५० हिवै जीव नी चेतना बे प्रकार नी छै ते पचासमो प्रश्न—तें एक ज्ञान चेतना १ बीजी अज्ञान चेतना २. अज्ञान चेतना ना बे भेद—एक कर्म चेतना १ बीजी कर्म फल चेतना २ ते मध्ये कर्म चेतना—ते राग द्वेष रूपै प्रणमै ते कर्म चेतना तथा उदय आव्या कर्म वेदै ते कर्मफल चेतना ज्ञान चेतना मध्ये कोई भेद नहीं ज्ञान चेतना प्रगटै ते कर्म चेतना तथा कर्मफल चेतना मिटै छै ज्ञान चेतना सम्यक्त पाम्या पछै होई. अने मिथ्यात्वी नें अज्ञान चेतना, ए भाव.

५१ हिवै त्रिकाल भाव कर्म निवारवानु कारण ते इकावनमो प्रश्न —ते हिवै त्रण्य कालै जे जीव पाप कर्म बावै छै ते निवारवानो कौण हेतु? इति प्रश्न तत्रोत्तर. गया काल ना पाप कर्म ते प्रतिक्रमणे मिटै,

अने वर्त्तमान काल ना पाप कर्म आलोयणै मिटै, अने अनागत काल ना पाप कर्म पचक्खाणै टलै ए भाव

५२ हिवै व्यवहार ना चार भेद नी विगत नो बावनमो प्रश्नः— अणउपचरित सदभूत व्यवहार प्रथम ते स्यु कहिये ? अनतो ज्ञान, अनतो दर्शन, अनतो सुख, अनतो वीर्य ए आद देई नें अनत गुणात्मक शुद्धता ते१ बीजो उपचरित सद्भूत व्यवहार तेहनो अर्थ क्षयोपशम ज्ञान, क्षयोपशम दर्शन, क्षयोपशम चारित्र ते२ त्रीजो अण उपचरित असदभूत व्यवहार एह नो अर्थ अनादि कर्म अने जीव ज्ञानावरणी आदि देई नें ८ कर्म जे द्रव्य कर्म ते३ चौथो उपचरित असद्भूत व्यवहार तेहनो अर्थ बेटा बेटी, घर, द्विपद, चतुष्पद आदि देई नें दस विध परिग्रह ते४ ए रीते ४ चार व्यवहार नो अर्थ जाणवो

५३ हिवै ३ तीन प्रकार ना कर्म छै ते तिरपनमं

प्रश्न —तेह नीं विगत द्रव्य कर्म ज्ञानावरणी आदि देइनेंदकर्म पुद्गलीक ते १ भाव कर्म ते राग द्वेष आदि देईनें आत्मा नो अशुद्ध परिणाम विभावे परिणमै ते भाव कर्म २ नोकर्म ते उदारिकादे पाच शरीर ते जाणवा ३ ए भाव

५४ हिवै दया ना चार भेद छै ते चोपनमो प्रश्न –दया ते मिथ्यात्वदृष्टी नें कही ते परहथ वेहचाणी राग द्वेषें हणाइ ते नथी जाणतो १ वा परदया तो विरति नें होई २ भाव दया ते सम्यकदृष्टी नें होइ ३ स्वदया चिपक श्रेणी चढता होइ ४ इम चार भेदे जाणवी

५५ हिवै मोक्षना ३ त्रण भेद ते पचपनमो प्रश्न —भाव मोक्ष सम्यकदृष्टी नें होइ १. द्रव्य मोक्ष साधु नें होइ २. गुण मोक्ष केवली ने गुणस्थानै १३। १४ तेरमा चवदमा सुधी होइ ३

५६ हिवै चेतना केवी ते छप्पनमो प्रश्न—

ते चेतना तीन प्रकारनी कही तिहा कर्म चेतना त्रस जीव नें १ कर्म फल चेतना एकेंन्द्रियादिक प्रमुख नें २ ज्ञान चेतना सम्यकदृष्टी नें होइ ३ इति भाव

५७ हिवें ससार मध्ये ३ तीन प्रकार ना जीव नो सत्तावनमो प्रश्न ते कहियें छै—एक भवाभिनदी ते मिथ्यादृष्टी जीव १ पुद्गलानदी ते सम्यकदृष्टी जीव जेह नें शुभाशुभ कर्म पुद्गल ना उदय आवै, रति वेदाइ, अतर वेदीपणो जाइ, पण ससार माहे आनन्दकारी न जाणै ते माटे सम्यकति जीव पुद्गलानदी कहिये, जेणै ससार ना पुद्गल नो आनन्दक ते २ केवल आत्मा नो आनद रत्न त्रय धर्मं वर्तै ते माटे मुनि आत्मानदी जाणवा३ इति भाव

५८ हिवे सुगति कुगति नो अठावनमो प्रश्न —ते शुभोपयोगै सुगति, अशुभोपयोगै कुगति अशुभोपयोगै ससार थाइ,शुद्धोपयोगै मुक्ति थाइ तेह नो हेतु,जे माटे शुभ प्रकृति नें उदयै जीव नें शुभ योग थाइ, धर्म नो कारण शुभ क्रिया करै तेथी शुभ बाधै ते शुभ गति

तथा अशुभ कर्म ना उदय अशुभ योगे थाइ तेथी अशुभ क्रिया विषयादि सेवे, तेथी पाप प्रकृति बधाइ, तेथी अशुभ गति ते माटे पुण्य पाप ते योग नें आयते, अने धर्म अधर्म ते उपयोग नें आयतै तेह नो राग द्वेष मोह नें उदय अशुद्धोपयोगे तेज मिथ्यात्व अधर्म कहिये तथा शुद्धोपयोग जे रत्न त्रय रूप जे परणाति वीतराग भाव ते धर्म ते बे उपयोगे एटला माटे इम जाणवो ए भाव जाणवो इति

५९ हिवे रोगाक्रान्तनु गुणसाठमो प्रश्न —जे रोगाक्रान्तनो अर्थ कहिये छै घणा काल लगै रहै ते रोग कहिये अने तत्काल सद्य प्राणघात करै ते आतंतक कहिये इति भाव

६० हिवै बल वीर्य नो साठमो प्रश्न —ते बल, वीर्य,नै पराक्रम नो अर्थ लिखिये छै बल ते शरीर नो१, वीर्य ते अतरग आत्मा नो२ पराक्रम ते उदयानुसारी जाणवो३. ए भावार्थ सूत्रे इति

६१ हिवे सम्यक्त, मिथ्यात्व नो इकसठमो प्रश्न —सम्यक्त ते,जीवनी सत्ताइ द्रव्य तत्व रूप छै ते जिवारे पोतानो समय पामी नें पडै तोही पिण मिथ्यात्व पर्याय द्रव्य गुण रूपै एकत्व पणै न प्रणमी सकै तेहनाथी,तो तिवारे ७०सीत्तर कोडाकोडी सागरोपम नी थिति बधाती नथी एटला माटे मिथ्यात्व ते पर्याय रूप प्रणमै छै त्यारे एक कोडाकोडी सागर नी माठेरी बधाय छै, ते भाव पोताना क्षयोपशम थी उपजे छै पछै ज्ञानवत बहुश्रुत कहै ते सत्य इति

६२ हिवै पुद्गल ते कर्म छै,अनें जीव ते पिण कर्म छै ते शी रीतें?ते बासठमो प्रश्न —पुद्गल परमाणु विभाव रूपै प्रणमै तिवारे द्विणुकादि खध कर्म नीपजै१ अनें जीव पिण पोतानो स्वभाव मेली विभाव रूपै प्रणमै तिवारे कर्म रूप थईनें पुद्गल कर्म वर्गणा ग्रहै२ ते जीव जिवारे सम्यक्त पामै तिवारे जीव अकर्म रूप थयो पुद्गलना कर्म पुद्गल प्रतया उदय प्रतिया रया, अनें आत्म प्रतिया गया, ए भाव जाणवो

६३ हिवे नव तत्व छै ते चार प्रकारे छै एक नव तत्व नी गाथा ते च्यार प्रकारे छै, तेनो अर्थ ते तिरसठमो प्रश्न कहै छै.—एक नामे नव तत्व १ बीजो गुण तत्व २ त्रीजो स्वरूपै लक्षणे ३ चौथो प्रणाम रूप नव तत्व जाणवो ए च्यार प्रकारै नव तत्व छै तेहनो अर्थ—नामै नव तत्व (जीवाजीवा पुन्न पावा) इत्यादिक ए नाम थी जाणवा १ बीजो गुणै, ते चेतना गुणै जीव ते किम? असख्यात प्रदेशी अनत गुणमय ते शुद्ध चेतना गुण, तथा वरणादि गुणवत अजीव में पाचे अजीव द्रव्य ना गुण जे रीते कह्या छै तिम जाणवा तथा ऊर्द्ध गति इद्रिय सुख नें आपै ते पुण्य नो गुण, अधोगति सक्लेश रूप ते पाप नो गुण, शुभाशुभ कर्म आगमन रूप ते आश्रव नो गुण शुभाशुभ निरोध शुद्धोपयोगे रूपे सवर नो गुण, नोतन कर्म पूर्व कर्म सू मिलै ते बध गुण शुभाशुभ रूप कर्म सडन रूप ते निर्जरा गुण, आत्म प्रदेश थी कर्म क्षये गुण.इम बीजो भेद२ तथा त्रीजे भेदै ए नव तत्व

श्रापश्रापणे स्वरूप जाणवा ३ तथा चोथे भेदे प्रणाम रूप नव तत्व जीव तत्वे जीव नें जीव रूपें प्रणमै ते जीव तत्व ४इम नवे तत्वे जीव नें आप आपणे रूपै प्रणमै इम एक जीव तत्व इम एक नव तत्व नी गाथा तथा अजीव ते जीवे आहारादि हेतु प्रणमै छै पुण्य ते जीव नें इद्रिय सुख नी साता रूप प्रणमै ते च्यार प्रकारे जाणवी एणी रीते श्रावक ते जीवाजीव नें जाणे एतले जीव जाण नें सवर,निर्जरा,मोक्ष उपादेय कीधा अने अजीव जाणनें पुण्य पाप बध, आश्रवबध एतला हेय कीधा ए रीते श्रावक जीव अजीव ना जाण कहीइ तथा नव तत्व च्यार प्रमाण साते नयै४च्यार निक्षेपै द्रव्य भाव भेदे भली रीते जाण्या छै जेणे ते श्रावक स्वसमय परसमय ना जाण कहिये इति भाव

६४ हिवै कर्त्तापणे कर्म, अने क्रिया तिहा ताई बध ते चौसठमो प्रश्न — ते कर्त्ताइ कर्म अने क्रियाइ बध ते किम ? जिहा जेहनो कर्त्ता,तिह

तेहवा द्रव्य कर्म आवै तथा जिहा जेहवा हेतु तिहां तेहवी क्रिया ते क्रियायै शुभ अशुभ कर्म नो वध नीपजै तथाचोक्त ॥दोहा॥ कर्त्ता परिणामी दरव, करम रूप परिणाम। किरिया (क्रिया) परजय की फिरनी, वस्तु एक त्रय नाम॥ इति समय सार ग्रथोक्त

हिवै जैन दर्शन ते उपयोगै तथा अक्रिय भावै छै जैन दर्शन श्रद्धान ते शुद्धोपयोगै छै ते शुद्ध उपयोग आत्म भावै छै, अक्रिय भावै छै अने बीजा योगै क्रिया धर्म छै इति भाव

६५ द्रव्य सवर भाव सवरनो पैंसठमो प्रश्नः—तथा मन, वचन, काया ना योग प्रतिया जे कर्म छै ते, मुनी तप सयमै करी निर्जरै छई बीजा आवता निरोध करै छै तथा अशुद्ध उपयोग प्रतिया जे कर्म ते रत्नत्रय रूप आत्मिक धर्म प्रणमीनें सत्ता सोधें कर्म थी मुकाई छै ए भाव ते माटै मुनी, योग सवर आराधता उदयें कर्म निवारें, तथा उपयोग सवर आरा-

घता कर्म नी सत्ता सोधै, सकल कर्म थी मुकाई छइ इम द्रव्य सवर नें भाव सवर नो स्वरूप जाणवो इति

६६ दर्शन तेथी जे देखवो ते शी रीते छै ते छासठमो प्रश्न —दर्शनते जे देखवो कहे छै तेहनो अर्थ यथा श्रुत लिखिये छे छद्मस्त सम्यक् द्रष्टी प्रत्यक्ष स्वरूप किम देखै ? इति प्रश्न तत्रोत्तर परोक्ष प्रत्यक्ष अनुभव गोचर अनुमान प्रमाण प्रतीते प्रत्यक्ष देखै ते किम ? पोताना परिणाम शुभाशुभ कर्म रूप राग द्वेष द्वारे, बुद्धि पूर्वक ते परिणाम पोता ना देखै ते परिणाम जीव द्रव्य थी ऊठे छे श्या माटे ? ते जीव परिणामी द्रव्य छै, तेहना सगी जीव नें बुद्धि पूर्वक परिणाम दीठो एणें अनुमाने आत्मा दीठो किम् ? यथा–सूर्य बादल माहि उग्यो छै, मेघ नी घटा घणी छै, तोही पण प्रकाश सूर्य नो छै ते अनुमान दिवस कहिये–सूर्य दीठो कहिये इण दृष्टाते तथा धूम्र दीठे अग्नि दीठी कहिये इम जिन वचन नी प्रतीते, परोक्ष प्रत्यक्ष आत्मा सम्यक् दृष्टी वीतराग वचन नी प्रतीते

यथार्थ देखै छै तेहनी शुचि प्रतीत नी श्रद्धा छै इम यथार्थ जाणे ते सम्यक् ज्ञान तथा जेहवो दीठो निज स्वरूप एकाते, जेहवो वस्तु रूपै जीव द्रव्य निकलक जाण्यो तेहवो राग द्वेष विकल्प रहित प्रणमै ते स्वरूपाचरण चारित्र तथा गाथा—(पुइयाइ सुवसहिय पुन जिणेन दीठ। मोह कोहा विहिणो परिणामो अपण्णो धम्मो ॥ १ ॥) ए स्वरूप चौथै गुण स्थानै होई जेहनें आत्म बोध थाशे तथा प्रभु मार्ग ना अपहसा ते मानसे एहवो हमें धार्यो छै तेहवु शास्त्र प्रमाणे लिख्यू छै ए माहि ए काई जिन वचन थी विरूद्ध होइ ते श्रीसघ साथे मिच्छामि दुक्कड

६७ हिवै निर्जरा नू स्वरूप किंचित् लिख्यते ते सगठमो प्रश्नः—ते निर्जरा कर्म नो साटन करै ते मध्ये मिथ्यात्वी नें आश्रव बन्ध पूर्वक निर्जरा होई, सम्यक् दृष्टी नें सवर पूर्वक द्रव्य भाव निर्जरा होई. ज्ञान शक्ति वैराग्य वलै करी नें तिहां ज्ञान शक्ति तें शुद्ध स्वरूप नो अनुभव अने वैराग्य बलै करी नें

अशुद्धोपयोग नो मिटाविवो तिहा ज्ञानोपयोगे भाव निर्जरा ते किम ? जिहा राग द्वेष मोह प्रणमित नु घटाडवो तिहा भाव निर्जरा अने द्रव्य निर्जरा ते कर्म वर्गणानो घटाडवो जे उदय आवे ते निर्जरे तेहवा पाछा बधाइ नहीं बध अल्प अने निर्जरा घणी इम ज्ञान शक्ति वैराग्य बले सम्यक् दृष्टी द्रव्य भाव निर्जरा करे छे मिथ्यात्वी कर्म निर्जरा करे पण ते निर्जरा थी बधाई घणा मार्गानुसार नें पण कर्म निर्जरा पणे बाधे अल्प पण वस्तु थकी सत्ता निर्जरा ते सम्यक् दृष्टी नें होई ए भाव

६८ हिवै जीव नु गुण पर्यायनो अडसठमो प्रश्न — ते हिवै आत्मा ना असख्यात प्रदेश छै एकेक प्रदेशै अनती शक्ति नै अनतु ज्ञान छै तथा एकेक प्रदेशै अनत पर्याय छै इम द्रव्य गुण पर्याय नु थापवो जाणवो ते स्यादवाद मार्ग

६९ हिवै द्रव्य नी शक्ति गुण शक्ति किहा छै ते

गुणतरमो प्रश्न—ते हिवै द्रव्य नी शक्ति, गुण नो प्रकाश,पर्याय नो ठरण, एतला वस्तु लीधे आत्म द्रव्य छै ते सम्यक् दर्शन थी द्रव्य शक्ति प्रगटै सम्यक् ज्ञान गुण थी प्रकाश थाइ सम्यक् चारित्रे परिणाम ठरण गुण वधे ए भाव

७०. जीव नें उपयोग केतला छै ते सित्तरमो प्रश्न —ते जीव नें उपयोग बे—एक शुद्ध १ बीजो अशुद्ध २ ते मध्ये शुद्ध माहि कोई भेद नथी अशुद्धोपयोग ना बे भेद—एक शुभ १ बीजो अशुभ २ तिहा शुभोपयोगै वर्त्तै (ते जीव) पुण्य उपार्जे, ते थी सुगति पामै. तथा अशुभोपयोगै वर्त्तै ते जीव दु:ख रूप कुगति पामै तथा शुद्धोपयोगै वर्त्ततो ते जीव सिद्ध गति पामै

७१ हिवै इकोत्तरमो प्रश्न—ते हिवै शुद्धोपयोग ते सम्यक्त्व पाम्या पछी होई अनै अशुद्धोपयोग ना घर ना सर्वे.ससारी मिथ्या दृष्टी जीव नें होइ ते मध्ये मिथ्या दृष्टी नें शुभ क्रिया होइ पिण, शुभोपयोगै नहीं शुभोपयोग तो शुद्ध ना घर नो छै ते अणइच्छक रूपै होई

अने मिथ्यात्वी नें शुभ क्रिया रूप शुभोपयोग होय शुभाचार रूपै होय पिण निदान * अभिलाप सहित होई, ते माटै अशुभ रूप कह्यो अने सम्यक दृष्टी नें शुद्धोपयोग ना घर नो जे शुभोपयोग ते अनिदान रूपे होई ते माटै सम्यक्दृष्टी नें शुद्ध उपयोग, तें शुभ मिश्रित होई ते माटै तरतम भेदे चौथा गुणस्थान थी माडी बारमा ताई मिश्रोपयोग होई तेरमा थी शुद्धोपयोगै पूर्ण पद होई मिथ्यात्वी नें अशुद्धोपयोग होई ए भाव

७२ हिवै बीजी रीते सम्यक दर्शन नो अर्थ कहे छै ते बोहत्तरमो प्रश्न – ते सम्यक दर्शन यथार्थ रूपें प्रतिभास दर्शन जे रीते देखै छै ते भेद लिखिये छै श्रीवीतराग देव ना वचन नी आकरी प्रतीत जिम कंद मूल जीव अनंता प्रतीत रूपें देखै छै तिम आत्मा अरूपी असख्यात प्रदेशी श्रीजिनवचन नी आकरी प्रतीत रूप देखै छै, तिम आत्मा एक तोए रीतें कहीइ १

* नीयाणा रूपे, इच्छारूपें

बीजो अनुमान प्रमाणे परोक्ष प्रत्यक्ष रूप देखे छै ते किम? यथा(यत्र धूम तत्र वन्हीं इति न्यायात्) जिम धुंवाडो देखी नें अनुमानै दीठो अग्नि स्वरूप,तिम ए आत्मा चेतना लक्षणो जीव चेतना ते श्यु कहीइ? जे सुख दुख नें वेदे ते वेदनी जीव नें प्रत्यक्ष छै ते माटे (लक्ष्य लक्षणे ज्ञायते) लक्षण जे लक्ष दीठो एक अश प्रत्यक्ष सर्व प्रत्यक्ष थयो ए रीते पिण सम्यक्त दृष्टी आत्म स्वरूप देखै ए बीजो भेद

७३, हिवै त्रीजी रीते सम्यक् दर्शन कहै छै ते तिरयोत्तरमो प्रश्न —हिवै देश विरती मुनी तरतम भेदे तथा अनुभवै ते प्रत्यक्ष जिम वस्तु विचारता ध्यान धरता मन विसराम पामै छै, रस स्वाद सुख ऊपजै छै, परिणाम ठरै छे, ते अनुभव प्रत्यक्ष, जिम साकरनी आस्वादता हजार मण साकर नो अनुभव थयो तिम जीव द्रव्य पोता नो सम्यक् दृष्टीये अनुभवे प्रत्यक्ष दीठे. ए तीजो भेद

७४ हिवै सम्यक् दर्शन नो चौथो भेद स्वरूप

प्रत्यक्ष ते चुमोत्तरमो प्रश्न कहै छे—जिहा द्रव्य गुण पर्याय एकीभुत अभेद रत्नत्रय रूप मुनि प्रणमै जिहा, तिहा स्वरूप निज पद कद प्रत्यक्ष देखै इम ४ च्यार प्रकार सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूप देखै

"छउमच्छाण देसण पुर्वे नाण" इति सूत्रे उक्त यथा छद्मस्त ने आगल थी देखवो पछै जाणवो, दर्शन ते सामान्यावबोध छे १ झात्वार रूप भास थाइ थोडो काल रही पछे ज्ञान माहे मिलै ते ज्ञान विशेषावबो ध छे २ घणा काल रहे ते माटै, यथा गाथा "आत्म दर्शन जेणं कस्यो छै, तेणे मुध्यो भव भय कूपरे," इम यसविजय जी ये पण कह्यो छै यथा "प्रवचन अजण जो सदगुरु करै, तो देखै परम निधान जिणेसर" एहवो लाभानदजी यें पिण कह्यूछै ए रीते सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूपैं देखैं पण साक्षात् करामलकवत असख्यात प्रदेशी आत्मा अरूपी ते केवल दर्शन थई देखै पण सम्यक् दृष्टी ते प्रतीतैं अनुमान अनुभवे स्वरूपै देखै। इम कहे ए जिन वचननी प्रतीतें द्रव्यनु स्वरूप दीठो अनुमानै ते चेतन

लक्षण जे गुण प्रसद्द दीठो, अनुभवे ते प्रणमन पर्याय रूपै दीठो,स्वरूपै ते अभेद रत्नत्रयात्मक निज पद कद दीठो ए रीतें आत्म स्वरूप नो छद्मस्त सम्यक् दृष्टी नें देखवो कहिये छै अमारे चिंते तो शास्त्रोक्त रीतें पोतानी बुद्धि माहे एहवो भासै छै ते केवली वदें ते सत्य. जे कोई प्राणी सम्यक्त दृष्टी नें आत्म दर्शी नथी मानता, श्रद्धा भासन मानै छै ते ऊपर एटली चर्चा लिखी छै ए मांही जे कोई जिन वचन विरुद्ध स्वमत कल्पित होइ तो मिच्छामि दुक्कड

७५ जोग ३ तीन ते साधु नें छै, रत्नत्रय रूपै प्रणमै छै ते किम ? ते पिच्छोत्तरमो प्रश्न कहे छै — मनयोग तो दर्शन श्रद्धान रूपें छै, जे वस्तु ना निर्द्धार थी चलै नही १ तथा वचनयोग तो ज्ञान भणवो, यथार्थ उपदेश सत्य प्ररूपणा ज्ञान रूपें प्रणमै छै २. तथा काययोग तो षट् काय नी दया रूपै प्रवर्त्तें छै ३. (जय चरे जय चिठे) इत्यादि. इम मुनि ना ३ तीन योग ते रत्न त्रय रूप प्रणम्या छै

तथा ए रत्नत्रय धर्म थी जन्म जरा मरण ना भय टाले छे, ते किम ? सम्यक् दर्शन थी घणा जन्म मिटाव्या, सम्यक् ज्ञान थी जरा दुःख जे वेदना ते मिटावी तथा सम्यक् चारित्र गुणे मरण भय टले. इम ३ तीन गुणे जन्म जरा मरण भय मिटे ए भाव

७६ हिवे प्रमाण४ चार ते जीव नें किम भोग पडे ते छिहोंत्तरमो प्रश्न — तथा ते प्रमाण च्यार जे रीते आत्मा नें भोग पडे छै तेहनी विगत लिखिये छै प्रथम तो आगम प्रमाणे षट् द्रव्य षट काय ना स्वरूपें जे वीतरागे भाष्या वचन प्रमाणे तहत्कि करी मानवा, इहा संदेह तथा युक्तायुक्त न करवी इम जीवाजीव ना स्वरूप आगम प्रमाणे प्रमाण तहत करी मानवा ते मानता आत्मा नें प्रतीते सम्यक् धर्म नी पुष्टि थाई १ बीजु अनुमान प्रमाणे लक्ष्य लक्षणे निरधार थाई यथा धूम दीठो अग्नि नो निर्द्धार थयो, तिम चेतना लक्षण अनुमाने करी लक्ष्य जो आत्मा तेह नो निर्द्धार थयो इहा आत्मा नें वस्तुगते अनुभवीनें वस्तु ना गुण गुणी

नो धशे प्रत्यक्ष थाइ २. द्वि [illegible] प्रमाण, तिहा वस्तु ना अंश धर्मनें परिपूर्ण [illegible], जिम आज नें काले मत्यक्ष [illegible] पाम्यों, यथोक्त समुद्रवत, इम [illegible] मानता आत्मा नें विनय गुण नी [illegible] प्रत्यक्ष प्रमाण. जेहवो जिनेश्व [illegible] पाप ना फल प्रत्यक्ष देखिये [illegible] मानता आत्मा नें [illegible] विषय कषाय [illegible] आत्मा नें गुण [illegible]

पणा३ तीन प्रकार नीं देसना आपै छै यथार्थ वाद १ विधि वाद २ चारितानुवाद ३ ए तीन प्रकार नी देसना नें मध्ये यथार्थ वाद देसना जीव अजीव ना स्वरूप धारया, प्रणम्या थकी वस्तु तत्वनों प्रकाश थाइ तिणे भाव कर्म रोग मिटै १ तथा विधि वाद देसना महा व्रत देस विरत ते रूप क्रिया शुभोपयोगै आचरतो द्रव्य कर्म रोग मिटै, कर्म नो काट उतरै २ तथा चारितानुवाद देसना थी शरीर सबधी काम भोग विषय कषाय थी निरती जिम जबू स्वामी प्रमुख महा मुनि एहूना चरित्र भवै वैराग्य ना गुण प्रगटै, तेह थी नोकर्म नो रोग मिटै ३ इम तीन प्रकारनी देसना ते तीन प्रकार ना कर्म रोग मिटाववाना कारण ए भाव

७८ हिवै दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य गुण ते कुण हेतु पमाडे ते अझोत्तरमो प्रश्न कहै छे —धर्म सामलनों अभ्यास उद्यम एटली जेहनीं रुचि होई ते सम्यक् दर्शन गुण नें पमाडे तथा तत्वातत्वगवेषणा बुद्धि होय ते सम्यक् ज्ञान गुण नें पमाडै तथा पाच

इंद्रिय ना विषय, ४ च्यार कषाय, पाच प्रमाद, तेहना त्याग बुद्धि होइ ते चारित्र गुण नें पमाडे तथा वस्तु गतैं अनुभव लग्न तल्लय(तल्लीन)होय ते वीर्य गुण नें पमाडै इम गुण ४च्यार ना हेतु धारवा तथा एहीज गुण शरीर मध्ये जिहायै मुख्य ताई होय छै ते स्थानिक कहिये दर्शन ते चक्षु, ज्ञान ते हृदय, चारित्र ते चरणे, तथा उछाह इच्छो वीर्य पाद होइ एम ४ च्यार गुण स्थानिक समझ लेजो ए भाव

७९ हिवै हिंसा ना केतला भेद छै ते गुण्या-सीमो प्रश्न —ते हिंसा केतली प्रकार नी छै तेहना भेद लिखिये छै. स्वरूप हिंसा १ अनुबध हिंसा २द्रव्य हिंसा ३ भाव हिंसा ४ बाह्य हिंसा ५ परणाम हिंसा ६ जोग हिंसा ७ इत्यादिक घणा भेद छै ते मध्ये काईक नो अर्थ लिखिये छै स्वरूप हिंसा ते साधु नें, तथा नदी उतरै छै पण मुख्य वर्त्तो हिंसाना परणाम नथी तथा सम्यक् दृष्टी नें देवपूजा गुरुवदणा साधुनें आहार आपै तिहा इत्यादि कार्य स्वरूप हिंसासारखी दीसै छै,

पण ३ तीन प्रकार नी दमना भापे छे यथार्थ वाद १ विधि वाद २ चरितानुवाद ३ ए तीन प्रकार नी देसना नें मध्ये यथार्थ वाद देस्ना जीव अजीव नां स्वरूप धारया, प्रणम्या थकी वस्तु तत्वनो प्रकाश थाइ तिणे भाव कर्म रोग मिटै १ तथा विधि वाद देमना महा वृत देस विरत ते रूप क्रिया शुभोपयोगे आचरतो द्रव्य कर्म रोग मिटै, कर्म नो काट उतरै २ तथा चरितानुवाद देसना थी शरीर सबधी काम भोग विषय कषाय थी निरती जिम जंबू स्वामी प्रमुख महा मुनि एहूना चरित्र भवै वैराग्य ना गुण प्रगटे, तेह थी नोकर्म नो रोग मिटे ३ इम तीन प्रकारनी देसना ते तीन प्रकार ना कर्म रोग मिटाववाना कारण ए भाव

७८ हिवै दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य गुण ते कुण हेतु पमाडे ते अठ्योत्तरमो प्रश्न कहै छै —धर्म सामलनो अभ्यास उद्यम एटली जेहनी रुचि होई ते सम्यक् दर्शन गुण नें पमाडे तथा तत्वातत्वगवेषणा बुद्धि होय ते सम्यक् ज्ञान गुण नें पमाडै तथा पाच

इंद्रिय ना विषय, ४ च्यार कषाय, पाच प्रमाद, तेहना साग बुद्धि होइ ते चारित्र गुण नें पमाडे तथा वस्तु गतें अनुभव लग्न तल्लय(तल्लीन)होय ते वीर्य गुण नें पमाडै इम गुण ४च्यार ना हेतु धारवा तथा एहीज गुण शरीर मध्ये जिहायै मुख्य ताई होय छै ते स्थानिक कहिये दर्शन ते चक्षु, ज्ञान ते हृदय, चारित्र ते चरणे, तथा उछाह इच्छा वीर्य पाद होइ एम ४ च्यार गुण स्थानिक ममझ लेजो ए भाव

७९ हिवै हिंसा ना केतला भेद छै ते गुरणा-सीमो प्रश्न'—ते हिंसा केतली प्रकार नी छै तेहना भेद लिखिये छै. स्वरूप हिंसा १ अनुवध हिंसा २द्रव्य हिंसा ३ भाव हिंसा ४ बाह्य हिसा ५ परणाम हिंसा ६ जोग हिंसा ७ इत्यादिक घणा भेद छै ते मध्ये काईक नो अर्थ लिखियें छै स्वरूप हिंसा ते साधु नें, तथा नदी उतरै छै पण मुख्य वर्त्ता हिंसाना परणाम नथी तथा सम्यक् दृष्टी नें देवपूजा गुरुवदणा साधुनें आहार आपै तिहा इत्यादि कार्य स्वरूप हिंसासारखी दीसै छै,

पण अल्प वध रूप छे, ते माटे स्वरूप हिंसा कहिये १. बीजी अनुबंध हिंसा ते राग द्वेष सहित जे प्रणामीनें जे कोई मंदबुद्धि प्राणी छ कायना जीव नें हणे तेहवा तरतम अध्यवसाय महा कर्म ना बध करै तेहना अशुभ विपाके उदय आवे ते अनुबध हिंसा कहीइ २ वली एह ना भेद मध्ये द्रव्य हिंसा आवै तेह नो किंचित् अर्थ लिखिये छै द्रव्य हिंसा अणा उपयोगे ३ भाव हिंसा तीव्र प्रणामै होई ४ बाह्यहिंसा ५ तथा योग हिंसा ६ तथा एटली स्वरूप हिंसा माहि भिलै तथा प्रणाम हिंसा ७ ते भाव हिंसा माहि भिलै इत्यादिक समझ लीजो तथा एकही जीव नें हिंसा अल्प पण फल काले दु ख विशेष पामे तेणे करी श्रद्धान विपरीत पणे दु ख घणो पामशे,जमाली नी परें तथा एक जीव ते हिंसा घणी करै छै,पण फल काले अल्प दु ख पामे ते शेणें,दुष्टाध्यवसाय नें अभावै उदय आव्या ते नि फ़ल करै दृढ प्रहारनी परें इत्यादि चौभगीओ अहिंसा अष्टक ग्रंथ मध्ये विस्तारै कह्यु ते तथा (एकस्याल्प-

हिंसा ददाति काले तथा फलमनल्प । अन्यस्य महा हिंसा स्वल्प फला भवति परिपाके॥ १ ॥) इत्यादि ८ गाथा छे तिहा थी जोज्यो इति. श्री हरिभद्रसूरी कृत हिंसाष्टक मध्ये छे

८०. हिवे शास्त्र मध्ये ३ तीन योग कह्या छे ते असीमो प्रश्न—इच्छा योग १ शास्त्र योग २ सामर्थ्य योग ३ ते मध्ये इच्छा योग ते दस प्रकारें यती धर्म कह्या ते आदरवानी इच्छा १ शास्त्रयोग ते शास्त्रे जे, हेय, ज्ञेय, उपादेय, तीन प्रकार कह्या छे ते मध्ये कह्यू छै—जे उपादेय वस्तु कही ते आदरै ते बीजो योग २ तिवार पछी त्रीजो सामर्थ्य योग ते कोई आत्मा ज्ञाने वैराग्य बल नी समर्थ ताइ करीनें अनन्त काल भोगववा योग जे कर्म ते थोडा काल मध्ये क्षय करै यथा गज सुकुमाल नी परै ३ योग नो व्याख्यान योगदृष्टी समुच्चय ग्रन्थ मध्ये कह्यु छै ते थी जाणवो इति

८१ हिवे द्रव्य, गुण, पर्याय जे विकारे त्रिगड्या

छै ते कहे छै ते इक्यासीमो प्रश्न —द्रव्य विकार थये। ते कर्म प्रकृति आवरणी १ गुण विकार ते राग द्वेष विभावनाई २ पर्याय विकार थयो ते मनोयोग कल्पनाइ ३ ए भाव

८२ हिवै मति श्रुत ज्ञानी तथा अज्ञानी जिन वाणी सांभले ते शी रीते प्रणमै ते बियासीमो प्रश्न —मति अज्ञानी जे जिनवाणी सांभले ते विकल्प रूपे तथा डामाडोलपणे प्रणमै तथा मति ज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते निर्विकल्पपणे तथा निरधारता रूपै प्रणमै तथा श्रुत अज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते विषय रूप तथा नास्तिक रूप प्रणमै तथा श्रुत ज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते वैराग्य रूपे तथा आस्तिकपणे प्रणमे एटले सम्यक् दृष्टी ते जिनवाणी सांभलवाना अधिकारी जाणवा ए भाव

८३ हिवै जीव कर्म सु किम मिल्यो छै ? ते त्रियासीमो प्रश्न —ते द्रव्यार्थिक नयै आत्मा कर्म

तु तुंबडी ऊपरे माटीना पड होई तिम तुंबी मृत्तिका नी परे मिल्यो छै एह ना प्रदेश माहि कोई कर्म-वर्गणा एकी भाव नथी थई तथा पर्यायार्थिक नयै आत्मा कर्म सु क्षिरनीर नि परे एकरूपे लोलीभूत थयो तिहा चतुर्गति भ्रमण करै छै ए भाव

८४ हिवै पाच इंद्रिय नी सोल सज्ञा होई ते चौरासीमो प्रश्न लिखिये छै —आहार संज्ञा १ भय सज्ञा २ मैथुन सज्ञा३ परिग्रह सज्ञा ४ क्रोध सज्ञा ५ मान सज्ञा ६माया सज्ञा७ लोभ संज्ञा ८ सुख सज्ञा ९ दु'ख सज्ञा१० मोह सज्ञा ११ वीत गच्छा सज्ञा १२ शोक सज्ञा १३ धर्म सज्ञा १४ ओघ सज्ञा १५ लोक संज्ञा १६ ए माहिली पहली १० सज्ञा ते एकेंद्री नें, बीजी सज्ञा बेंद्रियादिक नें १५ पदर होइ अने १६ सज्ञा पचेंद्री सम्यक् दृष्टी नें होइ ए भाव.

८५ हिवै सोले सज्ञा जीव केह नें होइ ते पिचासीमो प्रश्न — केतलाइ दोष जेह नें मुख्यनाई

होई ते कहे छै क्रोध ते रजपूत नें घणो होइ मान ते
क्षत्री नें घणो माया ते गणिका तथा वणिक नें घणी लोभ
ते ब्राह्मण नें घणो राग ते हितु मित्र नें घणो खेद
तथा द्वेष ते शोकी नें घणो होइ अने शोक ते
जुआरी नें घणो होइ चिन्ता ते चोर नी माता नें
घणी होय भय ते कायर नें घणो होय इत्यादिक
बोल घणा छै ते विशेषाविशेष जाणवा इति

८६ हिवे धर्म कर्म किम होइ ते कहे छै
छियासीमो प्रश्न.—धर्म ते आत्म भावै शुद्धोपयो
होइ अने कर्म ते अशुद्धोपयोगै तथा शुभाशुभ भा
भवितव्यताइ थाइ, कर्म ते करणीयइ थाइ जेहवी
क्रिया तेहवा कर्म, अने धर्म ते अक्रिय रूपैं होइ
जेहवो शुद्धोपयोगै वृद्धवत होइ तेहवो धर्म वृद्धवत
होइ ए भाव

८७ हिवे श्री जिन ना ४ च्यार निक्षेपा तेहने
स्थानक शरीर माहि किहा छै ते सित्यासीमो प्रश्न ते

ह्है छै.—नाम जिन नो थानक छै ते जिव्हाग्रे छै. ापना जिन नो थानक चक्षु माहि छै द्रव्य जिन नो ानक जिन वचन थी, एटले एहनो थानक मनोयोग े जे माटे श्रद्धान ते मनोयोग श्रद्धान मध्ये छै भाव जेन ना थानक हृदय माहि होय ए निक्षेपा ना थानक जाणवा.

८८ हिवे पांचेंद्री शेणे भरी छै ते इठ्यासीमो प्रश्न — द्रव्येंद्री आकार ते मल मूत्र रक्त मांसादि अशुभ पुद्गले भरी छै अने भावेंद्री ते राग द्वेष विकार भरी छै

८९ हिवे ४ च्यार सज्ञानो नव्यासीमो प्रश्न — ते ४ च्यार सज्ञानो परमार्थ कहे छै हिवे तिहा आहार सज्ञाइ तो जीव अनादि नो खातोज रहे छे, कदापि तृप्ति नथी पाम्यो १ अने भय सज्ञा ए ४ च्यारे गति माहि धूजतोज रहे छै २ अने मैथुन सज्ञाइ पांचेंद्री ना विषयाभिलाषी थको रहे छै ३ परिग्रह सज्ञाइ एकठो

करै छे, तिणै करि जीव कषाय छे४ ए ४च्यार संज्ञा मध्ये एक पहली वेदनी कर्म ना घर माहेनी छे अने ३तीन सज्ञा पाछली ते मोहनी कर्म माहेली छै तथा आहार सज्ञाइ शरीर परीरै हिंसा इम आहार सज्ञा हिंसा ना कर्म घणा बधाइ तेह थी असात वेदनी पुर पामै छै तथा भय सज्ञाइ कल्पना ना कर्म नो योगै व्यक्ताव्यक्तरूप कर्म बधाइ छे, तथा मैथुन सज्ञाइ पचेंद्री ना विषय ना कर्म घणा, तथा परिग्रह सज्ञाइ कषाय ना कर्म तीव्र बधाइ छे इम ४च्यार तीव्र भावै जे जीव नें प्रवर्त्त ते अधोगति जाइ—ससार मध्ये जन्म मरण घणा करै ए भाव

तथा वली ए ४च्यार सज्ञा बीजी प्रकारे कहै छै आहार शरीर थी हिंसा ते हिंसाइ, दु ख ते दु खै आरत ध्यान ते आरत ध्यानै अनन्ता ससार वधै एटले आहार सज्ञा माहि अनतो ससार छै तथा भय सज्ञाइ कल्पना घणी वधै कल्पनाइ करी जीवनें राग द्वेष परणति वधै तेणै करी आठ कर्म निबड बाधै तेथी

च्यार गति मध्ये गमनागमन करै तथा मैथुन सञ्ज्ञाइ विषय सेवै ते पोताना रतत्रय गुणनें आवरे,ते जीव आत्मा कर्म नें, ए ४ च्यार गति माहे असाता पामै तथा परिग्रह सञ्ज्ञाइ करी कपाय नो कर्म घणो बाधै,तेणे करी ससार नी प्राप्ति घणी थाइ एणें रीते ४ च्यार सञ्ज्ञाइ करी जीव ससार माहे दुःख पामै छै ए ४ च्यार सञ्ज्ञा मध्ये साधूजीइ बे २ सञ्ज्ञा तो छठै सातमै गुण स्थाने घटाडी तथा त्रीजी सञ्ज्ञा तो नवमै गुण स्थाने गई अने चौथी सञ्ज्ञा दसमै गुण स्थाने गई ए ४ च्यार सञ्ज्ञानो भावार्थ जाणवो. अनादि निगोद थी जे ऊचो व्यवहार रासी तथा पचेंद्रीपणा सुधी पामै छै ते ए ४ च्यार सञ्ज्ञा नी मदताई तथा ए ४ च्यार नी तीव्रताई पाछो अधोगति जाई छै. तथा जीव नें ज्ञान चारित्र वे गुण छै, तथा दर्शन गुण ते ज्ञान गुण मध्ये अतर्भूत थाइ छै सामान्यावबोध माटे ते मध्ये ज्ञान गुण नें मते छै अने चारित्र गुण उपादान रूप छै ते माटे ए उपादान गुण नु ४ च्यार संज्ञानी मदताइ जीव ऊचो

माहि होइ इम ८४ चौरासी लाख पूर्व नो आउखो तें मध्ये ८३ तिरयासी तीर्थंकर थाइ इम ते ८३ नें वीस गुणा करें तिवारे १६६० एक हजार छ सौ साठ थाइ वीस वधता माहि भेलाइ तिवार १६८० एक हजार छअसो अस्सी तीर्थंकर उत्कृष्टे काले १७० एक सो सीतर तीर्थंकर वर्त्तता केवलपणे विचरे छै तिवारे एकेक ना अवतार माहे ८३ तीरयासी तीर्थंकर ऊपने ते १६० एकसौ साठ गुणा कीजे तिवारे १३३४० तेरा हजार तीन सो चालीस थाइ अने १७० एकसो सीतर वर्त्तता ते माहि भेलाइ तिवारे १३५१० तेरा हजार पान सो दस एतला होइ एतलु आच गच्छ नायके कह्यू छै पिण अक्षर दीठे प्रमाण दीठो करिये ते कहे छै जे विशेषाविशेषके कह्यु छै, जिम साभल्यु तिम लिख्यु छै, पछै तो जिम केवल ज्ञानी प्रकाश्यो ते सत्य— (सत्तरिसय सुकोसिज नय। विस विहरमान जिना। समय खित्ते दसवा। जम्पई वीसदस गवा॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

विवरो ए गाथा तणो, केवलियो सभाल ।
सित्तरसौ जिनवर होई, कहै केई काल ॥ १ ॥
चढतो काल ओसरपेणी, वारे आठम जिन ।
एकसो सित्तर१७०जिनवर हुवै,इण परिसुणो सजन॥२॥
पाच विदेह मेलवी, साठसौ विजे उपन ।
भरतइरवत दस मिलै, सित्तर सौ होइ जिन ॥ ३ ॥
पडते काले अवसर्पणी, सोलम जिन लगें हुत ।
भरता रेवत जिन हुवे, साठिसो १६० विदेहे लहत॥४॥
केवली केई वोल परंण्या, वयणे एहिसोय ।
आठमा जिन थी सोलमा लगै, विरह विदेहे न होय॥५॥
सोलमा जिन साथे सहु, मुगति जाइ जिन भाण ।
विरहि समै सहु चेत्रे में, उरह एहा पिछाण ॥ ६ ॥
सत्तरमा जिन होय भरह , पच ऐरवत्त मिलनें दस ।
समये चेत्रे दस कह्या, लेहवा एह अवस्स ॥ ७ ॥
सत्तरमा जिन अठाररमा विचे, जन्मे वीस विदेह ।

वीस एकवीसमा विर्चे, सयम केवल देह ॥ ८ ॥
भरता रेवत दस मिलें, मध्यम सपद तीस ।
चौवीसमा जिन शिवगया, विदेह विचरै वीस ॥ ९ ॥
आगत चौवीसे सातमा, आठमा विर्चे निरवाण ।
विरह पडै सहु क्षेत्र में, अठम न होइ जिन भाण ॥ १० ॥
आठमाथी नथी वली, एम सितरकादिक थाइ ।
परपराई पूर्वे जिम कही, तेवी एम सदाय ॥ ११ ॥
दस वीस एकण समै, जिनवर जनम कहात ।
भरतइरावत दिन हुवै, पाच विदेहे रात ॥ १२ ॥
आगमै इम भाखियो, चवण जन्म अध रात ।
भरतेरावत जनिं होय, दिव विदेह विख्यात ॥ १३ ॥
बीस सिंहासन सहू, दोइ मेरु पाचे लाधे ।
दो दो पूरव पश्चिमे, एक दक्षिण उत्तर साधे ॥ १४ ॥
च्यार जन्मै विदेह प्रत्ते, पाच मिली नें वीस ।
भरतेरावते दस होय, एक समय जन्म लहीस ॥ १५ ॥
वीस २ जन्में विदेहे सही, साठसो विजये पुराय ।
लाख चोरासी पूर्वायुत, सधनुष पाचसै काय ॥ १६ ॥

चढते दोय पडते तीनें, आरे धर्म कहाय ।
भरतैरावत ते सही, विदेही धरम सदाय ॥ १७ ॥
परिवर्त्तिना काल भरहेर, वय लेखो इहांथी लेह ।
चोथो नित्य विदेह में, आणद रुचि भणेह ॥ १८ ॥
जिनवर ए नित्य समरता, लहिये सपद कोडि ।
पडित पुण्य रुचि गुरु, सीस कहे कर जोडि ॥ १९ ॥

९४. हिंवे चक्रवर्ति नें १४ चउदा रत्न किहा ऊपजे ते चोरागुमो प्रश्न—चक्र १ असि २ छत्र ३ अने डड ४ ए चार रत्न आयुध शाला माहे ऊपजै तथा मणि रत्न १ कागणी रत्न २ चर्म रत्न ३ निधि सिरि ग्रहे नीपजै, एव ७ सात, पुरोहित रत्न १ वार्द्धिक रत्न २ सेनापति रत्न ३ गाथापति रत्न ४ ए ४ च्यार रत्न पोताना नगरे उपजै. एव तिवार पछी स्त्री रत्न राज कुले नीपजै. गज रत्न १ अने अश्व रत्न २ वैताढ्य पर्वत ऊपर उपजै ए १४ चउदा रत्न नी उत्पत्ति कही -

९५ हिंवे नव निधान किहा प्रगटै ते पिचाणुमो

प्रश्न कहे छे ––ते मध्ये शी शी वस्तुछे? गंगा नदी नें तटे नव निधान नी नव पेटी प्रगटे, ते ते पेटी केवडी? १२ बार जोयण आयाम लांबी, नव जोयण पोहली विस्तारें, अर्द्ध योजन नी ऊंची त जोयण आत्मांगुल प्रमाण. ए नव निधि मंजुस नें आकारें छे वैडूर्य माणि रत्नमय कमाड (किंवाड–कपाट) छे, तेहना नाम वस्तु कहिये छे–– नैं सर्पिक पहलूं ते मध्ये स्कधावार नगर निवेस ए निध पहिलें १ पाडुकॅ नामे बीजु तिहां धान बीज नी सर्व संपति २ पिंगल नामे त्रीजु ते मध्ये नर नारी, हय गय नां आभरण विध छे ३ चोथु महा पद्म नामे, ते मध्ये १४ चउदे जाति ना रत्न छे ४ पांचमो मह्लि नामे विविध प्रकार ना वस्तु ते मध्ये छे ५ छठु काल नामे तेमां त्रिकाल ज्ञान ना पुस्तक छे ६ सातमुं महाकाल नामे ते मध्ये सोनों रुपो मणि लोह सर्व द्रव्य अखूट छे ७ आठमो माणवक नामे, ते मध्ये राजनीति. युद्ध नीति, सर्व हथियार युद्ध नीं नीति छे ८.

नोमो सुख नामै, ते मध्ये चतुर्विध तुर्याना अगना नारि नाटक नी विधि सगीत ना ग्रन्थ छै ९ एकेक निधाने एक हजार देवता अधिष्ठायक छै. व्यतरीक देवता छै, तेह नो आयु एक पल्योपम नु, ए भाव.

९६ हिवै प्रभु जिहा पारणो करै तिहा केतली वृष्टि होइ ते छियाणमो प्रश्न—ते ऊपर गाथा—"अद्धे तेरस कोडि उक्कोसच्छ होइ वसुधारा। अद्ध तेरष लषा जह नेया होइ वसुधारा"

९७ हिवै १४ चउद विद्या मोटी छै ते सत्याणमो प्रश्न—ते विद्याना नाम लिखिये छै प्रथम नभोगामिनी १ पर शरीर प्रवेसनी २ रूप परिवर्तनी ३ स्तभनी ४ मोहनी ५. स्वर्ण सिद्धि ६ रजत सिद्धि ७ रस सिद्धि ८ बध मोक्षणी ९ शत्रु परायणी १० वश्य करणी ११. भूतादि दमनी १२ सर्व सपत्करी १३ शिवपदप्रापणी १४, ए १४ चउद मोटी विद्या जाणवी.

९८ हिवै पच प्रस्थानै आत्मा ते पच प्रस्थान

ते किहा ते अठ्याणमो प्रश्न.—अभय १ अकरण २ अहमेंद्र ३ कल्प ४ तुल्य ५, ए अवस्था साधना सावधान छै अभयते अरिहत नो ध्यान १ अकरण ते सिद्ध नो ध्यान २ अहमेंद्र ते आचार्य नो ध्यान ३ तुल्य ते उपाध्याय नो ध्यान ४ कल्प ते साधु नो ध्यान ५ ए समान अवस्थाइ ते पच प्रस्थान मई आचार्य देइ ए भाव, अर्थ ध्यानमाला ग्रन्थे विस्तारै कह्यू छै

९९ हिवे त्रीजु गुणस्थान चढता पडता कि आवै ते नव्याणमो प्रश्न —तत्रोत्तर—चढता पडता बे प्रकारै आवै ते किम ? अनादि मिथ्यात्वी होइ तेह नें चढता नावे ते प्रथम पहलाथी उपशम सम्यक्त पामै गठीभेद करै ते चोथे आवै ते माटे अनादि मिथ्यात्वी ते पहिला थी चोथै आवै ते माटे मिश्र गुण स्थाने न आवै तथा सादि मिथ्यात्वी सम्यक्त पामी नें पड्यो होइ ते पाछे क्षयोपशम सम्यक्त पामै, ते तीजु गुण स्थानकै आवै तेह नें पडताइ पण आवै ए भाव इति

१००. हिवै समोहिया असमोहिया मरण तेह नो अर्थ सूत्रे छै ते एकसोमो प्रश्न लिखिये छै—समोहिया ते श्युं? जे इहा थी जीव निकलै, सम कालें सर्वें प्रदेशें लेइनें पर भव जाइ, जिम दडो छूटो नाखै तो दडाना प्रदेश साथै जाय, तें समोहिया मृत्यु कहिये १. अने असमोहि मरणै तो जीव ना प्रदेश श्रेणी बध जाइ आगल थी मोकलै अथवा जीव निकल्या पछी पछ-वाडै जाइ मिलै श्रेणीगत जाइ पडाइ ना दोड नी परें. ए रीते सूत्र छै ए भाव

१०१ जीव ने उपयोग गुण ते सम्यक्त, अनें ठरण गुण ते चारित्र तें आचारवा नें कुण बलवत्तर छै ते एकसौ पेलो प्रश्न—जेहवो आत्मा नो उपयोग वस्तु आत्म जीवन गुण आवरवानें मिथ्यात्व बलवत्तर छै. तिम एह नी प्रणमन सुख निवारवानें अविरत्यादि हेतु बलवत्तर छै ते माटे मिथ्यात्व नें उदै सम्यक्त गुण न पामै अविरत नें उदै चारित्र गुण स्थान रूप न पामै. ते माटे एह नी प्रणमन उपयोगें एकाग्र रूपी प्रणमै.

तिवारे ए सुख रूप ज्ञान चारित्र मई सपूर्ण धर्म पाम्या ए भाव

१०२ हिवे ३ तीन प्रकार ना कर्म किम छै ते एकसौ बीजु प्रश्न —ते कर्म नी वर्गणा छै ते द्रव्य कर्म कहिये अने ते वर्गणा जिवारे पाच शरीर पणै प्रणमै तिवारे तेह नें नोकर्म कहिये अशुद्धोप योग ना राग द्वेष मोह परिणाम ते भाव कर्म ए भाव

१०३ हिवै एक पद ना श्लोक नी सख्या केतली, ते एकसौ त्रीजु प्रश्न –द्वादशैव कोट्यो लक्षा एयसीति अधिकानि श्चैव । पचाशदष्टोच सहस्रस ॥ अष्टेव ८ सह सचुलसिहिं८४सय१००छक्क साढा ५० एक वीस पयग थार ॥ एतली एक पदना श्लोक नीं सख्या जाणवी ए भाव

१०४ हिवै १४ चउद पूर्व ना जेतला पद छै ते जुदा२ लिखिये छै ते एकसौ चोथु प्रश्न —तिहा प्रथम उत्पाद पूर्व ना ११ कोडि पद छै १ बीजु

आग्रायणीय तेहना पूर्व ९६ छनु लाख पद छै २ तीजो वीर्यापवाद पूर्व, तेहना ७० लाख पद छै ३ चोथु अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व ना ६० लाख पद छै ४. पाचमु ज्ञान प्रवाद पूर्व, तेह ना ३६ कोडि पद छै ५. छठो सत्य प्रवाद पूर्व, तेह ना १ एक कोडि ६० साठ लाख पद छै ६ सातमो आत्म प्रवाद पूर्व, ३६ छत्रीस कोडि पद छै ७ आठमो कर्म प्रवाद पूर्व, तेह ना एक कोडि ८ आठ लाख पद छे ८ नवमो प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, तेह ना ८४ चोरासी लाख पद छै ९ दसमो विर्या-प्रवाद पूर्व, तेहना ११ ग्यारे कोडि १५ पन्दरा हजार पद छै १० इग्यारमो कल्याण प्रवाद पूर्व, तेहना ६२ बासठ कोडि पद छै ११ बारमो प्राणवायु पूर्व, १ एक कोडि ५६ छपन लाख पद नो छै १२ तेरमो क्रिया विशाली पूर्व, ९ नव कोडि पद नो छै १३ चउदमो लोकबिंदुसार पूर्व, तेहना १३ तेरा कोडि ५० पचास लाख पद छै १४ एक पदना ५१०८८४० अक्षर।८। एक पद नी संख्या जाणवी अनुयोग द्वारवर्त्ती संपूर्ण

१०५ हिवै बीजा गुण स्थानै (सास्वादन) जिन नाम कर्म सत्ताइ किम न होय ते एकसौ पाचमो प्रश्न छै — ते कर्म ग्रथ नी अवचूरी मध्ये कह्यु छै यथा (सत्ते अडयालसयं जाव उवसमुवि जिणु वीयातइय) अस्यार्थ । सत्ताइ कर्म नी प्रकृति १४८, एकसौ अडतालीस मिथ्यात्व गुणस्थान थी माडी यावत् इग्यार मा सुधी होइ पण बीजै त्रीजे गुण स्थाने जिन नाम कर्म विना १४७ एकसो सैंतालीस प्रकृति सत्ताइ होय ते किम? तेह ना अभिप्राय कहे छै चोथे गुण स्थाने क्षयोपशम सम्यक्त छै ते जिन नाम कर्म बाधै ते बाधी नें पाछो पडे समकित वमै तो ते पहिले गुण स्थानकै आवै, पण बीजे त्रीजै गुण स्थानै नावै ते माटै मिथ्यात्व गुण स्थाने जिहा सुधी उपशम समकित होइ, तिहां सुधी जिन नाम न बाधे स्तोक काल माटै क्षयोपशम तथा क्षायक समकित छै ते बाधै ते पाछौ वमै ते क्षयोपशम समकित पडतो जिन नाम कर्म बध वालो पहिले गुण स्थान आवै, पण बीजै तीजै नावै तिहां १४८ अेकसो

अडतालीस प्रकृति सत्ताई होय तथा उपशम समकित वालो जिन नाम कर्म नथी बाध्यु ते पडते त्रीजे गुण स्थानै तथा बीजे आवै. अने उपशम भावै तो जिन नाम कर्म नो बध नहीं ते माटे बीजे त्रीजे गुण स्थानै सत्ताइ १४७ एकसो सैंतालीस प्रकृति होइ तथा उपशम समकित च्यार वार आवै, भव माहि४च्यारवार तो उपशम श्रेणी चढता आवै वली पाछो पड़े एक वार, ते उपशम समकित पामतो गंठी भेद थाइ ते समै आवै. तथा पाचमी वार आवै ते पाछो पडी आठमै गुण स्थानै आवी नें पछै क्षपक श्रेणीक माडी केवल ज्ञान पामी सिद्धि वरें ए भाव

१०६.हिवै क्षयोपशम समकितनु लच्चण कहै छै ते एकसौ छ मो प्रश्न — ३ तीन मोहनी, ४ च्यार अन्तानुबधी नी चोकडी, ए सात प्रकृति माहि थी मिथ्या (मोहनी)३अने४अन्तानुबधीचौकडी ए ७ सात प्रकृति मांहि थी जे कांइक दलिया छै, वर्गणा छै, ते माहि थी जेतली वर्गणा ना दलिया ते प्रकृति ना उदै

आवै ते खपावै अने बाकी रह्या तेह नो उपशम करै—उपशमावै तेह नो नाम क्षयोपशम कहिये ते क्षयोपशम समकित ना भेद लिखिये छै

॥ दोहा ॥

च्यार खपहिं त्रय उपशमाहिं, पच खय उपशम दोय।
पय षट उपशम एक यों, क्षय उपशम त्रिक होय॥१॥

एह नो भावार्थ लिखिये छै सात प्रकृति मध्ये ४ च्यार चारित्र मोहनी नी छै, ३ तीन प्रकृति मिथ्यात्व मोहनी नी छै ते मध्ये ६ छ पहली ते बाघण (बाघिनी) जेवी छै एक सम्यक्त मोहनी ते कुतरी (कुतिया) सरीखी छै तेह नो विवरो, ए सात प्रकृति जिहा उपशमै तिहा उपशम सम्यक्त कहिये ए ७ साते प्रकृति सत्ता माहि थी क्षय करै तिहा क्षायक समकित ए सात माहिली कांईक खपै, कांईक उपशमै तिहा क्षयोपशम समकित कहिये

॥ दोहा ॥

क्षयोपशम वरनें त्रिविध, वेदक च्यार प्रकार।
क्षायक उपशम युगल जुत, नोवासमकित धार॥ १ ॥

क्षयोपशम समकित ३ तीन प्रकार नो, वेदक समकित ४ च्यार प्रकार नो, क्षायक समकित एक प्रकार नो, उपशम समकित एक प्रकार नो एह नी रेगत—जिहा ए सात माहि नी ४ च्यार क्षयै अने २ वे उपशमै, अने १ एक वेदै ते प्रथम भेद १ तथा ए सात माहिली ५ पाच खवै, १ एक उपशमै, १ वेदै ते क्षयोपशम समकित नो बीजो भेद २ ए बे प्रकारे क्षयोपशम वेदक कह्यु तथा तीन प्रकार नु क्षयोपशम समकित कह्यु, एतले पाच प्रकार कह्या ४ च्यार क्षयोपशम नो, तथा ४ च्यार क्षपै ३ तीन उपशमै ते क्षयोपशम सम्यक्त १ अथवा ५ पांच क्षपै २ दो उपशमावै ते पिण क्षयोपशम समकित २ अथवा ६ छै क्षपै अने एक उपशमावै ते पिण क्षयोपशम समकित ३ ए तीन प्रकार करी क्षयोपशम समकित कहिये

हिवै क्षायिक वेदक नो एक भेद ते किम ? ते छ प्रकृति खपावै अने एक वेदै ते क्षायिक वेदक कहिये तथा छ उपशमावै अने एक वेदै ते उपशम वेदक कहिये इम तीन प्रकार नो क्षयोपशम समकित, बे प्रकार नो क्षयोपशम वेदक,एक प्रकारे क्षायक वेदक, एक प्रकारे उपशम वेदक, एव ७ सात तथा एक क्षायक जे साते क्षय जाय, एव ८ आठ तथा एक उपशम जे सातै उपशमावै, एव ९ नव प्रकारे समकित ना विगरीनें नव भेद छठा पूर्व मध्ये कह्या छै तेहनें ए आम्नाय

१०७ हिवै मोहनी ना लक्षण कहै छै ते एकसौ सातमो प्रश्न — मिथ्यात्व मोहनी ते स्यु ? ते विभ्रम पणै युक्त आत्मस्वरूप विपरीत जाणै जिम सीप नें रूपो कहै ते १ मिश्रमोहनी ते विभ्रम पणै सदेह युक्त अनिर्द्धारपणै जाणै पण आत्म ज्ञान प्रतें पामवा नादे २ सम्यक्त मोहनी ते समी वस्तु ऊपर मोह उपजावै— म्हारा देव, म्हारा गुरु तथा जिनवचन मध्ये सका

कखा उपज्या ते लक्षण समकित मोहनी नु३ तथा अनंतो छे अनुबंध कर्म विपाक रस ते अनतानुबंधिया कहिये. ए भाव.

१०८ हिवै सापेक्ष निरपेक्ष नो अर्थ कहे छे ते एकसौआठमो प्रश्न—सापेक्ष ते सदय परिणाम ते हलै बलद (बैल) खेड़ता कोई अपेक्षा आसरी उतावल करै, पण कोई नी अपेक्षा विना निर्दयपणै कार्य न करै, कार्य पडे पण दया राखै, ते सापेक्ष कहिये अने निर्पेक्ष ते निर्दयपणै थई कार्य करै कार्य विना पण ताडना तर्जना करै ते निर्पेक्ष कहिये ए भाव

१०९ हिवै सम्यकदृष्टि नु एकसौनवमो प्रश्न कहे छै—सम थयु ते, निमित माहि तो पुण्य पापना उदयनु सम थयु, जे आवै हर्ष नहीं, पापनें उदै गये खेद,नहीं तथा सम्यक् दृष्टी नें श्यु दृष्टि मध्ये सम? ते उपादान मांहि ते राग द्वेष धारा नो सम थया निमित मांहि तो पुण्य पाप ना उदय नो सम्य थाय

जे आवे हर्ष नहीं, पाप नें उदे गये खेद नहीं एहवा
जेहनी दृष्टि ते समदृष्टि कहिये एटले समदृष्टि ए बे
पद नो उपादान निमित्त देखाडयो, ए भाव

११० हिवे ४ च्यार निक्षेपा जिनना तेह नी
द्रव्य भाव थी भक्ति शी रीते करवी ते एकसौदसमो
प्रश्न —प्रथम पवित्रता पणे एकाग्र चित्ते असातन
टाली जिन नो नाम जपिये ते नाम जिन नी भक्ति १
तथा थापना जिननी अष्ट प्रकारी तथा सतर भेदी
विधि सु करै पछै भाव पूजा तन्मय थई प्रणमै
थापना जिन नी भक्ति २ तथा द्रव्य जिनते जिनना जीव
तेह नें विषे तेह नें भावे, जिन ना जीव जाणीनें भा
सु वदणा करवी ते द्रव्य जिन नी भक्ति ३ तथा भा
जिन ते त्रगडे बैठा, समोसरणे घणाएक जीव नें प्रति
बोध आपता एहवा जे आज श्री सीमधर स्वामी तेह
वदणा, नमस्कार, गुण स्तुति इत्यादि करी ए तन्म
थई भावी जिन नें ए रीते भक्ति करै ४ ए निक्षेप ४ च्य
नी भक्ति नी रीते समन हृदय थी लिख्युं छै ए भा

१११ हिवे जीव नें देवु अने दरिद्रपणो किम टलै ते एकसौ ग्यारमो प्रश्न—जीव अनादिकाल नो रागद्वेष मोहे प्रणमै छै तेणै देवो नें दरिद्रपणु ए बे बंधे छै ते किम टलै ? समकित गुण पामै, रत्नत्रय धर्म पामे टलै ते किम ? ते दर्शन गुण प्रगटे द्वेष भाव जीवइ समभाव प्रगटै, ज्ञान गुण प्रगटै पुद्गलादि ऊपर राग भाव मिटीजे, वैराग्य गुण प्रगटै. चारित्र गुण प्रगटै, मोहनो दरिद्र जाइ, चरण ठरण गुण प्रगटै, इम ए गुण प्रगटै, ए दरिद्र जाइ तथा ए देवो करज (ऋण) टलै ते किम ? दर्शन गुणै जन्म भयनी परपराइ मिटै ज्ञान गुणै तो जरा नी वेदना मिटे चारित्र गुणै मरण भय मिटै, एतले अमर पद पामी सिद्धीवरे इम दर्शन गुण ज्ञान चारित्र गुणै प्रगटै जन्म जरा मरण ना भय टलै जिम एक नर लक्ष्मी धन प्रचुर पामै, दारिद्रपणु अने देवु ए बे टलै, तिम रत्नत्रय रूपे धर्म धन प्रगटै. राग द्वेष मोह रूप दरिद्रपणु जाइ अने जन्म जरा मरण रूप देवा ना भय टलै ए भाव

छै ए भाव

११५ हिवे साताइ सुख, असाताइ दु ख ए माहि निमित्त उपादान कुण छै ते एकसौपदरमो प्रश्न — साता,असाता, दु ख, सुक्ख,यो श्रायो विशेप. साता, ते अनुक्रमेण उदय प्राप्तीना वेदनीय कर्म पुद्गलानों अनुभवरूप, तथा सुख दु ख नें परोदीर्यमान वेदनीय अनुभव रूप साता असाता ते उपादान रूपै छै साता असाता ते वेदनीय कर्म ना उदयपाम्या जे पुद्गल तेहनु वेदवु भोगवु, ते अशुद्ध उपादान रूप छै अने सुखदु ख तेहना फल छै, तेहनाफल उदे स्या?वेदनीय कर्म भोगववु एतले निमित्त रूप थयो जो साता उपादाने, सुख निमित्ते साता तिहा सुख होइ अने असाता उपादानै, अने दु:ख निमित्तै एतले असाता तिहा दु ख एतले जिहा जेहवो वृच तिहा तेहवो फल, ए भाव

११६ हिवै साता असाता आत्माश्रित छै सुख दु खते पुद्गलाश्रित छै तथा वेदना २ ने प्रकार नी ते

एकसोसोलमो प्रश्न.—(वेयणा दुविहा अभुपगमीया उवक्कमीया अभुपगम कीया स्वय अभ्युपगम्यते वेदते यथा साधुर केश लुचना तापानोदिभिर्वेदयती उपक्राम- किंतु स्वयमुदीर्णस्योदीर्णा करणे न चउदय उपनीतस्य वेद्यस्य अनुभव इत्यार्थ ॥) एह नो भावार्थ—एक वेदनी कर्म काल पाकी स्वभावे उदय आवे ते समभावें वेदी खपावे ते अभ्युपगामकी वेदना अने एक उदीरणाइ करी उदय लावी नें वेदनी कर्म ना पुद्गल सम भावे वेदी खपावे ते उपक्रामकी वेदना जाणवी, ए भाव.

११७ हिवे जिन वचन स्याद वाद रूपैछै ते ४ च्यार प्रकारे छै ते एकसौ सतरमो प्रश्नः—ते कारण कार्य रूपै छै १ ते निमित्त उपादान लीघइ २ द्रव्य भाव सहित छे ३ निश्चय व्यवहार नय युक्त छै ४ एहवा च्यार प्रकारे साहित होइ ते जिन धर्म देसना कही, ए भाव

११८ हिवै बे परिसह शीत छे ते किहा ? ते एक सौ अठारमो प्रश्न —आचारगे तृतीयाऽध्येन

धुरेटिका मध्ये इमक्ह्यू छै— जे २२बावीस परिसह मध्ये २ बे परिसह शीत अने२०वीस परिसह उष्ण ते बे किहा? एकस्त्री परिसह १बीजो सत्कार परिसह२ बाकी सर्व उष्ण परिसह छै— मन नें तापकारी माटे उष्ण छै, ए भाव

११९ हिवै बन्ध१ सत्ता२ उदय३नें उदीरणा ४ ए च्यार मध्ये आत्माश्रित अने पुद्गलाश्रित केतला होयते एकसौ उगणीसमो प्रश्न कहै छै —उदय१अने सत्ता २ ए बे पुद्गलाश्रित छै,अने बध १ उदीरणा२ ए बे आत्माश्रित होइ, ए भाव

१२० हिवै आठ वर्गणा ना पुद्गल मध्ये थोडा घणा किहा ते एकसो वीसमो प्रश्न — आठ वर्गणा माहि उदारिक वर्गणा माहि थोडा १, तेथी वैक्रिया माहि अनन्तगुणा २, तेथीं आहारक माहि घणा ३ तेथी तेजस माहि घणा ४, तेथी भाषा माहि घणा५ तेथी सासोसास (श्वासोच्छ्वास) माहि घणा ६, तेथी

नना पुद्गल घणा ७, तेथी कार्मणानि वर्गणाना पुद्गल
णा ८. इति भाव

१२१ हिवै २२ बावीस परिसह ते किहा कर्म
ऊपजै ते एकसो इकवीसमो प्रश्न — ज्ञानावरणी
१ २ बे, मोहनी ना ८ वेदनी ना ११, अंतरायनो
१, ए च्यार कर्म थी ऊपजै अत्र गाथा— (दसण
मोहे दसंण १ परिसहो पन्नाण २ पढमं मीचरिमे-
अलाभ परिसह सत्तेव ते चरित मोहनी १ अकोसे
अरई इच्छि ३ नि सीहीया ४ चेला ५ जायणा ६
चेवसकार पुरसक्कारोइकारस वेयणी जमि २ पंचेव आणु
पुव्वी ५ चरीया ६ सिज्ज, तहेव जलेय ८ वहं ९ रोग
१० तणु फासा ११ से से सुनथि वियारो १२
। इति)

१२२ हिवै उपसर्ग परिसह नो अर्थ विचारवो ते
एकसौ बावीसमो प्रश्नः— उपसर्ग ते आत्मा कर्म
जनित छै उप (कहता) समीपे, सर्ग (कहता)

सर्जन जे उपसर्ग, ते माटे तथा परिसह ते पर जनितछै
पर ना निमित्त थी कह्या ते सहवु—परि समतात्
सह्यते इति उपसर्ग परिसहनो अर्थ विचारवो

१२३ हिवे प्रमाण ४ च्यार आत्मा थी वीर किम
मानिये ते एकसौ तेवीसमो प्रश्न कहै छै — अथ
प्रमाण ४ च्यार अनयोग सूत्रे कह्या छै — अनुमान
प्रमाण १ उपमा प्रमाण २ आगम प्रमाण ३ प्रत्यक्ष
प्रमाण४ ते मध्ये आज श्रीवीर स्वामी प्रत्यक्ष प्रमाणे
किम मिले ? ते थापना निक्षेपा थी मिलै ते किम्
सम भाव शान्ति मुद्रा पर्यंकासन नो उत्पादे अने राग
द्वेष नो विनास एहवी असल नी नकल जिन प्रतिमा
ते देखीनें भाव थी वीर प्रत्यक्ष प्रमाणै मिलै जिन
प्रतिमा जिन सरीखी ते जिन प्रतिमा नी भक्ति जिन
भावे कीधाना फल श्रावक नें महानिशीथ सुत्र में कह्या
छै (अकसिणढो) इति वचनात् तिवारे जिन प्रतिमानी
भक्ति कीधी ते जिन नी कीधी इम कारण कार्योपचा
रात् इम जिन नी थापना थी आज प्रत्यक्ष प्रमाणे

श्रीवीरमिल्या कहाइ सदेहो नास्ति.

१२४ हिवै कर्म वर्गणा जीव लीए छै ते थोडी घणी क्रो नें आपै छै ते एकसो चोवीसमो प्रश्न — समै२ जीव कर्म वर्गणा नें ग्रहे छै ते आठे कर्म पणे वेहचीनें आपै. ते माहि कोई नें घणी वर्गणा आपै सर्व थी थोडु कर्म दल वर्गणा आयु कर्म नें आपै तेह थी नामगोत्र कर्म नें विशेषाधिक आपै. तेथी ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, तथा अतराय ३, ए कर्म नें विषै माहो मांहि विशेषाधिक आपै सरीखु,तेथी मोहनी नें कर्म वर्गणा दल अधिक आपै, तेथी वेदनी नें अधिक इम सर्व जोता तो वेदनी कर्म नें कर्म वर्गणा दल विशेष आपै इति भगवतीजी सूत्रे कह्यु छै. ए भाव

१२५.हिवै विग्रह गति केतला समय नो छे एकसो पचीसमो प्रश्न —भगवतीजी सूत्र मध्ये एकेंद्री नें पाच समय नो विग्रह गति ते त्रस नाडी बाहरै विदिसे रह्यो होय थावर जीव विदेसें त्रस नाडी बाहरै उपज-

वाला नें तथा उपशमवेदकवाला नें ए सात माहिज वेदै, एकै पण एक समै रहै, तेहना कालस्तोक माटै इहा गवेख्यू नथी ए भाव

१२९ हिवै समकित मोह नी प्रकृति को नें कहिये ते एकसौ उगणतीसमो प्रश्न — चयोपशम उपशमवाला नें सत्ताइ छै तेह नी सत्ताइ मूल छै तेथीकरी काला मोहनी वेदै छै कोईक जिन प्रणीत भाव सूक्ष्म पदार्थ मध्ये मुफाय शका करवा मोहनी साधू पण वेदै छै ते माटे भगवतीजी सूत्र मध्ये पण कह्यू छै ते निचारता समकित मोहनी प्रकृति तेहनें कहिये ए भाव

१३० हिवै उत्सर्ग अपवाद बेमार्ग कहिये छै तेहनो स्यों भावार्थ ते एकसौ तीसमो प्रश्न —तत्रोत्तर उत्सर्गतें व्यवहार मार्ग१ अपवाद ते निश्चय मार्ग२ यथा साधुनें पृथिवी कायादि षट्कायनी विराधि ना निषेधी छै,पण कदाचित कोई कारणे नदी उतरवी पडे तथा आहारादिक नें

अर्थे तथा गुरु देव वादवा अर्थे चालता विराधना थाइ, ते उत्सर्ग ते माटे अपवादै पचकखाण महा व्रत नो होइ अने आचरण काइक कारण पडे उत्सर्ग मार्ग होइ तथा वचनातरे कोईक ग्रथे उत्सर्ग ते निश्चय मार्ग कह्यो छै अपवाद ते कोमल मार्ग व्यवहार मार्ग कह्यो छे तेहनो स्वरूप आगु लिख्यो छै ए भाव, उत्सर्ग अपवाद मार्ग नी चर्चा घणी छै पण अत्र तो अल्प बुद्धि जेहवो जाणु तेहवो सचेप थी लिख्यो छै. इति

१३१ हिवे कोइके प्रश्न पुछ्यो जे दीवा प्रमुख ना प्रकाश पडे छै ते दीवा मध्ये अग्नि ना जीव छै तेहना पर्याय, तरयोत रूप ते पुद्गल ना पर्याय ते एकसौ इकतीसमो प्रश्न —तत्रोत्तर दीवा मध्ये जे अग्नि ना जीव छै ते माहेज प्रणमी रह्या छै पण दाहक रूप पर्याय छे ते बाहर निकलै नहीं, तथा दीवा ना प्रकाश रूप जे बाहिरै दीसै छै ते तो विश्रसा पुद्गल नी पर्याय छाया आकृति तेज द्युति इत्यादि बहू भेदें पुलद्ग

साभलता निद्रा नावे १० बुद्धिवन्त होइ ११. दातार गुण होइ १२ जे पाछे धर्म कथा साभले तेहना पछ वाडे घणा गुण होइ, घणा गुण बोले १३ निंदा कोई नी न करै तथा कोई सु ताण खैंच वाद विवाद न करै १४ ए चउदा बोल श्रोता जिन वचन ना सामलनार ना गुण जाणवा

हिंदु पुराण ना नाम कहे अठार १८ ब्रह्म पुराण १ पद्म पुराण २ विष्णु पुराण ३ शिव पुराण ४ भागवत पुराण ५ मार्कंडेय पुराण ६ आग्नेय पुराण ७ नारद पुराण ८ भविष्य पुराण ९ ब्रह्मवैवर्त्त पुराण १० लिंग पुराण ११ स्कंध पुराण १२ वराह पुराण १३ वामन पुराण १४ कूर्म पुराण १५ मच्छ पुराण १६ गरुड पुराण १७ ब्रह्मांड पुराण १८ एव अठार पुराण नाम

१३२ अथ वर्ण, गन्ध, रस अने फरस (स्पर्श) अने ए परमाणु पुद्गल ना गुण ए च्यार, शब्दे गुण किहा थी आव्यो ? शक्ति होइ ते व्यक्ति थाइ २

तो शक्ति शब्दै गुण नथी. तो शब्दै साभलिये छै कानै ते जीव नो गुण छै किम् पुद्गल नो गुण छै इति प्रश्न श्या ऊपर कह्यू छै ते एकसौ तेतीसमो प्रश्न —परमाणु मा बे फरस छै कर्म नी वर्गणा मा च्यार फरस छै शीत १ उष्ण २ लूखो ३ चोपड्यो ४ ए च्यार फरस छै शरीर मा आठ फरस छै ते ४ च्यार फरस बीजा किहा थी आव्या ? ते ऊपरि आठ फरस किहा थी नीपन्या ? ने किहा ? इहा बे सबध छै— समवाय सबध १ अने सयोग सबध २ समवाय सबध वस्तु गुण छै ते जाणवो देखवो षट द्रव्य पिण समवाय। ४। इति सयोग सबधे घणा मिलें उपचारे अपर गुण नीपजे कुण दृष्टाते ? खारो अने हलदरे जिम रत्तास थाइ तिम शब्द गुण नीपन्यो आत्मा पुद्गल योगे शब्द थयो तिम ४ च्यार समवाय सबध हता तिम अपर बीजा ४ च्यार सयोग सबधे नीपन्या ए आठ फरस कहिये

१३४ हिवै पर भव नु आयु किम बधे ते कसो चौतीसमो प्रश्न —योग १ कषाय २ ध्यान ३

क्षेत्र थी सिय सप्रदेशी (सिय) अप्रदेशी हिवै भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी भाव थी पण भजना भाव थी किम् भजना ? जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते क्षेत्र थी नियमा अप्रदेशी जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी एणी रीते लीज्यो ए भाव

हिवै जे द्रव्य थी सप्रदेशी छे, जे क्षेत्र थी सप्रदेशी,जे काल थी सप्रदेशी होइ नें अप्रदेशी पण छे जे भाव थी सप्रदेशी

हिवै अप्रदेशी छे ते क्षेत्र थी सप्रदेशी अप्रदेशी ते द्रव्य थी सप्रदेशी, नियमा ते द्रव्य थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी ते द्रव्य थी सप्रदेशी होइ नें अप्रदेशी पण छे

हिवै अप्रदेशी काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी -काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी ते क्षे

थी. पण सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी

हिवै भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी भाव थी पण भजना भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी ते काल थी पण सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी इति

१३६ हिवै षट्द्रव्य ना गुण पर्याय किम जाणिये ते एकसौ छत्तीसमो प्रश्न —अथ षट् द्रव्य नो निवरो द्रव्य गुण पर्याय लिखिये छै जीव द्रव्य १ पुद्गल द्रव्य २ धर्म द्रव्य ३ अधर्म द्रव्य ४ काल द्रव्य ५ आकाश द्रव्य ६

१ अथ जीव द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध जीव द्रव्य, एक अशुद्ध जीव द्रव्य शुद्ध जीव द्रव्य कोनें कहिये ? नोकर्म (देहादि), द्रव्य कर्म ८ आठ (ज्ञानावर्णादि भाव कर्म २ बे (रागद्वेष) रहित, सिद्ध सिद्धालये तिष्ठे तिहा शुद्ध द्रव्य जीव कहिये अशुद्ध द्रव्य किं ? जीव ना प्रदेश कर्मप्रमाणो माहि तिष्ठेयि परस्पर तिहा- अशुद्ध जीव द्रव्य कहिजे.

अथ जीव ना गुण ते श्यु ? एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण शुद्ध ते श्यु?शुद्ध गुण ते केवल ज्ञानादि अनंत गुण अथ अशुद्ध गुण ते स्यु ? मति, श्रुति, अवधि, मन, पर्यव, कुमति,कुश्रुति,कुअवधि,चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, एव १० दस अशुद्ध गुण

हिवै जीव ना पर्याय किम्?एक व्यजन पर्याय १, एक अर्थ पर्याय २ व्यजन पर्याय ना बे भेद—एक शुद्ध व्यजन १ बीजो अशुद्ध व्यजन पर्याय २ शुद्ध व्यजन पर्याय ते चर्म शरीर प्रमाण किंचित् उणो, सिद्ध सिद्धालये तिष्ठयि ते शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे,

हिवै अशुद्ध व्यजन पर्याय ते श्यू ? नर नारकादि ४ च्यार गति अशुद्ध व्यजन पर्याय ज्ञातव्य

हिवै जीव का अर्थ पर्याय बे२–एक शुद्ध अर्थ पर्याय १ एक अशुद्ध अर्थ पर्याय २ ते शुद्ध अर्थ पर्याय किम् ? जिहा षट् गुणी हानि वृद्धि आपर्णे गुण सेणी तिहा शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे अथ अशुद्ध अर्थ पर्याय किम् ? मति ज्ञानादि अवलोकना अव-

स्थिति एकान्तर नें अनन्तमें भाग पर्याय ते ज्ञान श्रानि रहै तिहा श्रशुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे जीव नो उत्पाद व्यय ध्रुव सयुक्त, एक गति नो उत्पाद,अन्य गति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत, ए जीव ना शुद्धा-शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय

२अथ पुद्गल महास्कन्ध अपेक्षया सर्वगत भिन्न२ परमाणु अपेक्षाय असवगद (असर्वगत)

अथ पुद्गल द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध पुद्गल द्रव्य १ एक अशुद्ध पुद्गल द्रव्य २ शुद्ध पुद्गल द्रव्य किम्? आकाशके प्रदेश शुद्ध अविभागी प्रमाण अछेद अभेद तिष्ठे तिहा शुद्ध पुद्गल द्रव्य हिवै अशुद्ध पुद्गल ते स्यु? जे द्विणुकादि स्कन्ध मिल्या ते अशुद्ध पुद्गल

अथ पुद्गलग ना द्रव्य ना गुण भेद एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण शुद्ध गुण किम्? अविभागी परमाणु वीस गुण सयुक्त तिष्ठे तिहा पुद्गल के शुद्ध गुण कहीजे अशुद्ध पुद्गल गुण किम्? विंशति आदि

परिणमै, आपणे गुण नी सु तिहा शुद्ध पर्याय कहीजे अधर्म द्रव्य असख्यात प्रदेशी लोक प्रमाण अखड आकृति तिहा शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे जिहा षट गुणी हानि वृद्धि करै तिहा शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे अधर्म द्रव्य के स्थिति नो उत्पाद, गति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत

५ अथ काल द्रव्य किं ? द्रव्य गुण वर्त्तना लत्तण, सर्व द्रव्याण पर्याय असख्यात अगु लोक प्रमाण शुद्ध पर्याय कहीजे वर्त्तमान समै नो व्यय, अनागत समय नो उत्पाद, ध्रुव द्रव्य शास्वत एक कालाणुनी द्रव्य आकृति तिहा शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे एव काल द्रव्य

६ अथ आकाश द्रव्य किं ? द्रव्य गुण अवकाश लत्तण पच द्रव्याणा पर्याय लोकालोक प्रमाण अनत प्रदेशी, घटाकाश उत्पाद, घटाकाश व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत, आकाश द्रव्य लोकालोक प्रमाण आकृति तें

शुद्ध व्यजन पर्याय कहीजे एव आकाश द्रव्य ६ इति षट् द्रव्य हानि वृद्धि समाप्तः

हिवै षट द्रव्य ना गुण पर्याय जाणवा ने गाथा कहै छै—(परिणाम जीव मुत्ता सपऐसाएग खित्त किरियाय निच कारण कत्ता, सवगद मियर पवेसा १)

१३७ परिणामीक कुण द्रव्य? जीव पुद्गल ए बे परिणामीक च्यार अपरिणामीक ते किहा? धर्म द्रव्य १ अधर्म द्रव्य २ काल द्रव्य ३ आकाश द्रव्य ४ एव च्यार अपरिणामीक

१३८ कौण द्रव्य जीव कौण द्रव्य अजीव? ४ च्यार प्राण नें करी जीव पूर्वेही जीवै छै सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य ये भी च्यार प्राण * करी सदा काले जीवै छै इति जीव, पंच द्रव्य अजीव पुद्गल द्रव्य १ धर्म द्रव्य २ अधर्म द्रव्य ३ काल द्रव्य ४ आकाश द्रव्य ५ २

---

* इन्द्री प्राण, बल प्राण, आयु प्राण, स्वासोस्वास प्राण, ये च्यार द्रव्य प्राणै करी जीवै छै, जीव्यो हतो, जीवशे अने भाव प्राण सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य करी जीवै छै, जीव्यो हतो, जीवशे.

१३९ कौण द्रव्य मूर्तिक कोण द्रव्य अमूर्तिक ? पुद्गल द्रव्य मूर्तिक, पच अमूर्तिक ३

१४० कोण द्रव्य सप्रदेशी कौण द्रव्य अप्रदेशी ? जीव द्रव्य१ पुद्गल द्रव्य२ धर्म द्रव्य३ अधर्म द्रव्य ४ आकाश द्रव्य ५ एव पाच सप्रदेशी काल द्रव्य अप्रदेशी ४

१४१ कोण द्रव्य एक कोण द्रव्य अनेक? धर्म१ अधर्म २ आकाश ३ एव तीन द्रव्य एक, जीव, पुद्गल, कालाणु, ए तीनों अनेक ५

१४२ कोण द्रव्य क्षेत्री कौण द्रव्य अक्षेत्री ? आकाश द्रव्य क्षेत्री, पच अक्षेत्री ६

१४३ कौण द्रव्य क्रियावत कौण द्रव्य अक्रियावत? जीव द्रव्य, पुद्गल द्रव्य ए बे क्रियावत ४ च्यार द्रव्य अक्रियावत, ७

१४४ कौण द्रव्य नित्य कौण द्रव्य अनित्य ? धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ नित्य जीव

पुद्गल ए बे अनित्य ८

१४५ कौण द्रव्य कारण कौण अकारण ? पाच द्रव्य कारण, जीव अकारण ९

१४६. कौण द्रव्य कर्त्ता कौण अकर्त्ता ? जीव कर्त्ता पच अकर्त्ता. १०

१४७ कौण द्रव्य सर्वगद कौण असर्वगद ? आकाश द्रव्य सर्वगद, पच असर्वगद ११

१४८, गाथा— (ईहरहीयपचेस यधपीए कत्ता मिलही तयपी आपणें गुण पर्याय तिष्ठत रहै) १२ एव द्वादशा अधिकार समास

सप्रदेशी पांच द्रव्य अप्रदेशी काल, सक्रिय पुद्गल मने जीव छे अने च्यार अक्रिय, एक सचित जीव द्रव्य अने५ पांच अजीव द्रव्य, काल विना५ पच अस्तिकाय, पाच द्रव्य लोक मध्ये अने आकाश द्रव्य लोक अलोक मध्ये छे. पुद्गल जीव ए २ बे गतिवंत बाकी ४ च्यार अगतिवत, पुद्गल जीव ना पर्याय पलटाइ, पण४ च्यार

द्रव्य ना पर्याय पलटाइ नहीं

१४९ हिवै वेदनी निर्जरानी चोभगी नो एकसौ गुणपचासमो प्रश्न —महा वेदनी अने अल्प निर्जरा नारकी नें १ अने महावेदनी महा निर्जरा साधु नें होय गज सुकमालवत परे २ अने अल्प वेदना अल्प निर्जरा देवताने अने माहा निर्जरा अल्प वेदना से लेशी कारक नें ये चौभगी जाणवी

१५० हिवै मिथ्यात्व नी चौभगी नो एकसौ पचासमो प्रश्न — अनादि अनन्त अभव्य नें मिथ्यात्व १ अने अनादि शात भव्य जीव नें मिथ्यात्व २ सादि सात समकित पामी फिरी पाछो मिथ्यात्व जाय नें फिरी समकित पामे तेनें ३ अने सादि अनन्त कोई नें नहीं ४ इति चौभगी मिथ्यात्व नी

१५१ हिवै सींहपणें लेइ नें सींहपणें पालै तेहनी चौभगी जाणवी ते एकसौ इकावनमो प्रश्न — सींह ता ईमिस्क तो सींहताए विहरई जयूहू

द्राय १ सींहताए नाम एगे निस्कते सीयालताए
हरइ. कच्छ महा कच्छ ककरि मरीच वत् अथ
यालताए निस्कतो सींहताए विहरइ मेतार्य भव देव
णीक यवकार सुवर्णकारवत ३ सीयालताए
नेस्कतो सीयलता निस्कताए सियालताए विहरइ.
गार मर्दकाचार्य उदाई मारक कुल वालू वत ४

१५२ हिवै अनुयोग चारनो एकसौ बावनमो
श्न — द्रव्यानुयोग १ धर्म कथानुयोग २ गणि-
ानुयोग ३ अचरानुयोग ४ इति अनुयोग चतुर्को

१५३ हिवै षट् दुर्लभवोधि स्थाना नो एकसौ
पनमो प्रश्न कहीजे छैः— ६ हिठाणें हि दुल्लभ
ोहि नाणकम पकरति अरिहताण अवन्न वयमाणे १
अरिहत पन्नस्स धम्मस्स अवन्न वयमाणे २ आरियाण
अवन्न वयमाणे ३. उवझायाण अवन्न वयमाणे ४
चाउवन्नस्स सघस्स अवन्न वयमाणे ५ स्मदीठी देवाण
अवन्न वयमाणे ६ इति षट् दुर्लभ वोधि स्थानानि

नियमा अयद्ध पुद्गल परियद्वो चेव ससारो १) पुद्गल
ना परावर्त्त पुद्गल परावर्त्त अप कृष्ट किंच न्यूनो
अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त अपार्थ पुद्गल परावर्त्त

अथ अंतर्मुहुर्त्त नो प्रमाण अंतर्मुहूर्त्त अष्ट समयोर्द्ध
घटी द्वय यावदित्यर्थ तच सम्यक्तोपशमिक, अत्र चेत्र
पुद्गल परावर्त्त नानाधिकार द्रव्यादिन पुद्गल परावर्त्त
इत्युपदेस घदल्या

१५७ अथ जाति समरणना केटला भव देखै
ते एकसौ सतपनमो प्रश्न —गाथा--पुव्व भवासो पिछ
ई एक दो तिन्नि जाव नव गवा । उवरि तस्स असि
ओ सभाव जाई सरणस्स ॥ १ ॥ चक्का १ असी
छत्र ३ दडा ४ आउदसालाइ हुति चत्तारी चम
मणी ६ कागणी ७ नही ८ सिरि गहे चक्किणोहुति ॥२
सेणानई ९ गाहावई १० पुरोहीतओ ११ वुथइ १
नियय नयरेथीर व्रण राय कुले वेयढे तले ग
तुरया १४ ॥ ३ ॥)

१५८. अथ धर्म पुण्य नो भेद ते एकसौ अठावनमों प्रश्नः—अथ केतलाइ जीव धर्म पुण्य नें एक मानै छै ते संदेह टालवा नें अर्थे धर्म पुण्य नो भेद लिखिये छै अण पुण्ये १ पाण पुण्ये २ लेहण पुण्ये ३ सयण पुण्ये ४ वथ पुण्ये ५ मन पुण्ये ६ वयण पुण्य ७ काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९ इति नव भेद पुण्य ना कह्या. १२ बार उपयोगमा २ बे अरूपी १० दस रूपी उपयोग, आत्म गुण माटे २ बे अरूपी छै पांच समकितना नाम छै ते मध्ये एक अरूपी च्यार रूपी आत्मा गुण माटे पाच भेद अरूपी छै सामायकादिक छ आवश्यक छै ते मध्ये सामायक १ चोवीसथो २ पडिकमण ए त्रण आवश्यक सवर तत्व मध्ये छै. बाकी ३ त्रण निर्जरा तत्व मध्ये छइ गाथा—सम्म-गउ नियमा एगमि भवमि सिज्झई अवस्य। विज-यादि विमाणे हिय सखिज्ज भवा ओ ना यव्वी ॥१॥ श्रावक जघन्य पदे केतला लाभे ? क्षेत्र पल्योपम नें असख्यातमें भागे. आवश्यक निर्युक्तो जबू द्वीप

मध्ये की टीकावघो अथवा नरा वहवा. तत्रोत्तर तद समुर्छछिसप्राण निरह तदा काटिका स्तोका नरा वहयो अथ श्रुत-सामायक नो लाभ थाइ तिवारे दीपक समकित होइ १ तत्र वीजो समकित सामायिक नो लाभ २ त्रीजो देसविरत सामायिक नो लाभ ३ चौथो सर्व विरति सामायिक नो लाभ ४ छठा गुण स्थान थी साधु त्रिण चोकडी नो क्षयोपशमथी ४ एन अभिप्राय यावत् यस्य पुरुपस्य अहारस्य द्वात्रिंशत्तमो भाग ते पुरुपापेचया केवल मान आश्रित्य (कुरिसय हूडीय कूठी शरीरना उ अडग मुहुर्नीय जावई देहरस ज ओ पुव्व रयण तवोसस) कुसिता कुटीर कुकुटी शरीरमित्यर्थः तस्या शरीर कुपाया कुकुटाद्या अगक मिगाड कमूखमुच्यते ॥ गर्भे प्रथम मुप स्योत्पादात्मुख मध्ये आयाति तावत्कुवलय मूढ त्रयमदा चाष्टो तथाऽयतनानि षट् अष्टो शाकादयश्चेति दृग् दोषा पचविंशति १

पाच षटीक शालाना नाम घरटी नी खटकशाला१

चूलानि पटकशाला २ पाणी हारी नी पटकशाला ३ सारवणीनि पट् कशाला४ उखलानि पट् कायाविराधनो ५ ए पाच स्थान के छ. काय विराधना इति

१५६. आत्मा नी किंचिदात्मता लिख्यते ते एकसो गुणसाठमो प्रश्न.—प्रथम आत्म स्वरूप वर्णयन्ते असंख्यात प्रदेशी १ अनन्त ज्ञानमयी २ अनन्त दर्शनमयी ३ अनन्त चारित्रमयी४ अनन्त दानमयी, अनन्त वीर्यमयी, अन्नत लाभमयी, अनन्त भोगमयी, अनन्त उपभोगमयी, अरूपी, अखंड, अगुरु लघू मइ, अचय, अजर, अमर, अशरीरी, अयेन्द्री, अनाहरी, अलेशी, अनुपाधी, अरागी, अद्वेषी, अकोही,अमानी, अमायी, अलोभी, अलेशी,मिथ्यात्व राहित, अविराति रहित, कषाय रहित, यौग रहित, अजोगी, सिद्धस्वरूप, संसार रहित, स्वआत्मसत्तावत, परसत्ता रहित, पर भावनो अकर्ता, स्वभाव नो कर्ता, परभावनो अभोक्ता, स्वभावनो भोक्ता, ज्ञायक

वेत्ता, स्वचेत्रावगाही, पर क्षेत्र पणै अनवगाही, लोकप्रमाण अवगाहनवत, धर्मास्तिकाय थी भिन्न, अधर्मास्तिकाय थी भिन्न, अकाशास्तिथि भिन्न, पुद्गल थी भिन्न, पर काल थी भिन्न, स्व द्रव्यवत, स्व क्षेत्रवत, स्वकालवत, स्वभाववत, अवस्थान पणै स्व गुण थी अभिन्न, कार्य भेदे भिन्न, स्वरूप सत्तावत, अवस्थित सत्तावत, परणमन सत्तावत, द्रव्यास्तिक पणें नित्य, पर्यायास्थिक पणै नित्यानित्य, द्रव्यपणें एक, गुण पर्यायपणै अनेक, अनता द्रव्यास्ति धर्म, अनता पर्यायास्ति धर्म, एहवी स्वसपदामयी चेतन लक्षणै लक्षित, स्वसपदाए पूर्ण छै पर सगै प्रणम्यो ससार कस्यो स्व ज्ञान दर्शन चारित्रे प्रणम्यो सिद्धता करै एहवा आत्म द्रव्य नी ओलखाण अनत नयें अनता निचैपै थाइ ए रीते जे आत्मा नी परतीत करे, एहवा परतीतवत नें जैनमार्गी मार्ग मां गणै छै एहवो आत्मा जैनमार्गे अनेकातमयी कह्यो छै ए रीतें परतीत ते सम्यक् दर्शन, ए रीते ज्ञान ते ज्ञान, ए

माहि रमवो ते चारित्र

अस्थित्व १ वस्तुत्व २ द्रव्यत्व ३-प्रमेयत्व ४ प्रदेशत्व ५ अगुरुलघुत्व ६ ए द्रव्यस्तिक ना सामान्य स्वभाव जाणवा

नित्य स्वभाव १ अनित्य स्वभाव २ एक स्वभाव ३ अनेक स्वभाव ४ सत्य स्वभाव ५ असत्य स्वभाव ६ वक्तव्य स्वभाव ७ अव्यक्तव्य स्वभाव ८ भेद स्वभाव ९ अभेद स्वभाव १० परम स्वभाव ११ ए विशेष स्वभाव नो नाम. स्वप्रदेश स्वभाव १ अप्रदेश स्वभाव २ चेतन स्वभाव ३ अचेतन स्वभाव ४ मूर्त्त स्वभाव ५ अमूर्त्त स्वभाव ६ कर्तृत्व स्वभाव ७ भोक्तृत्व स्वभाव ८ परिणामीक स्वभाव ९

धर्मास्तिकाय ना गुण च्यार मुख्य—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय ४.

अधर्मास्तिकाय ना गुण च्यार मुख्य—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ स्थिरसहाय ४.

सद्दहणा, परूपणा २ संवेग पक्षि नें, फरसणा नहीं ४

फरसणा बाल तपस्वी नें, सद्दहणा १ परूपणा २ नहीं ५

परूपणा १ असजती नें, सद्दहणा १ फरसणा २ नहीं ६

फरसणा १ परूपणा २ अभव्य नें विषे छै, पण स द्दहणा नहीं ७

असद्दहणा १ अपरूपणा २ अफरसणा ३ अनादी मिथ्यात्वी नें होइ ८ इती अष्ट भेद ना अर्थ आठमो भेद ते निगोदीया प्रमुख एकेंद्री प्रमुख नें होइ एभाव

१६२ हिवै प्रभु नें दानाधिकार नो एक सौ बासठमों प्रश्न – अथ तीर्थंकर ना दान नो अधिकार लिख्यइ दिन दिन प्रते एक कोडि अने आठ लाख सो नइया दीये सोनइयो ८ आठ रती नो नें कोइक ठायगा सोनइयो ८० असी रती नो पिण लिख्यो छै सो

निचारजो जाणजो तीर्थंकर जितरमो होई तितरमा तीर्थंकर ना पितानो नाम माड्यो होइ ते एक दिन ना सोनइया९०००नव हजार मण थाइ. एक गाडो मण चालीसनु एहवा गाडा २२५ दोसो पच्चीस थाइ आप आपणा वाराना गाडा जाणवा सवच्छरी दान ना सोनइया सर्व इद्र नें आदेसै यै श्रमण देवता ८ आठ समय माहे नीपजावी नें तीर्थंकरना भडार भरे ते दान देवाना ६ छ अतिशय जाणवा तीर्थंकरना हाथ नें विषे सौधर्मेंद्रस्थिती एतले दान देता थाके नहीं ईसानेंद्र सुवर्ण मय रत्न जडित लाकडी लेइ उभा रहै इद्र चौसठ वर्जि सामानिक देवता नें वर्जें तथा मनुष्य ना भाग्य माहि होय, जेहवी जेहनी प्राप्ति होइ, जे जेहवो पोसाइ ते तेहवो तीर्थंकर नां मन ईसानेंद्र करैं तथा तेहवो तेहना मुख माहि थी कढावै २ चमरेंद्र बलेंद्र तीर्थंकर नी मुठी माहिला सोनहिया अधिका आवै ते गेरवै, ओछा होय तो अमोरे, साहमानी प्राप्ति सारू ३

देवता भरत क्षेत्रना मनुष्य नें तेडी आवे ४ वाण व्यतर देवता ते मनुष्य नें पाछा मुकी आवै ५ ज्योतिकी देवता विद्याधर नें दान लेवा भणी जाण दीयें. एन तेणे प्रस्तावे तीर्थंकर नो पिता त्रण मोटी साला करावै एक सालाई भरत क्षेत्र ना मनुष्य नें अन्न पानादिक आपै वीजी सालाइ वस्त्र आपै त्रीजी सालाये आभरण आपै छ घडी पछी दान देवा माडे तिवारै पौणा दो पहर ताइ दीये इति दानाधिकार

१६३ साधु सिझाय करै छै शुभ योग व्रतादिक नी शुभ क्रिया करै छै, तथा शुद्धोपयोगै शुद्ध स्वभावे (अप्पाण भावेमाणे विहरई) इम आत्म ध्यान करै छै ते सर्व कर्म खपावानें अर्थे ते किहा कर्म खपावे ? खपाववाना तो त्रण्य कर्म छै उदे कर्म, अने बन्ध कर्म, उदीरणा कर्म तो उदय ना पेटा मध्ये गवेखिये तया कर्म ते मध्ये उदय कर्म शेणे खपावै छै ? तथा सत्ता कर्म शेणे सोधे छै इति बन्ध कर्म किम मिटै ? शुभ योगै पच महा व्रत सवर रूप क्रियाइ नवा बन्ध पामै

ते माटे, बन्ध कर्म निवारे, ते व्रतादिक शुभ क्रियाइ तथा पाच प्रकार नी सिझाइ उदय कर्म खपावे छै; निफल करै छै तथा शुद्धोपयोगे आत्मध्याने सत्ताई जे कर्म छै ते सोधे खपावे. इम मुनि आत्म गुणे निर्मल करी सिद्धि वरे छै ए भाव

१६४. तथा आश्रवा ते परिश्रवा, जे शुद्धोपयोगे आत्म परिणामे जो आश्रव ना कारण होइ ते सवर रूप थाइ ते श्री आचारागे सूत्रे चौथे अध्ययने द्वितीयोदेशके समकित ना अध्ययन मध्ये ए गाथा छे. तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये निर्लेप पदे श्रीगौतमे पूछयो छै जे, स्वामी पाच थावर ना जीव हमणा वर्त्तमाने समे जेतला छै ते निर्लेप थाशे गत्यातरे जाशे ते एकसौ चौसठमो प्रश्न—तिवारे श्रीवीरे कह्यू एक वनस्पति काय विना पाच काय ना जीव निर्लेप थाशे, पृथवी, अप, तेउ, वाउ, त्रस काय ना जीव सर्व स्थानातरे निर्लेप थाशे पण वनस्पती काय निगोद गोलक ना जीव निर्लेप नथी तत्र अधि

जेहीं न पतो त साइ परीणामो (उवयति षयन्निय पुणोरी तथैव तथैव) एणे न्याये वनस्पति कायना जीव निर्लेप न थाइ ए भाव

१६५ एक सौ पैसठमो प्रश्न — तथा बादर अपराय बारमा देवलोक सुधी कही छै तथा बादर तेउ काय त्रीछी अढी ध्विप सुधी कही छै, ऊची मेरु पर्वत नी चूलीका सुधी कही

१६६ एकसौ छासठमो प्रश्न — तथा सातमी छाठि नरगे कुभी मा उपजवु नथी तिहा आलिया छै, जिम नदी नें भेखडे बिल होई तिम तिहा आलिया छै तेतले सुला छै ते ऊपरि शरीर वृद्धि थाइ तिवारे पडे इम साभल्यो छै ए भाव

१६७ हिवै साधु ना १४ चउद उपगरण ते किहा ते एकसौ सणसठमो प्रश्न —

गाथा.

पत्त पत्ता बधो पाय ठवण चा पाय केसरिया ।

पडिलाइ रयत्ताणं गुछओ पाय निजोगो ॥ १ ॥
तिन्नेव पछागासय हरण चेव होई मुहपत्ती ।
एसो दुवालस विहोउवही जिणकप्पियाणतु ॥ २ ॥
ए एचेव दुवाल समत्तरेगा चोल पट्टोय एसो ।
चउदस रूवोउवही पुणथेर कप्पमि ॥ ३ ॥

अर्थ—पत्त कहता पात्र १ पत्ताबध ते झोली २ पायठवण ते कामली नो कटको ३ पाय केसरिया ते चरवलो ४ पडलाई ते भिद्या जाता ऊपरि कपडो राखै ५ रयत्ताण ते पात्रा बेठवानु लूगडु ६ गुछओ ते कवलमय खडा पात्र ऊपर दीजिये ७ ए सात तो पात्र ना उपगरण तथा ३ तीन कपडा राखै बे सूत्रमय एक उर्णिका तथा ओघो मुहपत्ती एव १२ बार जिनकल्पी नें होइ तथा एक मातु एक चोलपटो ए १४ चवदा उपगरण थिवरकल्पी नें होय

१६८. तथा युग प्रधान आचार्य जिहा विचरै तेहना लक्षण काव्य ते एक सौ अडसठमो प्रश्न —

एपादि वस्त्रेन पत्तति युका नराब्द भगोनच देश

धर्मांतराय कर्म नो क्षयोपशम थाय त्यारे एकाग्रता रूप ध्यान माहि सिद्धि वरे तथा सयमफल पामै थकै तथा ४ च्यार कर्म क्षायिक भावै प्रणमै केवल ज्ञान पामी सिद्धि वरे ए भाव

१७३ हिवे च्यार प्रकारनी बुद्धि नदी सूत्र मध्ये कही तेहना नाम ना शब्दार्थ लिखिये छै ते एक सौ तिरीयोत्तरमो प्रश्न — उपतीया १ विणीया २ कमीया ३ परिणामीया ४ ते मध्ये किहाइ दीठू साभल्यु होय नहीं पोता नी मति ज्ञानावरणी ना क्षयोपशम थकी स्वभावे २ उपजै ते उत्पातकी बुद्धी कहिये अभय कुमार नी परे १ विनय कीधा थकी जे बुद्धी उपजै नागार्जुनादिक नी परे ते विणीय थकी कहिये २ कमिया ते करसणादिक कीधा थाइ विज्ञान कलाइ ते उपजै, व्यापार नी परे, ते कम्मीया कहिये ३ तथा परिणामिया ते आवता काल नो विचार. करे, रोहा नि परे ४ तथा जिम अभय कुमारे आद्र कुमारे न जिन प्रतिमा मूकी तिणें धर्म पाम्यो इम च्यार बुद्धि

ो॰भावार्थ जाणवो इति बुद्धी च्यार४

१७४. एक सौ चुमोत्तरमो प्रश्नः— तथा जाती समरण ज्ञान ते मति ज्ञान नो भेद छै विभग ज्ञान जे देखै ते अवधि दर्शन ना पेटा माहि छै इति.

१७५ चन्द्रमा नी चाल नो एकसौ पिच्योत्तरमो प्रश्न.— मेष राशि नो सूर्य होई तिहा कन्या राशि ना सूर्य ताई चन्द्रमा नी चाल उत्तर दिस भणी, तथा तुल राशि थकी माडी मीन ताई चद्रमानी चाल दक्षिण दिशा भणी होइ इति

१७६ अथ मिथ्यात्व अविरत हेतु नो एकसौ छिहोतरमो प्रश्न — जेहवो आत्मा नो शुद्धोपयोग वस्तु आचरवानें जिम मिथ्यात्व बलवर्ते छै, तिम एहनी मगामन सुख निवारवानें अविरति बलवर्ते छै, जिहा आत्मा ना प्रणमन अविरत नो उदय अविरत रूप आत्मा प्रणमै तिहा एह नें आत्मिक एकाग्रता रूप सुख न पामै, ते सम्यक् दृष्टी नें अविरती हेतु मिटै

एहनी प्रणमन उपयोगै एकाग्रता रूप प्रणमै तिवारे एक सुख रूप सुखमई सपूर्ण धर्म पामै इति भाव

१७७ तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता नो एक सौ सित्योतरमो प्रश्न — तथा अनादि अशुद्धोपयोग रूपे विभावताइ राग द्वेष मोह रूप आत्मा प्रणमै ते भाव कर्म १ तिण आकर्पणे कर्म रूप वर्गणा बधाय ते द्रव्य कर्म२ ते वर्गणा जिवारे पाच शरीरे प्रणमै तेह नोकर्म कहियेइ इम तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता जाणनी इति भाव

१७८ हिवै एक सौ अठ्योतरमो प्रश्न —तथा सम्यक्दृष्टी जीव मिथ्यात्व नें उदये समकित वमीनें पाछो मिथ्यात्व गुण ठाणै जाय तोही पिण आयु वर्जि नें सात कर्म नी स्थिति पल्योपम नें असख्यातमें भागें उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो बन्ध करै उत्कृष्टो बन्ध एतलो करै देश विरती नें नव पल्योपम उणी एक कोडा कोडी सागरनो बंध उत्कृष्टो

करै, तथा मुनि पणो पामीनें पाछो पडै, मिथ्यात्वे जाय तो पण आयु वर्जिनें साते कर्म नी उत्कृष्टी स्थिति बाधै तो नव हजार सागरे उणी एक कोडाकोडी सागरोपम नो उत्कृष्टो बध करै, तथा उपशम श्रेणी थी पडीनें मिथ्यात्वे जाय ते पण आयु वर्जि ने सात कर्म नी उत्कृष्टी स्थिति बाधे तो नवहजार सागरो पम उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो उत्कृष्ट स्थिति बध करै इति भवन भानु केवली चरित्रे उक्तच तथा मार्गाभिमुखे जीव किवारे थाय ? जिवारे भव्यतानें उदै अकाम निर्जराइ कर्म खपावता बे पुद्गल परावर्त्त ससार रहै तिवारे प्रभुमार्ग सन्मुख आस्तिक पणे सन्मुखी भाव थाइ तिहा थी ससार भव भ्रमण करतो जीव ऊंचो आवै तिवारे जीव मार्ग पतित पणु डोढ परावर्त्त पुद्गल ससार रहै, तिवारे जिनोक्त मार्गे,रुचि रुपे बैठो वली कर्म नें उदै ते भाव थी पडयो ससार मध्ये परिभ्रमण करतो एक परावर्त्त ससार पुद्गल रहै तिवारे जीव मार्गानुसारी पणु पामै

तिहा मित्रादि दृष्टी प्रगटै न्यायसपन्न विभव इत्यादिक ३५ पात्रीश गुण प्रगटै तिहा आत्मा जिनोक्त मार्गे चाल्यो तिहा मिथ्यात्व मन्द रूप होय तथा एतला सुधी गुण पामी नें कोई जीव ससार माहे नदी पाषाणनी परे घचन घोलना करता अर्द्ध परावर्त्त पुद्गल ससार माठेरा रहै, तिवारे आर्य देश सज्ञी पचेन्द्री पणो गुरु उपदेशे तथा सहज स्वभावे कोई निमित्त पामीनें यथा प्रवर्त्त करणें करी आत्मवीर्य थकी अपूर्व करणें मिथ्यात्व राग द्वेषनी जे ग्रथी तथा उपशम ग्रथी भेद करतो जे मोहनी कर्म नी सात प्रकृति तेहनें उपशमावतो करतो जीव अनि वृत्ति करणे करी एक समय नो अन्तर करणे करी जीव उपसम समकित पामै तिवारे जीव मार्ग प्राप्त कहिये वस्तु धर्म समकित नें पाम्यो ए अधिकार योगबिंद ग्रथ में कह्यो छै

१७९ तथा साधुने जे त्रिण्य जोग छै ते त्रण्य रत्न त्रय गुणे प्रणम्या छै ते किम ? ते एक सौ उगणयासीमो प्रश्न —मनो योग ते सम्यक् दृष्टी दर्शन गुणै

दृढास्थिकतादिरूपें प्रणम्यो छे तथा वचन योग ते जिन वाणी माँहि ते ज्ञान गुणे प्रणम्यो छे तथा काय योगते चारित्र गुणे. "जयचरे जय चिठ्ठे जय माशे जय सुये इत्यादिक रूपे प्रणम्यो छे त्यारे जाव जीव तांइ सावद्य योग थी निवर्त्तिने मुनि संजम योगे प्रणमे छे इति.

१८०. तथा संसार माहे जीव केतली प्रकारना छे ते एकसो अशीमो प्रश्न— जीव ३ तीन प्रकार ना छे-भव्य १ अभव्य २ भव्याभव्य ३.

१८१ भव्यनु लक्षण कहे छे ते मध्ये भव्य जीव ३ तीन प्रकारना—एक निकट भव्य १ मध्य भव्य २ दुर भव्य ३ ते माहे निकट भव्य जीव होय ते कीणनीपरे सद्वा ते सौभाग्यवन्ती स्त्री यत् तिम निकट भव्य जीव होइ तत्काल स्त्री परणीने पट् मास माहे गर्भ रहे अने पुत्र नी प्राप्ति थाय, पुत्र रूप फल पामे केतला जीव ते भवसिद्धि वरे,ते निकट—

भव्य १ तिम केतलाइ जीव मध्यम भव्य छे जिम ते परणी स्त्री नें बे वरसे पण नजीक पुत्र फल पामे तेम जीव थोडा माहे भव सिद्धि वरे, मेघ कुमार नी परे २. केतलाइक जीव दुर भव्य छे ते जिम परणी स्त्री नें घणे बरसे पुत्र फल पामे तिम ते जीव गौशाला नी परे, केतलाइक तथा अनता पडवाइ नी परें घणे काले सिद्धि वरशे इम तीन प्रकार ना भव्य जीव जाणवा

१८२ हिवे अभव्य नु लक्षण कहे जिम वद्या स्त्री घणे काल लग भरतार नो योग मिले, उपाय अनेक करे, पण पुत्र न पामे तद्वत् अभव्य नु जीव व्यवहारे चारित्रनी क्रिया आदरी नवमा ग्रेवेक सुधी जाय पण सिद्धि फल न पामे

१८३ हिवे त्रिजो भव्या भव्य कीह्यो ते जीव ते द्रव्य लक्षणे दलवाडु भव्य पणों कर्म नी विशेष निवडताइ व्यवहार राशी मध्ये ऊचा नहीं आवे, धर्म पाम्या नी सामग्री न मिले अत्र गाथा—(सामग्रीय भावश्रो व्यव

हार राशि अप्प विसाओ । भव्वाचिते अणते जे सिद्ध सुह न पावति ॥ १ ॥ कुण दृष्टाते कुण नीपरें ? जिम कोइ बाल विधवा स्त्री नीपरें. तें स्त्री नें पुत्र थावा ने सक्ति रूप छै पण भरतार ना योग नें अभावे पुत्र फल न पामै तिम केतलाइक भव्य जीव छै पण सामग्री नें अभावे नहीं पामै एहवी गाथा पन्नवणा सूत्र नी टीका मध्येछै यत — (अथीअणता जीवा जेहेंन पत्तोत साइ परिणामे । सुज्जतिययती यतीय पूणोवि-तथेव तथेव ॥१॥) इति

१८४. हिवे अध्यात्मसार ग्रथे तीन प्रकारना जीव कह्या छै—भवाभिनदी ते मिथ्या दृष्टी १ बीजो पुद्गलानदी ते चौथा पांचमा गुण ठाणा वाला सम्यक् दृष्टी २ आत्मानदी ते मुनि ३ इति

, १८५ वली एहीज ग्रथे तीन प्रकारनों वैराग्य कह्यो छै ते एकसौ पिच्चासीमो प्रश्न —दुख गर्भित १ मोह गर्भित २ ज्ञान गर्भित ३ वैराग्य एहनो विस्तार

भव्य १ तिम केतलाइ जीव मध्यम भव्य,
परणी स्त्री नें बे बरसे पण नजीक पुत्र फ
जीव थोडा माहे भव सिद्धि वरे, मेघ कुमा
केतलाइक जीव दुर भव्य छै ते जिम पर
घणे बरसे पूत्र फल पामै तिम ते जीव गै
परे, केतलाइक तथा अनता पडवाइ नी परें
सिद्धि वरशे इम तीन प्रकारना भव्य जीव

१८२ हिवै अभव्य नु लक्षण कहै जि
स्त्री घणे काल लग भरतार नो योग मिलै,
अनेक करै, पण पुत्र न पामै तद्वत् अभव्य नु
व्यवहारे चारित्रनी क्रिया आदरी नवमा ग्रेवेक
जाय पण सिद्धि फल न पामै

१८३ हिवै त्रिजो भव्या भव्य कीधो ते जी
द्रव्य लक्षणे दलवाडु भव्यपणो कर्म नी विशेष निवड
व्यवहार राशी मध्ये ऊचा नहीं आवे, धर्म पा
सामग्री न मिलै अत्र गाथा—(सामग्रीय भाव

ार राशि अप्प विसाओ । भव्वाचिते अणते जे सिद्ध
हि न पावति ॥ १ ॥ कुण दृष्टाते कुण नीपरें ? जिम
ोइ बाल विधवा स्त्री नीपरें. तें स्त्री नें पुत्र थावा ने
क्ति रूप छे पण भरतार ना योग नें अभावे पुत्र
फल न पामै तिम केतलाइक भव्य जीव छे पण
सामग्री नें अभावे नहीं पामै एहवी गाथा पन्नवणा सूत्र
नी टीका मध्येछै यतः— (अथीअणता जीवा जेहेंन
पचोत साइ परिणामे । सुज्ञातियर्यंती यतीय प्णोवि-
तथेन तथेव ॥१॥) इति

१८४. हिवे अध्यात्मसार ग्रथे तीन प्रकारना जीव कह्या छै—भवाभिनदी ते मिथ्या दृष्टी १ बीजो पुद्गलानदी ते चौथा पाचमा गुण ठाणावाला सम्यक् दृष्टी २ आत्मानदी ते मुनि ३ इति

१८५ वली एहीज ग्रथे तीन प्रकारनों वैराग्य कह्यो छै ते एकसौ पिच्चासीमो प्रश्न —दुख गर्भित १ मोह गर्भित २ ज्ञान गर्भित ३ वैराग्य एहनो विस्तार

तिहा थी जोइयो ए भाव इति

१८६ ससारी प्राणी केतली प्रकारना ते एक सौ छियासीमो प्रश्न —ते ४ च्यार प्रकारना कह्या छे ते किहा ? एक सघन रात्रि सम १ एक अघन रात्रि सम २ एक सघन दिन सम ३ चौथो अघन दिन सम ४ हिवै सघन रात्रि समान ते भवाभिनदी ते जीव मिथ्यात्वी, मिथ्यात्व गुण ठाणा वर्ती जीव जाणवा जे माहि काई उजवालु नहीं १ तथा बीजा मार्गाभिमुखी, मार्गानुसारी जीव अघन रात्रि समान जीव जाणवा २ त्रीजो जीव सघन दिन समान ते समकित दृष्टि थी माडिने बारमा सुधि ते जीव सघन दिन समान ३ चौथो अघन दिन समान ते केवली भगवान ४ ए च्यार प्रकार ना जीव जाणवा

१८७ तथा ससारी जीव नें आठ दृष्टी कही तेहना नाम ते एक सौ सत्यासीमो प्रश्न — मित्रा १ तारा २ बला ३ दीप्ता ४ थिरा ५ कान्ता ६ प्रभा ७

परा ८ ए आठ दृष्टि नो विस्तार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथ थकी जाणवो इति

१८८ तथा सर्व वस्तु पदार्थ मात्र माहि च्यार कारण छे ते किहा ? ते एक सौ अठ्यासीमो प्रश्नः— एक उपादान कारण १ निमित्त कारण २ असाधारण कारण ३ उपेक्षा कारण ४ ए च्यार ना अर्थ—उपादान ते स्युं कहीइ ? जिम दृष्टाते उपादान कारण ते मृतिका जे माहि घट उपजवानी शक्ति तेहनो नाम उपादान १ तथा निमित्त कारण घटोत्पतो चक्र चीवर इत्यादि जिणे करी घट नीपजै २ असाधारण कारण ते कुंभ कार जे घट निपजावे ३ अने उपेक्षा कारण ते स्यु कहिये ? वस्तु जिम छै तिम नी तिम रहै पण तेहनी सहायै आपणु कार्य करीइ जिम घट नीपन्यो तेम नो तेम रहैं पण तेहनी साहाजे जल भरण पान रूप काम नीपजै तथा जिम सूर्य दीपे छै तेनी साहाजे आपणा कार्य करीये ते अपेक्षा कारण ४ ते मध्ये उपादान कारण धुर थी मांडी छेहडा पर्यंत रहै असाधारण

कारण पणँ इमज इम च्यारे कारण जाणवा

१८९ वली तीन कारण बीजा कह्या छै समवाय कारण ते घटनुं उपादान मृत्तिका जाणवो १ असमवाय कारण ते कुंभकार २ तथा निमित्त कारण ते चक्र चीवरादि इम घटप्रते ३ तीन कारण जोड लीजे

१९० तथा सर्व वस्तु द्रव्यार्थ पर्यायार्थ ए बे नय लीधे छै ते माहि थी सात नय ते किहा ? संग्रह नय १ व्यवहार नय २ नैगम नय ३ ऋजु सूत्र नय ४ शब्द नय ५ समभिरूढ नय ६ एवभूत नय ७ ए सात नय तेहना उपनय ए विस्तार नय चक्र ग्रन्थ थी जाणवो इति

१९१ तथा कषाय उपने पूर्व कोडनो पाल्यो चारित्र चय करै ते ऊपर गाथा आचारागनी दीपका मध्ये यत—सामण मणु चरतस्स कसायाजस्स उक्कडा हुति। ममन्ना मियत्त पुफच निष्फल तस्स सापण ॥ १ ॥ ज अजिय चरित देसुणा एवि पुर्व कोडि। एतापे कपाय

मित्तो हारेई नरो मुहुत्तेण ॥ २ ॥ इत्यर्थ

१९२.तथा आंबिल शब्द नो अर्थ आवश्यक टीका मध्ये कह्यु छै आय कहता जे .(ओसामण काढुओ होई) ते मध्ये थी जिम अन्न काढे ते रीते काढिये ते आहार करवो. अने जे आम्ल ज़े खाटो रस (षट् विगय) ए वेइनें वर्जे ते आंबिल कहिये इति अर्थ.

१९३. तथा नियाणकमा तेह नें व्रत नआवे उदय जे इम कह छे तत्रोत्तर. तेमध्येनियाणा नव प्रकारे दसाश्रुत स्कध मध्ये कह्याछे तथा जे नियाणु समकित नु छे, अव्रत नु छै ए बे मध्ये जे समकित नो घात कारी नियाणो बांधे ते समकित पामवो दुर्लभ करे तथा अविरति नु भोग प्रतियु नियाणो बाधइ ते भोग पूरा थए व्रत उदे आवै जेम द्रोपदीनें जीवे पुर्व भवे भोग प्रतियु नियाणो बाध्यु हतुं, ने पांच भर्त्तारी थई भोग पूरा थया पछी व्रत उदय आव्यू. ते माटे एह नें अविरतिआसरि नियाणो कहिये, पण समकित नो नथी इत्यर्थ

१९४ तथा सामायक च्यार प्रकारना कह्या— श्रुत सामायक १ समकित सामायक २ देश विरति सामायक ३ सर्व विरति सामायक ४ ते मध्ये श्रुत सामायक नो लाभ ते भव्य मिथ्यात्वी नें होइ अभव्य नें पण द्रव्य थी श्रुत नो लाभ थाइ १ तथा समकित सामायक ते सम्यक्दृष्टी नें होइ २ पाचमे गुण ठाणे देश विरति सामायक नो लाभ होइ ३ सर्व विरति सामायक ते छठे गुण ठाणा थी मुनि नें होइ ४ एतला मध्ये मुख्य समकित सामायक ते सार रूप छै तेहनो स्वरूप कहिये छै जिनवाणी प्रतीते ग्रहीनें प्रत्यक्ष स्वरूप नें वेदे, गुण पर्याय नो निलक्षन करे, भेद रूप रत्न त्रय नें आराधे, ते व्यवहार समकित कहिये. तथा गुण पर्याय अभेद रूप रत्न त्रयें द्रव्य द्रव्य रूपें निर्विकल्प समाधि पणें प्रणमे तेहनें निश्चय समकित कहिये ते आगले व्यवहारे वस्तु, समकित नें मेलवै इति

१९५ ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्ष. तत् कथं ? द्रव्य

ज्ञान ते शास्त्रादि पठन रूप भाव ज्ञान ते आत्मस्वरूप नो जाणवो

१९६. तेम क्रिया बे प्रकारनी—योग क्रिया ते शुभाशुभ बंध रूप उपयोग क्रिया ते पोतानें स्वरूपे प्रणमैं ने निर्जरा रूप जोग क्रिया ते जाते आश्रव रूप छे बंध नें आपे अने एहनो जे उपयोग छै ते स्वरूप निर्जरा करें एतलें कर्म ग्रहण त्याग रूप सालटो पालटो छै, पण सर्वथा मोक्ष क्रिया मध्ये नथी सर्वथा मोक्ष ते उपयोगे छे. ते माटे जे क्रिया करे ते आश्रव रूप, माटै मोक्ष नी कतरणी कही छै,पण मोक्ष ते एह नां उपयोग माहे छै इत्यर्थ.

१९७. अथ चोथा कर्म ग्रंथ मध्ये तथा अनुयोग द्वार सूत्र मध्ये नव अनंता कह्या छे, ते मध्ये पाहिलो, बीजो, त्रीजो, ए तीन अनंता ना नाम ए माहि तो कोई एहवी अनंती वस्तु लघु नथी जे आवे, ते माटे ए तीन अनंता सून्य, एहना स्वामी कोई नहीं तथा

चौथे अनते अभव्य जीव आव्या ते माटे चौथा भागा ना ए स्वामी पाचमें अनते भव्य भागे सम्यक्त पडवाई जीव कह्या वली तेहीज पाचमें अनते सिद्ध कह्या पण पडवाइ थी अनत गुणे अधिका पण ए सर्व पाचमा अनता ना स्वामी तिवार पछी छठे अनते कोई नहीं सातमै अनते पण कोई नहीं एवं अनता थी ससारी जीव पुद्गल परमाणुआ नो काल सर्व आकाश प्रदेश घणा अनता, ते माटे वे अनता नो स्वामी कोई नहीं शून्य भागा जाणवा तिवार पछी ए सर्व आठमे अनते जाणवा ते माही विशेष सर्व निगोदिया वनस्पति कायना जीव आठमै अनते तेथी अनतानत गुणी अधिका पुद्गल परमाणु, ते थी काल, ते थी सर्व आकाश प्रदेश, ते थी केवल ज्ञान दर्शन ना पर्याय, इम एकेक थी अनन्ता गुणीये पण सर्व आठमा अनन्ता ना स्वामी एतले भागे, वस्तु नवमो अनन्त पूरो थयो नहीं ते माटे ए नवअनता माहे तीन अनन्त ना स्वामी कह्या ए गाथा माहि

दडक मुत्र ९८ अल्पा बहुत्व नो द्वार छै तेहनी गाथा ११ मी मध्ये ए तनि स्वामी कह्या इति भावार्थ

१९८ तथा सिद्धान्त आगम माहि प्रथम क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं ते श्री जिन भद्र गणी क्षमा श्रमण नी कीधी सम्यक्त पचवीसी मध्ये पहिलो क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं. तथा कर्म ग्रन्थ मध्ये पहलो उपशम समकित पामै एहवो तन्त छै त्यार पछी क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं, एहवो आचार्य नो मत छै अथ त्यार पछी काल सीतरी ग्रन्थ मध्ये कालीकाचार्य तीन जुदा कह्या छै. तथा कलकी थाशै ए अधिकार पण कालसितरी ग्रथ मध्ये छइ इत्यर्थ

१९९ अपरं तत्वार्थ मध्ये इम कह्यु छै पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति प्रत्येक एतले स्थानकै एकेकी पर्याप्ता निश्रायें असख्याता अपर्याप्ता होइ, पण सूक्ष्म निगोदिया पर्याप्ता नी निश्राइ अनन्ता अपर्याप्ता

न होइ ते अनन्ता अपर्याप्ता शरीर जुदा, तेहनो पण आयू २५६ दोसो छपन आवली नो होइ पण अपर्याप्तो मरे इम न होइ, सर्वे चुल्लक भविया छे ते माटे तथा पर्याप्ता नु आयू एतलो, पणै तेतला माहे प्राणी पूरी करीनें मरे एहवो धारयो छे तत्व इति

२०० व्यवहार राशियो जीव फरी सूक्ष्म निगोद माहे जाइ तो उत्कृष्टो अढी परावर्त्त पुद्गल ताइ रहै ते क्षेत्रपरावर्त्ति जीजिये पण सूक्ष्म ने बादर बे माहि थई नें तथा ते वली प्रथ्वी काय माहे आवी, वली सूक्ष्म निगोद माहे जाय तो वली बीजा अढी पुद्गल परावर्त्त रहै उत्कृष्टे वली ऊचो आवी पृथ्वी पाणी माहीं आवी वली सूक्ष्म निगोद मा जाय तो तिम जे उत्कृष्टो काल निगोद मध्ये इम तिर्यंच नी गति बाध्या थी जाइ आवै तो उत्कृष्टे असख्याता पुद्गल परावर्च रहै ते असख्याता केतले मानें—आवलीनें असख्यात में भागै जेतला समै असख्याता थाइ तेतला मानै, असख्यात पुद्गल परावर्चे क्षेत्र थी जाणवा.

इम पन्नवणा मध्ये तथा कायस्थि स्तोत्र नी टीका मध्ये कह्यू छै- इति पूर्ण

२०१ तथा दर्शन नी क्षपक श्रेणी ते चौथा थी माडी, चारित्र नी क्षपक श्रेणी आठमी थी माडे

२०२ कर्म नो बध जघन्य थी एक समै नो, जघन्य स्थिति तें अत मुहूर्त ताइ भोगवै उत्कृष्टे ज्ञानावरणी कर्म नी त्रीस कोडा कोडी इम ए रीते.

२०३ तथा भव्य अभव्य सर्व जीव सूक्ष्म निगोद थी निकल्या छै, मूल भुमिका ते जाणवी

२०४ तथा मनोयोग तो जघन्य थी एक समय नो उत्कृष्टो अतरमुहुर्त नो काल इम वचन योग नो पण काल ए रीते छै इम धारयु छु इति

२०५ पट् गुणी हानि वृद्धि द्रव्यनें छै तेहनो स्वरूप यथा श्रुत लिखिये छै द्रव्य नू लक्षण स्यु? ते द्रवाइ ते सेणे? गुण पर्याय करी द्रवाइ ते द्रव्य कहिंये तथा द्रव्य ते उत्पादादि, व्यय, ध्रुव ताइ सहित छै. ते द्रव्य

परिणामी छे ते प्रणमन उत्पाद, व्यय रूप छे, ते
जिवारे द्रव्य थी प्रणमन रूप पर्याय छे ते जघन्य,
मध्यम, उत्कृष्ट स्वरूपे छे तिहां पट् गुणी हानि वृद्धि
नीपजै ते केम ? सख्यात गुणी वृद्धि, इम असख्यात
गुणी वृद्धि, अनत गुणी वृद्धि इम अनत भागे
हानि, असख्यात भाग हानि, सख्यात भाग हानी
हिवै असख्यात भागे सख्यात, ते व्यय रूप प्रणमन
नो स्वरूप इम उत्पाद व्यय रूपें सिद्धि नें निपे पण
इम द्रव्ये द्रव्यत्व प्रणामी प्रणमन आसरी पट् गुणी
हानि वृद्धि सभवीए छे पछें तो श्रीवीतराग देवें जे
कह्यु ते सत्य इति

२०६ बध ना च्यार प्रकार छे तेहना स्वामी थे,कषा
वसें तिवारे जीव प्रणमै जिवारे स्थितिबध अने र
बध करें, अने केवल योग प्रणमनें आत्मा प्रण
तिवारे प्रदेशबध अने प्रकृतिबध ए बे होय

२०७-हिवै केवली भगवत जे साता वेदनी यो

बांधै छै ते किम ? तेहनें काई शुभ सकल्प रूप व्यापार नथी जे केवली भगवत नें एक शुकल लेश्या नो उदै छै ते जोग द्वारे प्रणमै अने योग नी प्रणमन ते उदये उदयैक भावे जाइ प्रणमै, पुद्गल नें पुद्गल नो विश्राम तिवारे ते लेश्यायें एक समे एक साता वेदनी नो बंध थाय छै पण उत्तम पुद्गल ग्रहै, बीजे समै वेदै, त्रीजे समै निर्जरै ए रीते धारू छू इति

२०७ हिवै चौथे गुण स्थानै सम्यक् दर्शन पामै अनतानुबंधीया राग द्वेष तथा मिथ्यात्व मोहनो क्षय तथा क्षयोपशम थाए ३

२०८ अवगुण उदै माहि थी तथा सता माहि थी जाइ ते किहा गुणे खार, बैर, नें जहर जाय ? सम्यक् दर्शन गुणे खार जाइ, सम्यक् ज्ञान गुणे बैर जाय, मिथ्यात्व मोह गए तथा चारित्र मोह गए जहर जाय तथा छठै गुण स्थानै मुनि नें उदय माहि थी विषय माहि थी विषय, कषाय, उत्सूत्र, परूपणा, ए तीन अवगुण जाइ तथा केवली नें राग, द्वेष, मोह गए

छे - पहिलो कर्णेंद्री ना भेद १२बार ते किम होइ? सचित शब्द रूडा, मयूर, कोकिला प्रमुख ते१ अचित शब्द मृदग, तान्त प्रमुख २ मिश्र शब्द पुरुष तथा स्त्री ते माहि वस्त्रादिक वाश्रे भेरी प्रमुख ते३ ते शुभ अशुभ भेद छ ते छ भेद रागै अने द्वेषै एव १२ भेद श्रोतेंद्री ना विषयविकार जाणवा ४

२ हिवै चक्षु इंद्री तेहना ६० साठ विकार जाणवा ते किम ? वर्ण पाच ते बिहु प्रकारै शुभ अशुभ, शुभ ते रत्नादिक, अशुभ वर्ण कैशादि एम १० दस भेद ए सचित रत्नादि अने अचित गुली प्रमुख मिश्र स्त्री पुरुष प्रमुख भेदें त्रिगुण करता ३०तीस भेद थाइ तें रागै अने द्वेषै इम बमणा करता ६० साठ थाइ४

३ घ्राणेंद्री तेहना१२ बार भेद गन्ध बेहु प्रकारे—सुरभिगन्ध,दुरभिगन्ध, सचित पुष्पादि शुभ अशुभ लक्षणादि अचित कस्तूरी प्रमुख, शुभ, अचित विष्टादिक प्रमुख अशुभ, मिश्र पदमनी स्त्री

प्रमुख, अशुभ सखणी स्त्री प्रमुख इमद छः भेद ते राग अने द्वेषै करी १२ बार भेद थाइ

४ जिव्हा इद्री ना७२ बौहतर भेद इम जाणवा रस ६ ते शुभ अने अशुभ करता१२ बार भेद नें ते सचित, आचित, मिश्र करता ३६ छत्तीस भेद थाइ ते रागै नें द्वेषै करता ७२ भेद थाइ

५. स्पर्शन इद्रीना ९६ छन्नु भेद ते किम ? स्पर्श आठ—हलुवो स्पर्श अर्क तुल्य १ गुरु स्पर्श वज्रादिक २ मृदु स्पर्श हस रूप स्पर्श प्रमुख ३ खर स्पर्श करवत धारा गोजिव्हा प्रमुख४, शीत स्पर्श हेम प्रमुख ५, उष्ण स्पर्श अग्नि प्रमुख ६, स्निग्ध स्पर्श घृतादि७, लूखो स्पर्श रादादि ८ तेहना तीन प्रकार साचित, अचित, मिश्र सचित पुष्पादि, अचित माखण प्रमुख, मिश्र स्त्री पुरुष इम आठ ने त्रीगुणा करता२४ चौबीस भेद ते रूडा नें पाडुवा करता ४८ अडतालीस थाइ ते रागै अनें द्वेषे करता९६छनु भेद सर्व

सख्या २५२ भेद जाणवा इम श्रोत्रेंद्रीना १२ विकार, चक्षु इद्रीना ६०, नासिकाना १२, जिव्हा ना ७२, स्पर्श इद्रीना ९६, इम सर्व मिली २५२ एतलें पाचेंद्रीना विषय २३, अने विकार ते २५२ भेदे जाणवा इति विषय विकार सपूर्ण

२२० शब्दादि इद्री नो विषय कहै छे भाष्य कताह—(बार सहितो सुतरसेसाण नव हीं जोइऐ हिंतो। गिणत्तो चत्तमथ ए तो परतो नगिराति ॥१॥) चक्षु नो एक लाख योजन विषय कह्यो छै तथ रानना बार जोयण इत्यादिक कह्यु छै जोयण आत्मागुल प्रमाणे च्यार गाऊ नो जाणवो तथा सूर्य नो बिब तो आत्मागुल प्रमाणे घणा लाख योयण थाई ते माटे एतलो चक्षु नो विषय नथी तो सुर्य नो बिब किम देखै छै? ततोत्तर——सूर्य नो विमान तो देवकाय एक योजण ना एक सठी या अडतालिस भागनो छै तेहना आपणा गाऊ १३०० तेरासो

। आसरे मोटो विमान छै ते सम्पूर्ण ते वडो मानवी
। दृष्टे नथी आवतु, पण तेह ना विमान ना तलिया नो
ज नो आभास मान झलक काति दीसै छै पण
पूर्ण विमान जेवडो छै तेहवो दृष्टे न आवे, ते माटै
आत्मागुल प्रमाण नौ लाख योयन विषय कहिये
म शब्द नो विषय पिणरुडो गाज्ये, तेहनें श्रोतेंद्री
नो भलो क्षयोपशम होय ते साभले, इम नव योजन
आव्या वायु नें योगै खाटा खारा पुद्गल नु जिव्हा ईंद्री
ये ग्रहण थाई इम नासिकाये वायु योगे आव्या
नव जोयण सुरभी दुरभी जे ग्रहण थाई इम स्पर्श
ईन्द्रीये नव जोजन ना वायू योगे आग्रहण
थाइ पण ते सर्व जोयण आत्मागुल प्रमाण
गाऊ ४ जाणवा तत्र गाथा— (पुठ सुणेइ सद्द
रूठ पुण पासई। अपुधतु गध रसच वध फास पुठं
वियागरेति ॥) तथा चक्षु इंद्री नो आकार मसूरनी
दाल जेवडो वडो, श्रोतेंद्री नो आकार आगछीया वृक्ष
ना फूल जेहवो, तथा नासिका नो आकार तिलना फल

सारीखो, तथा रसेंद्री नो आकार छरपलो तथा कमल
ना पत्र सरीखो, फरसेंद्री नो आकार अनेक प्रकारे छै
इम साधु ने पचेंद्रीय ते आकार रूपै छै पण विका
रूप नथी ते माटे पचेंद्री ना विषय विकार दमै ते
मुनीनें पण वीतराग रूप कहिये इति

२२१ पुनरपि पचेंद्री ना द्रव्य भाव रूपै कहिये
छै श्रोतेंद्री बेहु प्रकारे-द्रव्य अनें भाव तिहा द्रव्य इद्री
बेहु प्रकारे—सूक्ष्म नें बादर बादर ते बाहिरे दीसै
सूक्ष्म ते कर्ण माहि विषय ग्रहण व्यापारें, जघन्य थी
अगुलनो असख्यातमो भाग, उत्कृष्टे १२ जोयण नो
विषय इम सर्व इद्री नें विषय जघन्य थी अगुल नो
असख्यातमो उत्कृष्टो विषय जिम पुर्वे कह्यु छै
तिम जाणजो

२२२ हिवै भावेंद्री ते जीवनें दर्शनावरणी कर्म
क्षयोपसमै शब्द रूप रस गन्ध स्पर्श लेवानी शक्ति उपजै
ते उपयोगे भावेंद्री कहिये अने आकारे द्रव्य इद्री

कहिये इति पन्नवणा सूत्र मध्येंइद्रीपद मध्ये छे तिहा थी विस्तार जाणवो. इति

२२३ तथा सिद्ध थयानो पण विचार श्रीपन्नवणा सूत्र मध्ये कह्यू छे मनुपथकी सीझे तेहने आठ इद्री, नारकी थकी मनुष्य थइ सीझे तेहनें १६ सोलें द्री, तिर्यंच थकी तथा पृथ्वी थकी मनुष्य थइ सीझे तेहनें १७इद्री, तथा देवता थकी पृथिवी थकी मनुष्य थई सीझे तेहनें १७ इद्री पृथिवी पाणी वनस्पति माहि थी मनुष्य थइ सीझे तो९ इद्री इम सर्व विचार पन्नवणा मध्ये कह्यो छे. पण एहनो अर्थ आमनाय गुरु गीतार्थ पासे ते लियो इति

२२४ अथ आत्मागुल१उछेदागुल२प्रमाणागुल३ ए तीन नो मान गाथा थकी जाणवो (उसेहगुल मेग हवइ-पमाण गुल सहस गुण। तचेव दुगणीय खलु विरसायगुल भणीय ॥ १ ॥ आयगुले केण वथू उसेह पमाणतु मिण सुदेह। नग पुढवी विमाणाई मिण सुपमाण गुले-

णतु ॥ २ ॥) इति श्राव० निर्युक्तौ उक्त इति

२२५ तथा मति ज्ञान ना२बे भेद,—श्रुत निश्रित १ अश्रुत निश्रित२ ते मध्ये श्रुत निश्रित ना४च्यार भेद-उग्रह १ इहा२ अवाय ३ धारणाय ४ उग्रह ना २ बे भेद—व्यंजना अवग्रह १ अर्थावग्रह २ व्यंजना वग्रह ना ४ भेद—परसें १ रसें २ घ्राणें ३ श्रोत्रें ४ अर्थावग्रह ना ६ भेद—पाचें इद्री अने छठो मन इम छचोक चोवीस अने व्यजनावग्रह ना४, इम इहा अवाय धारण करता एव २८ इम एकेक ना १२ भेद थाइ बहु१ अबहु२ बहु विध३ अबहु विधादिक १२ भेद, तिहा अनेक जीव वाजित्र शब्द ना शब्द साभलैछै, ते मध्ये क्षयोपसमिक विचित्रताई करी कोई जीव घणा शब्द ग्रहै ते बहु १. कोइक थोडा ग्रहै ते अबहु२ कोई एक शब्द ना तार माडे इत्यादिक घणा विशेष जाणै ते बहु विध३ कोईक थोडा विशेष जाणै ते अबहु विध४ कोईक तुरत ग्रहे ते क्षिप्र ५. कोईक ससते ग्रहै ते चिर कहियें६ कोईक घु मादिक

िंगे करी आगादिक जाणे तेसलिंग७ तथा ते लिंग वेना जाणे ते अलिंग ८ सदेहालो जाणे ते ादिग्ध कहिये ९ सदेह रहित ते असदिग्ध १० कोईक वेला कह्यु ते बीजी वेला अण कहे जाणे ते ध्रुव ११ कोईक वारवार जणावे ते अध्रुव १२ इम अवग्रहादिक २८ भेद ते १२ वार गुणा करता ३३६ भेद थाइ एतला श्रुत निश्रित ना भेद तथा अश्रुत निश्रित ना ४ भेद—उत्पातकी बुद्धी१ विनयकी बुद्धि २ कम्मीया ते कार्मण बुद्धि ३ परिणामीया परिणामिक बुद्धि ४ एव च्यार इम श्रुत निश्रित अश्रूत निश्रित सर्व मिली मति ज्ञान ना३४० भेद कर्म ग्रन्थ नि टीका मध्ये कह्या छै इत्यर्थ.

२२६ तथा पन्नवणासूत्र ना छट्ठा वकति पद मध्ये कह्यु छै जे योतिपी देवता माहि समुर्छिम मनुष्य असनीयो तथा तिर्यंच असनीयो समुर्छिम असंख्याता वर्श ना आयुषा ना युगलिया पखी तथा अतरद्वीप ना युगलिया मनुष्य एतला माहे थी आव्यो ते योतिपी

देवता पण न उपजै इत्यर्थ

२२७ हिवै पाच लब्धि नो भावार्थ लिखिये छै प्रथम काल लब्धि १ इद्री लब्धि २ उपदेश लब्धि ३ उपशम लब्धि ४ प्रयोगता लब्धि ५ ए पाच लब्धि पामै तिवारे जीव आत्मबोध समकित धर्म पामै ते मध्ये ३ तीन लब्धि पहली पाम्या पछी छेहली एकठी एक समै प्रगटै ते मध्ये काल लब्धि ते यथाप्रवृत्ति करण थये आवै सात कर्म नी थिति सात कोडा कोडि सागर नी थिते आणै, एतले ज्ञानावर्णी कर्म नी थिति ३० कोडा कोडी उत्कृष्टे हती ते अकाम निर्जराई ओछी करै तो २९ कोडाकोडी घटाडी नवि अणबध तो एक कोडा कोडि माहि आणी मूकै इम ७ सात कर्म नी जेह नी जे स्थिति उत्कृष्टी छै * ते माहि थी सर्व घटावै तो एक

* ज्ञाना वर्णि १ दर्शना वर्णि २ वेदनि ३ अन्तराय ४ ये च्यार कर्म नी उतकृष्टिस्थिती ३० त्रीश कोड़ाकोड़ी नी, अने नाम कर्म १ गौत्र कर्म २ ये बे कम नी उतकृष्टिस्थिती २० वीस कोड़ाकोड़ी नी छै, अन मोहनी कर्म नी उतकृष्टस्थिती ७० सितर कोड़ाकोड़ी नी छै, ते ७ सात कम नी उतकृष्टस्थिती माह थी सब खपावे, बाकी एके एक कोड़ाकोड़ी नी राखे

कोडा कोडी रहै इम आयु वर्जिनें सात कर्म नी स्थिति सात कोडा कोडी सागर माहे आणे त्यारे, काल लब्धि जीव पाम्यो, पण इंद्री लब्धि जे पचेंद्री पणो संज्ञी पणौ न पाम्यो. काल लब्धी थि एकेंद्री विगलेंद्री पणौ पाम्यो ते काम न आवे इम भव नी परम्पराइ किवारे अकाम निर्जराइ ऊचो आवे, पचेंद्री सज्ञी पणो पामे. तिवारे इंद्री लब्धि पाम्यो, पण काल लब्धि न पाम्यो इम भवनी परम्पराइ कोई जीव नें काल लब्धि न पामे ते जिवारे जीव नें भव थिति घटै, साते कर्मनी थिति एक कोडा कोडी माहे आणे एहवा उत्कृष्ट यथाप्रवर्त्त करण चरमावर्त्तन आवे जो जीव पाछो नहीं पडे, ससार वधार से नही, एहवा जीव ने काल लब्धि पाम्यो इंद्री लब्धि पामी नें उपदेश लब्धि पामे तीजी त्यारे गंठी भेद करे ते समे तिहा उपशमता लब्धि पामे तिवारे, उपशम भावे वर्त्ततो अपूर्व करण बीजो पामे तिवारे दुर्भेद जे गंठी तेह नें भेदे तिहा चौथी लब्धि पाम्यो. तिवारे

पछी अनिवृत्तिकरण अतर करणे वर्त्ततो जीव, प्रयोगता लब्धि पामै तिहा वीतराग धर्म रुचि प्रतीतात्मक धर्म शुद्ध श्रद्धानें आत्म स्वरूपनो दर्शण, ज्ञान, स्वरूपाचरण रूपैं समकित पामै इम समी लब्धि सम्यक् दर्शन पामै इति नियमसार ग्रन्थे कह्यू छै तिहा थी ए लब्धि ना भेद किंचित लिख्या छै इति

२२८ हिवै उद्धार पल्योपम, अने एक अद्धा पल्योपम, एक क्षेत्र पल्योपम एतीन नो स्वरूप लिख्यते ए तीन ना सुक्ष्म अने बादर ए बे भेद करता छ भेद थया तेह ना मान अनता सूक्ष्म परमाणु आनो एक व्यवहारिक परमाणु तेणे आठै त्रसरेणु, ८ ऊर्धरेणु, ८ रथरेणु, ८ उत्तर कुरू युगलीया ना वालाग्रे ८ महा हिमवन्त क्षेत्र युगलिया, ८ हिमवत क्षेत्र युगलीया, ८ महा विदेह नर वालाग्र, ८ भरत नर वालाग्र, ८ लीख ८, जूय ८, जवमध्य ८, अगुले इम प्रत्येकैं आठ गुणा करे तिवारे उच्छेद आगुल तेणैं चोवीस आगुले हाथ च्यारु हाथे धनुष तथा बे हजार

२००० धनुषे कोस चिहु कोसै एक योजन प्रमाणे लांबो, पहुलो, ऊडो एहवो कुप पालो कहियें ते मध्ये देव कुरू उत्तर कुरू ना युगलीया ने बाले ठास भरिये तो एक समय एके को काढतां जिवारें पालो खालीयें थाइ तेतलो काल बादर उद्धार पल्योपम सख्यातो काल थाइ, सख्याताखड माटें १ तथा पूर्व वालाग्र खड ना एक ना असंख्याता कल्पीयें समें समे काढतां जिवारे खाली थाई तिवारे सूक्ष्म उद्धार पल्योपम. २ एहवा २५ कोडा कोडि पल्ये द्वीप समुद्र ना परमाण छै तथा पूर्वोक्त पालो वालाग्रें भर्यो छै ते सोए बरसै एक खढ काढता पालो खाली थाय ते बादर श्रद्धा पल्योपम संख्यात वर्ष प्रमाण माटे ३ हिवे ते खड ना असख्याता खड कल्पिइ तेह नो कल्पना खड खड सौ सौ वर्से एके को काढता हुता जिवारे पालो निर्लेपम थाइ तिवारे अद्धा पल्योपम सूक्ष्म थाइ. ते हवे दस कोडा कोडी अद्धापल्योपमे एक सागरोपम तीणे दस कोडा कोडी सागरे एक अवसर्प्पणी

काल इम एहीं सूक्ष्म अद्धा पल्योपमे करीने देवता नारकी तिर्यंच, मनुष्य आयु मान, कर्म स्थितीमान, काय स्थिती मान, काल मानादिक लेवो ४ तथा तें बालाग्र खड भर्या पल्य माहि थी कल्प बालाग्रे स्पर्शी जे आकाश प्रदेश ते माहि थी एकेके आकाश प्रदेश समय २ काढता जिवारे सर्व बालाग्र स्पर्शी प्रदेश निर्लेप होइ तिवारे बादर क्षेत्र पल्य थाइ ५. अने जिवारे ते पल्य ना आकाश प्रदेश कल्पा सर्व स्पर्शी थाते समै२ एकेक काढता जिवारे निर्लेप थाइ तिवारे सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाइ ६ एणे करि दृष्टिवाद मध्ये एकेंद्री अथवा त्रसादिक जीव नो प्रमाण कीजीए असख्याता उत्सर्पणी प्रमाणें इम तीन२ सूक्ष्म पल्योपम शास्त्र नें विषे उपयोगी होय ३ तीन बादर कह्या ते सूक्ष्म नो सुक्ष्मार्थ बोधार्थ इहा आई घणो अद्धापल्यौपम प्रयोजन छै इम कोडाकोडी सागरो पमे एक काल चक्र तेऐं अनते काल चक्रे पुद्गल परावर्त्त होइ, ते आठ प्रकार नो छै तिहा थी जोयो अस्य गाथा— (उद्धार अधारि

मैंच पलियतिहां समय वाससय ममए केसवहारोदी थी दही श्राउत साय परिमाण ८५ ॥) पाचमें कर्म ग्रन्थे उक्त.

२२६ तथा आत्म सम वस्तान उपयोग रूप ध्यान कहिये ते एणी परम्पराइ होई मोहनी कर्म नें पर वसे जीव पर द्रव्य प्रवृति करै छै सुख तृष्णाई भुलो, जिवारे मोहनी कर्म नी थिति घटै तेहनें पर द्रव्य नी प्रवृत्ति मिटै. अने पर द्रव्य नी प्रवृत्ति टलै तिवारै विषय वैराग्य होई तिवार पछी मनोरोध थाई. जे माटे ठाम विना मन किहा जाइ ? जिम " अतृणे पतितो वह्नि स्वयमेवपशाम्यति" (तृणवीना नि अग्नि स्व भावेई उपशमे) तिम विषय विना मन आपणी मेले रुंधाय मनोरोध थी मन नी चचलता मिटै तिवारे मन एकाग्र थईने आत्मा नें विषै प्रवर्त्तै आत्मा नो स्वभाव तै कह्यू छै यत–(जोवषई मोह खलुसो विषय विरत्तो मणोणिरुंभित्ता समठी दोस भावे सो अप्पाणं हवे ईस्फग्ग ॥ १ ॥) इति उक्त प्रवचन सारोद्धारे.

२३० हिवै आत्म भावनानी गाथा तीन लिख्यते –(नाह दोमी परेसि णमे परेणाम ब्भ मिह किंवा । इय श्राय भावणाये राग दोस विलय जन्ती ॥ १ ॥ नाणरस विसुद्धिए अप्पा एग तउण ससुद्धो । जमा नाण अप्पा नाणच अणवा ॥ २ ॥ आयासामाइए आया-सामाई यस्स अठोचि तेणव । इम सुत्त भासइ च श्राय परिणाम ॥ ३ ॥) ए सूत्रें पण चारित्र ते श्रात्म परिणाम रूपज कहिये छै पण बाह्य क्रिया रूप नथी कछू तत्र काव्य

येषा न चेतो ललना सु लग्न
मग्न न साहित्य सुधा समुद्रे ।
ज्ञास्यति ते किम महा प्रयास
नाधो यथा वाट वधू विलासन् ॥

इत्यर्थं

२३१ हिवै प्रवचन सार मध्ये उत्सर्ग मार्ग ते उत्कृष्टो कठोर घोर ब्रह्मचर्यादिक पालै जिन कल्पी

णो तेहनें कहिये छै अने अपवाद ते कोमल मार्गे मुनी विचरे, पच महा व्रत पालैं, यथाशक्ति तप करें, शिष्य शाखादिक राखे, धर्मोपदेश आपैं, ते अपवाद मार्गी मुनि कह्या पण ए बे मार्गी आत्मार्थी जाणवा इति उत्सर्ग अपवाद इति

२३२ हिवै पाच निधर्मा कह्या छै ते धर्म न पामै ते ऊपर गाथा–(भट्ठो देवाई चो वसहासत्तो अज्जि या पुत्तो । गुरु देवाणु दुट्ठो निधम्मा पच पन्नता ॥१॥) अर्थ भ्रष्ट ज्ञात कुल थी विणठो ते१ बीजो देवनो पुजारो, तथा देव को माल खाय ते २ विपया-सक्त लोलुपी तथा स्त्री लपटी होय ते ३ चौथो आर्या नों पुत्र–साध्वीइ व्यभिचार सेव्यु होय तेह नो पुत्र थयो ते ४. पाचमो देव गुरु नो निदक उपाथक घातक ५. ए पाच निधमा कह्या वीतराग नो भाष्यो धर्म न पामैं इति अर्थ

२३३. तथा समुर्छिम मनुष्य मरी केतले दडके

जाई ? बसौ तेतीसमो प्रश्न—तत्रोत्तर दस १० दडके जाय ते किहा ? पाच ५ थावर माहे, त्रण ३ विगलेंद्री माहे, एव आठ पचेंद्री मनुष्य तथा पचेंद्री तिर्यंच माहि जाय पण युगलियो न थाय तथा ए दस दडक माहि तेउ,वाउ ए२बे दडक वर्जी नें बीजा आठ दडक ना आव्या समुर्छिम मनुष्य थाइ इति

२३४ तथा देवता नारकी नें छमास थाकतो होई त्यारें परभव नो आयु बाधै तथा निरुपक्रमी आयुवालो पृथवी कायश्रोते त्रीजे भागै एतले बे भाग पहिला मुकीने त्रीजे भागै रहै तिहा पर भवनो आयु बाधै जीव नें पर भव नो आयु बाधता अतर्मुहूर्त्त थाय तेतला माहे तीन आकर्पे करे जिम गाय पाणी पीती बिसामै २ पीये तेम जीव पण आयु कर्मना पुद्गल नें लेई आकर्पी बाधै इति

२३५ हिवै आकुटे, प्रमादे, दर्पे,कल्प, कर्म बधाइ तेह शब्दार्थ कहे छै आकुटिकया अनाभो, तथा उपेत्य सावद्यकरणोत्साहोत्मिका १ दर्पोंधावनरे पनव

णानादिक हास्पजन किंवा नाट्यादिकंदर्प रूपो वा २ प्रमादो रात्रौ दिवा प्रति लेखना प्रमार्थ ना द्यनुपजुक्ता ३ कल्प कारणें दर्शनादि चतुर्विंशति रूपेसती गीतार्थस्य कृत योगिनोपयुक्तस्या अयततनया अधा कर्माधा दान सुरूपा ४ इति

२३६. हिवै पाच क्रिया माहि जीव अल्पा बहुत्व किम होय इति प्रश्न —पाच क्रिया मांहि सर्व थी थोडा जीव मिथ्यात्व क्रियावाला तेह थी अपचक्खाण क्रियावाला असंख्यात गुणा अधिका समकित माहे भल्या ते माटे, तेह थी परिग्रहनीक्रियावाला असख्याता वधता देशविरति माहि भल्या ते माटे, तेह थी आरभ की क्रिया वाला तेह थी घणा सख्याता अधिका छै छठा गुण ठाणावाला मुनि भेलै ते माटै, तेथी माया-वत्ति क्रिया ना घणी संख्यात गुणा अधिका ते नवमा गुण ठाणावाला मुनि वध्या. ए भाव पन्नवणासूत्र मध्ये छै. इति.

२३७.हिवै लेश्या नो देवता आसरी अल्पा बहुत्व कहै

पर्याप्ता च शरीर मनिचाति किं प्राग भिहितेज शरीर नाम्नानें तदास्तिस्याध्य मेदा। तथा जयसोमवाला बोध नें निपें लिख्यू छै

२४४ हिवे प्रर्याप्ति नाम कहै छै जे कर्म ना उदय थी आरभी पर्याप्ति करया विना न मरे ते पर्याप्त नाम कर्म तेणें एकेंद्रा नें ४ विगलेंद्री तथा असनीय पचेंद्री नें भाप्या होइ ते भणी पाच ५ सनीया पचेंद्री नें मन होइ ते भणीछै ६ पर्याप्ति उत्पत्ति प्रथम समय थी आरभी पर्याप्ति पूरी करया विना न मरे, पूरी करी नें मरे पण अधूरीयें न मरे ते लब्धि पर्याप्तो कहिये तथा करण कहता शरीर इंद्री पर्याप्ति पूरी नथी थई तिहा लगी तेहने करण अपर्याप्तो कहिये अथवा जे जे परयाप्ती पूरी थई नथी ते तेहनी अपेक्षा यें करण अपर्याप्तो कहिये पूरी करी तेहनी अपेक्षाये परयाप्तो कहिये अनें कर्म ना उदय थी आरभी पर्याप्त पूरी करया विना मरै ते लब्धि अपर्याप्त नाम कर्म तिहा पर्याप्ति कहता पुद्गल ना उपचयथी थयो पुद्गल परिणाम ना हेतु

शक्ति विशेष ते विषय भेदछै, तथा पर्याप्ती प्राण मध्ये सो विशेष ते कहियेछै ? पर्याप्ति ते उपजती वेलाइ होय, अने प्राण ते जाव जीव लगे होई ते विशेष

२४५ हिवे तीनं गाथा सम्यग् दृष्टी नो स्वरूप ग्रन्थातरे कह्यु छै ते गाथा लिखिये छै— (बन्ध अविरईहेओ जाणंतो राग दोस दोपच । विरईसु इच्छतो विरई का उचअसमथो ॥१॥ एस असजयस मौनिदतो पावकम्मकरणच । अहि गय जीवा जीवो अविलिय दिठी वलीय मोहो ॥ २ ॥ सम दसण साहि ओ गिणतो विरइमप्पसत्तिए । एगव्वया ईचरमो अणूमई मित्तती देस जई ॥ ३ ॥ ए गाथा नो अर्थ गुरु गम्य थी धारियो सम्यग् दृष्टि नें उदय प्रतीओ बन्ध होइ पण आत्म प्रतियु बन्ध न होय इति

२४६छायते केवल ज्ञान,केवल दर्शन चात् आत्मा नोअने तेतिछद्म ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनी या अन्तराय कर्मोदय साति तस्मिन् केवलस्यानु त्पादात्

थानिके सर्वे जीव अणाहारी होय, आहार ग्रहण उदारिकवैक्रिय नी मिश्रता मिले तिहां होइ इत्यर्थः

२५१ तथा अतर्मुहूर्तना आयु वालो तिर्यच पचेन्द्री असनीओ मरीने युगलीओ पंचेन्द्री तिर्यंच न थाइ अतर्मुहूर्त उपरात नो होइ ते उपजे पण अतर्मुहूर्त २५६ आवल नु नहीं, एतले मोटो अतर्मुहूर्त जाणवो इत्यर्थ.–

२५२ तथा परमात्म प्रकाश ग्रथे आत्मा ना तीन प्रकार कह्या छै वहिरात्मा ते मिथ्या दृष्टी जीव १ अतरात्मा ते सम्यग दृष्टी चौथा गुण ठाणा थी बारमा सुधी२ परमात्मा ते तेरमा चउदमा वाला केवली भगवत जाणवा ३

२५३.तथा तीन प्रकार ना पुद्गल प्रणमै छै-विश्रसा परिणामै १ प्रयोगसा परिणामै२ मिश्रसा परिणामै ३ विश्रसा ते स्वभावे कोई निमित्त पामी तदाकार थाई, इंद्र धनुषादि अभ्रादि वत १. प्रयोगसा ते

जीव व्यापारे उद्यमेन भवनं यथा घटं पटादि गृहादि ज्ञेय २ मिश्रसा ते किंचित प्रयोग किंचित् स्वभावे यथा पटो बद्धो जीर्ण तत्र बधनं जीव प्रयोगेण जीर्णि भवन स्वभाव इति मिश्रसा ज्ञेया इत्यर्थ.

२५४ तथा तीर्थंकर नो जन्म थाइ तिवारे साते नरके केतलु अजुआलुं थाइ इति प्रश्नः—पहिली नरकें सूर्य सरीखो उद्योत थाइ १. बीजी नरके साभ्र सम तेज २. त्रीजीये पूनम ना चंद्र सम उद्योत ३. चौथी नरकें साभ्र चद्र सम तेज ४ पाचमीयें शुक्र तथा गुरू इत्यादि ग्रहना सरीखो तेज ५ छठी नरके नक्षत्र ना सरीखो तेज ६ सातमीयें तारा नो सरीखो तेज ७. एहवो उद्योत ते तीर्थंकर ने कल्याण के होई ए अधिकार हेमाचार्य कृत चौविस तीर्थंकरना चरित्र मध्ये छे.— इति भावार्थ

२५५ अथ प्रस्तावित गाथा—काले सुपत्त दानं समत्त विशुद्धबोहिलाभंचवाअंते समाहि मरण

माहे न आवे ते माटे बादर सूक्ष्म कहिये ३ चोरिं दिया कहता नयन विना बाकी च्यार इद्रीये ग्रहीए, ते सूक्ष्म बादर पुद्गल कहिये श्या माटे ? जे गन्ध, रस, फरस, शब्द ना पुद्गल आवता न देखिये ते माटे सूक्ष्म, अने गधे रसे फरसे शब्द जाणिये ते माटे ए ज्ञातिना पुद्गल नै सूक्ष्म बादर कहिये ४ कम- पाउगा कहता पाचमा पुद्गल ते कर्म नी वर्गणाना ते, दृष्टे न आवे ते माटे चोफासिया सूक्ष्म पुद्गल कहिये ५ छठा सूक्ष्म सूक्ष्म ते कम्मातीया कहता कर्मातीत एक छूटो परमाणु पुद्गल ते सूक्ष्म सूक्ष्म कहिये ६ ए रीतें छ प्रकार ना पुद्गल ससार मध्ये व्यापी रह्या छै जिम छ कायना जीव व्यापी रह्या छै तिम ए जाणवा इति

२५८ ज्ञाना वर्णादिक कर्म नो वन्ध उदय उदी- रणा सत्ता केतला गुण ठाणा ताइ होय तेहनो विवरो लिखिये छै ज्ञानावर्णी कर्म नो बन्ध गुण ठाण १० मा ताई. दर्शनावर्णी नो वन्ध दसमा ताई वेदनीनो बन्ध

ण ठाणा १३मा ताई मोहनि नो बध गुण ठाणा नव
ाताइ.आयु कर्म बध गुणठाणा७मा ताइ नाम कर्म नो
न्ध गुण ठाणा १०मा ताई गोत्र कर्म नो बन्ध गुण ठाणा
१० मा ताई अन्तराय कर्म नो बन्ध१०मा ताई इति

२५९ अथ ज्ञानावर्णी कर्म नो उदय गुण ठाणा
१२ मा ताई- दर्शनावर्णी कर्म नो उदय १२ मां ताई
वेदनी कर्म नो उदय गुण ठाणा १४मा ताई मोहनी
कर्म नो उदय गुण ठाणा १०मां ताई आयु कर्म नो
उदय गुण ठाणा १४मा ताई नाम कर्म ना उदय गुण
ठाणा चवदमा ताई. गोत्र कर्म नो उदय गुण ठाणा १४
मा ताई अतराय कर्म नो उदय गुण ठाणा १२मा ताई

२६० अथ हिवै ज्ञानावर्णी उदीरणा गुण ठाणा
१२ मा ताई दर्शनावर्णी उदीरणा गुण ठाणा १२ मा
ताई वेदनी कर्म उदीरणा गुणठाणा६ठा ताई. मोहनी
कर्म उदीरणा गुण ठाणा १० मा ताई आयु कर्म
उदीरणा गुण ठाण ६ ठा ताई नाम कर्म

गुणठाणा १३ मा ताई गोत्र कर्म उदीरणा गुण ठाणा १३मा ताई अन्तराय कर्म उदीरणा गुण ठाणा १२ मा ताई इति

२६१ अथ हिवै ज्ञानावर्णी कर्म सत्ता गुणठाणा १२मा ताई दर्शनावर्णि कर्म सत्ता गुण ठाणा १२ मा ताई वेदनी कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ ताई मोहनी कर्म सत्ता गुण ठाणा ११ मा ताई आयु कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मा ताई नाम कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मा ताई गोत्र कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मा ताइ अतराय कर्म सत्ता १२ मो गुण ठाणा ताई होइ

ए बध, उदय, उदीरणा, सत्ता नु स्वरूप कह्यु ए सर्व भाव केवल ज्ञानी एक जीव स्वरूपे द्रव्य गुण पर्याय छै तेहना अनन्ता जीव देखै एकेक जीवनें अनन्ता कर्म जे रीत छे ते देखें एकेक जीव ना अनन्ता भाव देखै छै भाव ते परिणाम इम केवली

सर्व भाव अस्ति नास्ति रूपें जे जिम छै तिम जाणै
दर्वे इति

२६२ हिवै आचित महा स्कध जे पुद्गल नो चौदे राज लोक प्रमाण पूरे तेहनो स्वरूप यथा श्रुत लिखिये छै द्वि प्रदेशी परमाणुया ना स्कध थी माडीने असख्यात प्रदेशिमो स्कध ते अचित महा स्कधे लोक पूरण न थाय अनता परमाणु नो जे एक स्कध तेणै विण लोक पूरण न थाय तो स्यु ? अनत बादर परमाणु नो एक स्कध तेहवा अनन्तास्कन्ध मिलै तिवारे अचित महा स्कध रूप थाइ ते चोद राज लोक पूरे तेह नी विधि–ते स्कध विश्रसा परिणामै परणमीन केवल समुदघातनी परे दड रूप करि पछै दिसि विदिसी विस्तारि खडूया पूरी चौदराज सपूर्ण फरसी नें पाछो केवल समुदघात नी परे सकली ने स्कध रूपथाय, ते स्कध असख्यात आकाश प्रदेश अवगाही रहै ते अचित महा स्कध क्षेत्र आसरी अढी द्वीप माहि करे पण बीजे बाहरले क्षेत्रभूमि काई न थाय, जिम

तेहना निकल्या ते माहेज समाइ तथा कद मूल नाते बादर निगोदिया व्यवहार राशी माहि आव्या छे, ते अनता कंदादिक माहि छे तथा जेतला जीव सूक्ष्म निगोद गोलक माहि थी निकल्या छे ते व्यवहार राशी माहे आव्या ते कालादिक लब्धि पामी सिधी वरै तेतला अव्यवहार निगोद माहि थी नीकली ऊचोव्यवहार माहि आवै, पण व्यवहार राशी ओछी न थाइ कदापि मुक्ति जावा ना विरह काल होइ, तेतला काल ताई सूक्ष्म अव्यवहार राशिथी निगोद नो जीव कोई व्यवहार राशीमाहेनआवे एहवो उपमिति ग्रथे कह्यछै. तथा व्यवहारराशी या बादर निगोद माहें जे अनता छै ते फरी कर्म नी बहुलताइ सूक्ष्म निगोद गोलक माही आयँ ते ७० कोडा कोडी सागरोपम ताई तिहा रही वली पाछा कदादि के साधारण माहि आवै इम सबधे सूक्ष्म निगोद ना बादर निगोद माहि आवै, वली बादर ना सूक्ष्म माहि जाई इम बे थानिके आवा गमन करता जीव उत्कृष्टो रहै तो अढी परावर्त पुद्गल

पर्यंत रहै. पछे प्रथ्व्यादिक थानक फरसतो ऊंचो आवी ने मनुष्य थाई तिहा व्यवहार राशिओ भव्य जीव सामग्री मिल्ये बोध बीज पामी सिद्धि वरै तथा वली कोई वाचनाई इम कह्यू छै जे कद मूल साधारण माहि थी जीव सूक्ष्म गोलक माहि जाइ तो उत्कृष्टो काल रहे तो असख्याती उत्सर्पणी अवसर्पणी काल ताइ सूक्ष्म निगोद गोलक माहे रहे, तिहा थी निकल्यो बादर निगोद कद मुल माहे उत्कृष्टो ७० कोडा कोडी सागरोपम ताई रहै इम सम्बन्ध छै निगोद मिली आवागमन करता उत्कृष्टे अढी परावर्त पुद्गल ताई व्यवहार राशियो जीव निगोद माहि रहै एक निगोद नो गोलो असख्याता आकाश प्रदेश अवगाही रह्यो तथा अव्यवहार राशिया जे निगोदिया नै गोलक माहे छै भव्यं स्थिती परि पक ताई ऊंचा आवे ते एक समै उत्कृष्टे केतला निकलै इति प्रश्न — जेतला अढी द्वीप माहि थी सकल कर्म खपावी एक

तुच्छाय निंदाय चच्छमारमो। तुछा जहा कसाया ताहतु तुच्छ ससारे ॥४॥ इह भरहे के विजिया मिथ्या दिठी भद्दया भव्वा। ते मरी उण नरमे वरसे हो हुती केवलिणों ॥ ५ ॥) इति प्रस्तात्रिक गाथा ज्ञेया॰

२७६ चमेंद्र नें५ अग्रमहिषि छै ते एकेकीअग्र महिषिनें नें आठ आठ सहस्र देवीनो परिवार इम ४० सहस्र देवी सु भोग भोगवितो विचरै इत्यर्थः

२७७ बौद्ध१ नैयायिक२ साख्य३ जैन४ वैशेषिक। तथा। जैमीनियच ६ नामानि दर्शनारम शून्य हो ॥ इति षट् दर्शन नामानि ॥

२७८ हिवे ६३ शिला का पुरुष तेहना जीव५९ छै तेहना विगत—जीव ३ चक्रवर्ती पदवी ना ओछा थया एक वासुदेव थया ए४ जीव घट्या माहें(बाकी)जीव ५९ थया तथा ५९ जीवनी माता६० पिता ५१ कह्या छै तेहनी विगत —२४ जिननी माता, ९ चक्रवृती नी माता, ९ वासुदेवनी माता, ९ बलदेवनी माता,

प्रति वासुदेवनी माता, एव ६० माता जाणवी हिवे पिता ५१ ते तेहनी विगत २४ जिन ना पिता, १ चक्र ना पिता, ९ वासुदेव ना पिता, ९ प्रति वासुदेव ना पिता, एव ५१ पिता जाणवा. एणी रीते शरीर ६३, जीव ५८, माता ६०, पिता ५१, ए रीते अर्थ.

२७१ अथ ऋषभ देव स्वामी केतला वरस नो काल गृहस्थाश्रम में वस्या तथा सर्व आयु केतला वर्ष जीव्या इति प्रश्नः— ऋषभदेव बीस लाख पूर्व कुमारपणे रह्या तेहना वरष केतला थया-१४लाख कोडा कोडी इग्यार हजार कोडा कोडी वलि बेसे कोडा कोडी १४११२००००००००००००००००० एतला वर्ष कुमारपणे रह्या तिवार पछी ६३ लाख पूर्व राज्य अवस्था भोगवी तेहना वर्ष केतला ४४ चवालीस लाख कोडा कोडी ,४५ हजार कोडा कोडी बेसे कोडा कोडी अरसी कोडा कोडी तेहना आक ४४४५२८०००००० ००००००००००० तिवार पछी एक लाख पूर्व दीक्षा

सा२०(अनें श्रावक नें)सूक्ष्म ते बादर त्रसा १० का।द्या, ात्मा नें पर अत्तहा परहा चेव १ सापराधनिरपरा- करी वसा २॥ अपराधे हर्णों पण निरपराधे नही १। ापेक्ष नी दया निरपेक्षे वसो १रहे तथा अत्र गाथा— (तथाथावरायजीव।सम रुप्पारभओभवे । दुविहा सावराहानिरवराहासावेरकाचेव निरवेरका॥१॥) जीव बे प्रकारै— सूक्ष्म बादर, ते मध्ये सूक्ष्म ना १० भेद तथा१० बादरना सूक्ष्म ना १० भेद ते पाच थावर

मारे छ ! पण एतो निरपराधी छे वली आपणा अगमा तथा आपणां पुत्र, पुत्री, गोत्री, आदिकना मस्तकमा अथवा कानमां काडा पड्या छ, अथवा आपणाज मोढामा के दाढमां के, दातमा, के जडपामा कीडा पड्या, तेवारें तेमने मारवाना उपायें करीने कीडानी जग्याए औषध लगाडवु पड पण ए जीवोए शो अपराध कर्यो छ ? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति स्थान पामीने कर्मने आधीन मायोने अहीं उपजे छे, पण क्यारें कशी दुष्टनाथी उप जता नथी ते कारणमाटे जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावक तजी जाय नहीं वला बाग बगीचामा गया थका फूल फल, पादडा गुच्छा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देधी अथवा फल, फूल तोडी लेवा, ते माटे अहीं बत्तामाथी मध्यो गयो त्यारें सवा वसानी दया रही एटला सवा वसानी दया शुद्ध श्रावक ने छै

पर्याप्ता नें ५ अपर्याप्ता एव १० नी दया श्रावक नें न होइ.

हिवै १० बादर ते किहा ? बेंद्री, तेंद्री, चोरेंद्री पचेंद्री ४ ए पर्याप्ता नें अपर्याप्ता एव भेद ८ पचेंद्री सनीओ असनीओ एव१०भेद बादर ना थया ते मध्ये श्रावकनें सकल्पी न मारू आरंभै जयणा एव५भेद रह्या ते मध्ये अपराधे हणवों, निरअपराधे नही, एतलें २॥त्रसा रह्या ते मध्ये सापेक्षया अने निरपेक्षा निर्दय पणैं न हणवो एव १। त्रसा नी दया श्रावक नें त्रस जीव नी रही इति प्राणाति पातिनी जीव दया १। त्रसा नी इति

२ हिवै मृषावाद अणु वृत समस्त मृषावाद नियम साधु नें २० वसा सूक्ष्म नें बादर करता १०, उपयोगै अणा उपयोगै २०, अत्तट्ठा परट्ठा आत्मपर एव५, स्वजन परजन करता २॥, धर्म अपर अधर्म परमार्थे १। अत्र गाथा—(सुहुमबादर मिलिय अप्पाय परिभेयग भवे दुविह सयण परग च तथा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		निवेशन	निवेशन
१८	१२	द्वेषो भण्यते	द्वेषौ भण्येते
,,	,,	द्वेषो कप्प	द्वेषौ कप्प
,,	१६	भावितव्य	भवितव्य
१९	९	कस्येति	कस्येति
,,	१४	प्रसज्ञा	प्रच सज्ञा
२०	४	रक्षण	रक्खण
,,	७	श्रेक	एक
,,	,,	पति	खाति
२४	१	तत्वातत्व थीनी	तत्त्वातत्त्व ए बे नी
२५	४	परा	परावर्त्त
,,	६	थी खपावे	थी वा खपावे
२६	२	प्रणमै	परणमै
२७	१४	विलेछन	विलछन
,,	१५	सु	सु
३९	१६	सडन	साडन

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४३	५	सुवसहिय	सुवयसहिय
,,	८	ना त्रपहसा	नी क्रिया हस्ये
,,	१३	सणाठमो	सणसठमो
४४	२	प्रणमित	परणति
४८	५	देसण पूर्व	दसण पुव्व
,,	७	झात्वार	झात्कार
५२	१	दसना	देशना
५३	५	जिहायै	जिहांपे
,,	१३	काइक	कोईक
,,	१५	वर्त्ता	वार्त्ता
५४	१४-१५	पामै ते शेणे,	पामै ते स्या माटेके
६०	५	असात	असात।
६४	१५	नय	नेय
,,	१६	जम्पई	जम्मई
६८	४	आत्मागुल	आत्मागुल
६९	७	उक्कोसेच्छ	उक्कोसातच्छ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०७	१४	यकाश	आकाश
१०८	९	कालाग्नु	कालसमय
१०९	८-९	ययपीएकत्ता	यद्यपि एकठा
११०	१६	सींहताईमिरकतो, सीहताए	सीहचाए निरकतो सीहचाए
१११	१	सीहताए सीयालताए	सीहचाए सीयालचाए
"	५	पनिरकतोसीय-लता निरकताए	निरकतो सिपाल-चाए मियाललताए
"	९	अचारानुयोग	चरण करणानुयोग
"	१२	नाणकेम पकरंति	नामकम पकरेंति
"	१५	रमदीठी	यत्रकितस मचे रवासाण
११३	५	करजरादि	युजा
"	११	परिणामा दसधारयू	परिणाम दसधा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध .
११५	४	लेहण्ण	लेण्ण
,,	१३	सन्न	सद्द
,,	१४	अत्रस्य	अवस्स
,,	१५	ह्रिय सखिन्न	ह्रिय सखिज्ज
,,	,,	यत्त्वी	यत्त्वा
,,	१७	निर्युक्तो	निर्युक्तो
११६	१	कीटीकावघो	कीटिका वहवो
,,	,,	वहवा	वहवः
,,	२-३	तदा समूर्छछिमप्राण त्रिरह तदाकाटिका स्तोकानरा वहवा	यदा समुर्छिम नराणा विरह काल तदा कीटिका बहु-व·तॆषा विरहो न तदा।कीटि-का स्तोका· ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४४	१४	सामण	सामण्ण
१४४	१५	ममन्ना मियत्त	मन्ना मियच्छ
,,	१६	अजियचरितदे सूणा	अब्बियचरित्तदे सुणा
१४५	७	नियाणकमी	नियाणकडा
१४९	२	तानि	तीन
१५०	५	प्रासी	पर्यासी
१५१	६	अतमुहूर्त	अतर्मुहूर्त्त
,,	१२	धारयू	धारु
१५३	१५	विपय	विपय कपाय
,,	१६	थी विषय कपाय	थी कपाय
१५५	१	निरती	निव्वरती
,,	३	हल	हल
१५६	७	द्वितीय	द्वितीय
,,	१०	स्वप्नात्	स्वप्नान्
,,	११	अपस्यत्तवतस्या कारि धारिणा	अपश्यत् प्रशश्या-कार धारिण

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५७	३	रुचिक	रुचक
१५९	१३	समयठवणानामे रुवे	समयठवणानामेरुवे
,,	,,	व्यवहार	ववहार
१६२	८	पत्तमथ	पत्तमत्थ
१६३	१४	अपुधतुगधरसचवध	अपुठतुगधरस च बद्द
१६५	१४	विरसायगुल	विरसायगुल
,,	१५	आयगुलेकेणवथू	आयगुलेणवत्थु
१६७	१३	वकति	वक्कंति
,,	१६	वर्ग	वर्ष
१७२	१५	इम कोडा	इम २० कोडा
१७३	१	तिहा	तिहा
,,	१५	जोवपई	जोव (मम) ई
,,	,,	विपय विरतो	विसय विरत्तो
१७४	२	दोगी	दोसी
,,	३	नाणस्सं	नाणस्स

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	५	नाणच अणवा	नाणच होई अप्प-वा
,,	१३	नाधो यथा वाट	नाधा यथा वार
१७५	७	वधु निजासन्	वधु विलासानु
१७५	७	वसहासचो	निसयासचो
,,	१३	उपाथक घातक	उप घातक
१७६	१६	अनाभो तथा	अनाभोगतया
,,	१७	साहोत्मिका	साहात्मिका
,,	,,	धावनरे पनव	धावनडे पनह्यव
१७७	१	पानादिक हास्प जन किंवा	शादिक हास्यजन-कवा
,,	२	प्रमार्थ	प्रमार्ज्ज
,,	३	जुक्ता	युक्ता
,,	४	अथत तनया	अयतनतया
,,	९	असख्यात गुणा-धिका	विशेपाधिका ,,

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पाक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध
"	१०	असख्याता वघाता विशेषाधिका	
"	१२	सख्याताअधिका	"
१७८	४	कपोत	कापोता
१७९	३	वसाई	वयाई
"	६	नपुसय	नपुसेय
"	८-६	दुथेय मुढेय आणिते जुगएईय अविवध एयभिण्य सेहोनी फेडीयाइयंसी ॥४॥	दुद्वेय मूढेय भणते जुगिएईय वुबद्ध एय भय ए सेह निप्फेडीये इय गुब्विणी बाल वच्छाय पव्वावे उन कप्पई ॥ ४ ॥
"	१३	गुणो	मुणो
"	१४	रुषाण	रुक्खाण
"	१५	वेपूई	वेद्वई
१८०	१	नहु अन्नोतह कोह नह	निहणसन्नो तह-कोहे नह

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	२	मार्णे रू इरोवति	मार्णेरूदेवइरो-
		छाय	वति छायइ
,,	३	पलाइ	फलाइ
		मूलेहाणु	मूलेणि हाणु
१८०	४	चरि	वरि
,,	५	हेवई	हवई
,,	,,	रूप	रूक्खे
१८१	७	वथ	वत्थ
,,	८	तत्काल कुथु	तक्काल कुथु
१८२	७	भाप्या	भाषा
,,	१३	परयासी	पर्यासी
१८३	७	दोपच	च
,,	८	असमथो	असमत्थो
,,		मो निंदतो	मोश्रो निंदतो
,,	१०९	अविलिय	अवालिय
,,	११	गिणतो	गिणतो

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८३	१५	दर्शन चात्	दर्शन
„	१६	तेतिछद्मो	नेति छद्म
१८४	११	तिष्ठति ति	तिष्ठतीति
१८६	६	मचर्त्ता	मच
१८८	१२	उजीयगिदेयो	उजोयगियदच्छो
„	२४	कच्छय जीवो वलि ओ कच्छाय कमाइ हुति वलियाइ।जीव समय कमस्संसपु-व्वानिवेधाइ॥ २ ॥	कच्छय जीवो वलिओ कत्थाय कमार हुति वलियाइ। जीव रसय कम्मरसय पुव्वनिबधो अ-णाइय॥ ३ ॥
		पुछकृय ४ पुरस्स-कारण ॥ ५ ॥	पुव्वकय ४ पर-स्मकारण पंच ५
	६	एगादिमिथित तेचेव ओममामओ हुति	एगते मिच्छ

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		मत्ताा	समत्त
१८८	७	नवाहिं जीव विहण	नव विहि जीव
		करण,घरानण,अणु	हह करण करा-
		मोइय जोगै हि ।	वणे अणुमइय
		कालिन्ति समत्त इहीं	जोगे हि।काल-
		गुणिए पाणी वह	न्ति एण गुणिए
		दुस्सय ते यालो॥५॥	पाणीवह दुस्सय
			ते याला ॥५॥
१८९		घधाया	च छाया
१९४	६	थाई	थापी
"	७	राज्यात्मक	राज्यात्मक
"	१३	प्रमाणे एइ	प्पमाणे पइ
"		सख्या पईत्त	सखा पइत
"	१४	असंपई असम	अंसा,पईअ,सम
"	१५	पईय, पईएसं	पईप, पएस
"	१६	किमाण वगाणा-	कम्माण वग्गणा-
		णोय	णच

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ पंक्ति अशुद्ध शुद्ध

१९९ निकल्यी निकली

२०१ निगोदमवसग्रो निगोद रसउः

अतन्त भागोये अनन्त भागोय

२०१ ३ मप्साओ मन्भाओ

२०४ ६ अवसगत आवमगतु

तव संयमण मखा तवसयमेणमुक्खो

२०५ १२ दाणाण हुतिउत्तमा दाणेणाहुंति उत्तम

१३ भोगा। देव वराण भोगा।देवचरणेण

१४ रयअनसनमरणेण रज अनमन मर-

१५ इदत्त चकितापचोत णेण देवत्त इदत्त

गिविमाग वासितं च ॥१॥ पचाणुत्तर

लोगता देवदत्त। विमाण वासित्त

अभव जीवादि न लोगतिय देवत्त।

पावती ॥२॥ अभव्व जीवा न

पावंती ॥२॥

२०६ तुच्छाय निदाय तुच्छा निदायत्तु-

तुच्छमारंभो च्छमारभो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
			चलमारभो
२०६	२	दर्शनानि शून्य	दर्शनानाम मून्य
२०७	१	६ प्रति	९ प्रति
२०९	६-७	पलेचदश गयाणि स्तेपा सार्द्ध सतमणी मणी दसमि रेकाच घटिका कथिते बुध	पलेन दश गयाणै स्तेपा सार्द्ध शत मणी मणी दशमि रेकाच्च घटिका कथ्यत बुधै
,,	१०	फूकितभ	फूकिता
२१०	२	ग्रन्थ	ग्रन्थी
,,	४	चतुपद, तुष्य	चतुष्पद, ०
,,	६	सगारयु,	सगारयुक्त
,,	१७	भेदो, दडसी	भेद, दडश्च
२११	२	लखा	लरका
,,	६	गज मिथि	गज ममि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२११	१७	मध्ये दाया	मज्मे वाया-
	१७	तेउनरि वसतिरिय	तेउनवरिमतिरिय
२१२	१	सुरि, मासर्सेमथा	सुर,मज्मे, सन्द्धा
,,	२	विभ्रमावे नजल्यी	विभ्रमावेजल न-च्छी
२१६	४	आगें	भागे
,,	६	अभासल्ल	अतोसल्ल
,,	७	लक्ष्मण वत्	लक्ष्मण वत् साधवी
२१६	९-१०	मिश्रमतेमिश्र मरण	मिश्रमरणतेमिश्र मरण
,,	१२	विहास	विहायस
,,	१४	गृधीय	गृद्ध
,,	१६	भत्त परिणाम मरण	भत्त परिणा मरण
,,	१७	नियमीं	नियमित

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१,२,३	[illegible]	मधिम, उदारिशा	मधि, उदारिसा
		तिर्यक	तिरिक
	१०	द्विधा सव	द्विधा भव
	१३	विमाद्वि	विसिद्ध
	१४	अहारियई भरणिय	अहारियई सरीर महारग भरणिय
	१५	शुभ	शुभ्र
२३	४	प्रदेश	प्रदेशी
	५	महि	मह

॥ समाप्तम् ॥

श्री

आत्मधारा।

यह ग्रन्थ आत्मिक गुण सत्ता बताने में बहुत उत्तम है बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा का स्वरूप, समकित के पांच भूषणादि व दस रूची, बंधन करण, संक्रमण करण, उदय वर्त्तना करण, अप वर्तना करण इत्यादि आठ करणों की व्याख्यादि उत्तमोत्तम विषयों से यह ग्रन्थ परिपूर्ण है इसी ग्रन्थ में बनारसीदासजी कृत ज्ञानपच्चीसी, अध्यात्मबत्तीसी, आगमअध्यात्मस्वरूप, निमित्त उपादान कारण भेद निर्णय, ध्यान बत्तीसी इत्यादिक ७ पुस्तक साथ ही छपे हैं ऐसे उपयोगी ग्रन्थ का मूल्य केवल ।-) मात्र, डाकव्यय -) है.

पुस्तक मिलने का ठिकाना —

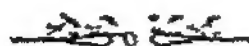
बाबू चांदमल बालचंद,

चोमुखी पुस्तक...

रतलाम

पंडित श्रीदेवचन्द्र-गणि विरचिता

श्री अध्यात्मगीता.



पंडित श्री श्रीमीकुंवरजी कृत बालावबोध सहिता

समस्त जैन भाइयों को विदित हो कि ऊपर लिखे नामवाला ग्रन्थ अध्यात्म विषय में अत्यन्त उत्तम है. इस में कर्तृत्वता, ग्राहकता, व्यापकता, दान लाभादि, आत्मा के अनादि काल से परानुयाई प्रणमी रहे हैं तिन्हें स्वरूपानुयाई प्रणमावना तथा उन के विषे निश्चय व्यवहारादि नय निक्षेप प्रमाण, अपवाद, उत्सर्गादि, नित्य अनित्यादि, कर्त्ता कारण कार्यादि, ऐसे अनेक विषयों का वर्णन स्याद्वाद अनुसार बहुत उत्तमता के साथ किया है और बालाबोध नाम की अलभ्य टीका से इस का गहन अर्थ बहुत ही सरलता के साथ समझ में आ सक्ता है, अर्थ की स्पष्टता और सुगमता का अनुभव पुस्तक देखनेही से होगा इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्रति हम को मिली तब बहुत

उत्साह हुवा, तथा इस को पढने से सब को आत्म-स्वरूप का लाभ होने का उपकार समझके तथा यहा के सहधर्मी भाइयों का आग्रह देखकर यह ग्रन्थ मुद्रित कराया है इस लिये आत्मार्थी पुरुषों को यह ग्रन्थ लेने की सूचना करने में आती है इस के साथही औरभी पुस्तक छापे गये हैं जैसे—आत्मधारा, साधु वन्दना तथा बनारसीदासजी कृत ज्ञानपच्चीसी, अध्यात्म बत्तीसी, ध्यानबत्तीसी, आगम अध्यात्म स्वरूप निमित्त उपादान चौभंगी इत्यादि इन सब पुस्तकों की एक जिल्द का मूल्य ॥।) है डाक महसूल इस से अलग

पता —

बाबू चांदमल बालचंद

चोमुखी पुल

रतलाम (मालवा)